3 राजधानी
इस दीवाली भी नहीं चला सकेंगे पटाखे

6 अभिमत
भारतीय अर्थव्यवस्था की प्रगति

11 विदेश
इजराइल की सीरिया में गोलीबारी, 18 की मौत

12 स्पोर्ट्स
भारत ने जापान को 5-1 से हराया

RNI NO.DELHI/2012/48369
वर्ष 12 अंक 299
नई दिल्ली, मंगलवार, 10 सितंबर, 2024
पृष्ठ 12 मूल्य ₹ 3
नगर संस्करण

नई दिल्ली, लखनऊ और रायपुर से प्रकाशित

पायनियर

www.dailypioneer.com

मुक्त व्यापार समझौतों को संशोधित कर रहा भारत
राष्ट्रीय-10

पश्चिम बंगाल के डॉक्टर तुरंत काम पर लौटें: सुप्रीम कोर्ट

पीटीआई। नई दिल्ली

सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को कहा, 'विरोध कर्तव्य की कीमत पर नहीं हो सकता' सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को कोलकाता में सरकारी आरजी कर मेडिकल कॉलेज और अस्पताल में स्नातकोत्तर चिकित्सक के साथ बलात्कार और हत्या पर प्रदर्शन कर रहे पश्चिम बंगाल के डॉक्टरों को तुरंत काम पर वापस लौटने का निर्देश दिया। मुख्य न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली पीठ ने प्रदर्शनकारी डॉक्टरों को मंगलवार शाम पांच बजे तक काम पर वापस लौटने का निर्देश दिया और उन्हें आश्वासन दिया कि अगर वे काम पर लौटेंगे तो कोई प्रतिकूल कार्रवाई नहीं होगी। पीठ ने कहा, पश्चिम बंगाल राज्य को डॉक्टरों के मन में यह विश्वास पैदा करने के लिए कदम उठाने चाहिए कि उनकी सुरक्षा के बारे में उनकी चिंताओं पर उचित ध्यान दिया जा रहा है। यह सुनिश्चित करने के लिए, सभी जिला कलेक्टर और एसपी (पुलिस अधीक्षक) सभी सरकारी मेडिकल कॉलेजों और सार्वजनिक अस्पतालों में स्थिति का जायजा लें और पर्याप्त सुरक्षा प्रदान करें।

नई दिल्ली में सोमवार को मामले की सुनवाई करती प्रधान न्यायाधीश (सीजेआई) डीवाई चंद्रचूड़, जस्टिस जेवी पारदीवाला तथा जस्टिस मनोज मिश्रा की पीठ।

पीठ ने कहा, हम यह भी निर्देश देते हैं कि यदि डॉक्टर (मंगलवार को) शाम 5 बजे या उससे पहले ड्यूटी पर लौटते हैं, तो उनके खिलाफ कोई प्रतिकूल अनुशासनात्मक कार्रवाई नहीं की जानी चाहिए। यदि लगातार काम से अनुपस्थित रहेंगे, तो प्रतिकूल कार्रवाई की संभावना हो सकती है। पीठ में न्यायमूर्ति जेबी पारदीवाला और न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा भी शामिल थे। अदालत ने कहा कि विरोध करने वाले डॉक्टर सामान्य समुदाय की जरूरतों से बेखबर नहीं रह सकते। कोई भी विरोध कर्तव्य की कीमत पर नहीं हो सकता है। युवा डॉक्टरों को अब वापस लौटना चाहिए और मरीजों की देखभाल करनी चाहिए। हम जानते हैं कि जमीन पर क्या हो रहा है। सबसे पहले, काम पर लौटें। जिला कलेक्टर और पुलिस अधीक्षक यह सुनिश्चित करेंगे (आपकी) सुरक्षा। आपको अब काम पर लौटना होगा। पश्चिम बंगाल सरकार की ओर से अदालत में पेश हुए, वरिष्ठ वकील कपिल सिब्बल ने कहा कि राज्य में 23 लोगों की मौत हो गई है क्योंकि बलात्कार और हत्या के विरोध में डॉक्टर हड़ताल पर हैं, जिससे देशव्यापी विरोध प्रदर्शन शुरू हो गया है।

सुप्रीम कोर्ट ने कोलकाता के आरजी कर मेडिकल कॉलेज में बलात्कार के बाद हत्या कर दी गई डॉक्टर के पोस्टमॉर्टम के लिए आवश्यक एक महत्वपूर्ण दस्तावेज़ की अनुपस्थिति पर भी चिंता व्यक्त की और सीबीआई से इसकी जांच करने को कहा। अदालत ने बलात्कार और हत्या की घटना में एफआईआर दर्ज करने में कोलकाता पुलिस द्वारा कम से कम 14 घंटे की देरी को भी चिह्नित किया। शीर्ष अदालत ने सीबीआई को मामले की जांच पर 17 सितंबर तक नई रिपोर्ट सौंपने का निर्देश दिया। शीर्ष अदालत ने मृतक की गरिमा और गोपनीयता की रक्षा के लिए सभी सोशल मीडिया प्लेटफार्मों से पीड़िता की तस्वीरें तुरंत हटाने का भी निर्देश दिया। राज्य में चिकित्सा संस्थानों की सुरक्षा के मुद्दे पर सुप्रीम कोर्ट ने कहा, पश्चिम बंगाल में सभी डीएम, एसपी सरकारी मेडिकल कॉलेजों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए स्थिति का जायजा लेंगे। शीर्ष अदालत ने पश्चिम बंगाल सरकार के गृह विभाग के एक वरिष्ठ अधिकारी और सीआईएसएफ के एक वरिष्ठ अधिकारी को यह सुनिश्चित करने का भी निर्देश दिया कि आरजी कर अस्पताल में सुरक्षा के लिए तैनात सीआईएसएफ की सभी तीन कंपनियों को आवास दिया जाए।

जांच में युवक एमपॉक्स पॉजिटिव निकला, केंद्र बोला, चिंता की बात नहीं, सतर्क रहें

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

सरकार ने सोमवार को कहा कि हाल ही में एमपॉक्स प्रसार वाले देश से यात्रा करने वाले युवा पुरुष के परीक्षण में उसे इस वायरल बीमारी पीड़ित पाया गया। हालाँकि, आशंकाओं को दूर करने के लिए, केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने यहां जारी एक बयान में कहा कि यह वायरस पश्चिम अफ्रीकी क्लैड 2 का है, जिसका वर्तमान क्लैड 1 सार्वजनिक स्वास्थ्य आपातकाल से कोई संबंध नहीं है। मंत्रालय के बयान में कहा गया है, व्यक्ति, एक युवा पुरुष, जिसने हाल ही में एमपीओएक्स ट्रांसमिशन का अनुभव करने वाले देश से यात्रा की थी, वर्तमान में एक निर्दिष्ट तृतीयक देखभाल अलगाव सुविधा में अलग-थलग है। रोगी चिकित्सकीय रूप से स्थिर है और किसी भी प्रणालीगत बीमारी या सह-रुग्णता के बिना है। इसमें कहा गया है कि यह एक अलग मामला है, जो जुलाई 2022 के बाद भारत में सामने आए पहले के 30 मामलों के समान है। (शेष पृष्ठ 9)

हरियाणा में आप और कांग्रेस की बीच गठबंधन की उम्मीद धूमिल

● आप ने बीस सीटों पर जारी की प्रत्याशियों की पहली सूची, हुड्डा पहले ही कर चुके थे गठबंधन से इनकार

शिखा शर्मा। चंडीगढ़

कई दिनों की मैराथन बैठकों के बाद हरियाणा में आम आदमी पार्टी तथा कांग्रेस के बीच गठबंधन सिरे नहीं चढ़ सका है। जिसके चलते आम आदमी पार्टी ने बीस सीटों पर प्रत्याशियों की पहली सूची जारी कर दी है। इस सूची में आप के प्रदेश अध्यक्ष सुशील गुप्ता का नाम नहीं है। आम आदमी पार्टी व कांग्रेस के बीच पिछले कई दिनों से बैठकों का दौर जारी है। कांग्रेस की तरफ से पार्टी प्रभारी दीपक बाबरिया तथा आप की तरफ से राघव चड्ढा बैठकों में शामिल हो रहे थे। आम आदमी पार्टी की तरफ से हरियाणा में दस सीटों की मांग की थी जबकि कांग्रेस केवल पांच सीट देने को तैयार थी। दोनों राजनीतिक दलों के बीच मचे घमासान में बीते कल इस बात के संकेत दिए गए कि गठबंधन की भूमिका फाइनल हो चुकी है केवल औपचारिक ऐलान किया जाना बाकि है। सुबह होते-होते बात फिर से बिगड़ गई।

सूत्रों के अनुसार कांग्रेस पांच सीटों से आगे कभी नहीं बढ़ी। इसके बाद आप जिन सीटों की मांग कर रही थी वह सीटें भी नहीं दी गई। कांग्रेस अपनी मर्जी से आप को सीटें देना चाहती थी। जिसे लेकर बात बिगड़ गई। हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री एवं नेता प्रतिपक्ष भूपेंद्र सिंह हुड्डा पहले ही इस गठबंधन का विरोध करते रहे हैं। आप अध्यक्ष सुशील गुप्ता ने आज सुबह ही बयान दिया था कि शाम छह बजे तक अगर कांग्रेस ने गठबंधन को लेकर स्थिति साफ नहीं की तो आप अपनी सूची जारी कर देगी। आप के पास मजबूत प्रत्याशी हैं। सुशील गुप्ता के इस बयान पर कांग्रेस की तरफ से कोई प्रतिक्रम नहीं दिया गया और आम आदमी पार्टी ने हरियाणा में 20 प्रत्याशियों की पहली सूची जारी कर दी। जिसके बाद सुशील गुप्ता ने मीडिया से बातचीत में कहा कि हरियाणा में आम आदमी पार्टी एक मजबूत विकल्प है। पार्टी ने सभी 90 सीटों पर चुनाव लडने् की तैयारी की है। हमारे पास मजबूत संगठन है। आप अपने संगठन के बल पर चुनाव लड़ेगी। गठबंधन को लेकर कांग्रेस की तरफ से स्थिति साफ नहीं की गई। अब इंतजार नहीं किया जा सकता था।

आम आदमी पार्टी से जुड़े सूत्रों का कहना है कि पार्टी 45 से 50 हलकों में अपने उम्मीदवार खड़ा करेगी। बाकी सीटों के लिए कांग्रेस और भाजपा के बागियों का इंतजार होगा। कांग्रेस के टिकट आवंटन के बाद बड़ी संख्या में नेता पार्टी छोड़कर निर्दलीय चुनाव लडने् का फैसला करेंगे। इनमें से ऐसे भी कई नेता होंगे, जो निर्दलीय की बजाय आप के सिम्बल पर चुनाव लड़ना चाहेंगे। ऐसे नेताओं को आप (शेष पृष्ठ 9)

नई दिल्ली में रक्षा मंत्रालय ने रक्षा सचिव गिरिधर अरामाने और वायु सेना प्रमुख एयर चीफ मार्शल वीआर चौधरी की उपस्थिति में हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड के साथ एक अनुबंध पर हस्ताक्षर किए।

एसयू-30 एमकेआई के लिए एचएएल 26 हजार करोड़ में बनाएगा इंजन

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

'आत्मनिर्भर भारत' पहल को बढ़ावा देते हुए, रक्षा मंत्रालय ने सोमवार को सरकारी एयरोस्पेस प्रमुख हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (एचएएल) के साथ एसयू-30एमकेआई विमानों के लिए 240एएल-31एफपी एयरो इंजन के लिए 26,000 करोड़ रुपये से अधिक की लागत पर एक अनुबंध पर हस्ताक्षर किए। आधिकारिक सूत्रों ने कहा कि एयरो-इंजन का निर्माण एचएएल के कोरापुट डिवीजन द्वारा किया जाएगा और उम्मीद है कि यह एसयू-30 बेड़े की परिचालन क्षमता को बनाए रखने के लिए भारतीय वायु सेना की आवश्यकता को पूरा करेगा।

इंजनों का सौदा भारतीय वायुसेना के लड़ाकू स्क्वाड्रनों के घटते बेड़े और एचएएल द्वारा तेजस जेट की आपूर्ति में देरी पर चिंताओं के बीच हुआ है। भारतीय वायुसेना के लड़ाकू स्क्वाड्रनों की संख्या कम से कम 42 की अधिकृत ताकत के मुकाबले घटकर लगभग 30 रह गई है। अनुबंध समझौते पर रक्षा सचिव गिरिधर अरामने और वायु सेना प्रमुख एयर चीफ मार्शल वीआर चौधरी की उपस्थिति में मंत्रालय और एचएएल के वरिष्ठ अधिकारियों ने हस्ताक्षर किए। एचएएल अनुबंध वितरण कार्यक्रम के अनुसार सालाना 30 एयरो-इंजन की आपूर्ति करेगा। रक्षा मंत्रालय के अनुसार, सभी 240 इंजनों की आपूर्ति अगले आठ वर्षों में पूरी हो जाएगी। अधिकारी ने कहा, विनिर्माण के दौरान, एचएएल ने देश के रक्षा विनिर्माण पारिस्थितिकी तंत्र से समर्थन लेने की योजना बनाई है, जिसमें एमएसएमई (शेष पृष्ठ 9)

पीएम व क्राउन प्रिंस ने रिश्तों को नया आयाम दिया

पीटीआई। नई दिल्ली

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अबू धाबी के वली अहद (युवराज) शेख खालिद बिन मोहम्मद बिन जायद अल नाहयान के साथ व्यापक वार्ता की तथा दोनों देशों ने समग्र रणनीतिक संबंधों को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित करते हुए ऊर्जा सहयोग बढ़ाने के लिए सोमवार को चार समझौतों पर हस्ताक्षर किए। अबू धाबी नेशनल ऑयल कंपनी (एडीएनओसी) और इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन लिमिटेड के बीच दीर्घकालिक एलएनजी आपूर्ति के लिए एक समझौता और एडीएनओसी और इंडिया स्ट्रेटेजिक पेट्रोलियम रिजर्व लिमिटेड (आईएसपीआरएल) के बीच एक समझौता चार समझौतों में शामिल हैं।

विदेश मंत्रालय के अनुसार, अमीरात परमाणु ऊर्जा कंपनी (ईएनईसी) और न्यूक्लियर पावर कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (एनपीसीआईएल) ने भी बाराकाह परमाणु ऊर्जा संयंत्र के संचालन और रखरखाव के लिए एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। चौथा समझौता अबू धाबी तटवर्ती ब्लॉक-वन के लिए ऊर्जा भारत और एडीएनओसी के बीच उत्पादन रियायत समझौता है। भारत में फूड पार्क स्थापित करने के लिए गुजरात सरकार और अबू धाबी डेवलपमेंट होल्डिंग कंपनी पीजेएससी के बीच एक अलग समझौता किया गया।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोमवार को नई दिल्ली में हैदराबाद हाउस में अबू धाबी के क्राउन प्रिंस शेख खालिद बिन मोहम्मद बिन जायद अल नाहयान से भेंट की। फोटो: रंजन डिमरी

विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रंधीर जायसवाल ने कहा कि मोदी और युवराज अल नाहयान ने व्यापक रणनीतिक साझेदारी को व्यापक बनाने के उद्देश्य से भारत और यूएई के बीच बहुआयामी संबंधों पर चर्चा की। उन्होंने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, भारत-यूएई संबंधों में शानदार प्रगति हो रही है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने आज अबू धाबी के युवराज शेख खालिद बिन मोहम्मद बिन जायद अल नाहयान से मुलाकात की। जायसवाल ने कहा, दोनों नेताओं ने बहुआयामी भारत-यूएई संबंधों और नए एवं उभरते क्षेत्रों में व्यापक रणनीतिक साझेदारी को व्यापक बनाने के अवसरों पर चर्चा की। नाहयान अपनी दो दिवसीय भारत यात्रा के तहत रविवार को नई दिल्ली पहुंचे। मोदी से बातचीत के बाद शाह ने राजघाट जाकर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि दी।

नाहयान ने राष्ट्रपति भवन में राष्टपति द्रौपदी मुर्मू से भी मुलाकात की, जिसके दौरान उन्होंने पश्चिम एशियाई देश में 35 लाख से अधिक भारतीय नागरिकों के कल्याण, विशेष रूप से कोविड महामारी के कठिन समय के दौरान विशेष देखभाल सुनिश्चित करने के लिए संयुक्त अरब अमीरात नेतृत्व की प्रशंसा की। राष्ट्रपति कार्यालय द्वारा जारी एक बयान में कहा गया है कि मुर्मू अमीराती समाज के सभी पहलुओं में महिलाओं की भागीदारी और योगदान की उच्च दर को देखकर भी खुश थीं। बयान में कहा गया, 'दोनों नेता इस बात पर सहमत हुए कि भारत और यूएई के बीच एक समन्वित और बहुसांस्कृतिक विरासत वाला समाज है और महात्मा गांधी और हिज हाइनेस शेख जायद द्वारा दिखाया गया शांति, सहिष्णुता और सद्भाव का मार्ग हमारे राष्टीय चरित्र में गहराई से समाहित है।'जायसवाल ने एक अन्य पोस्ट में कहा, उनकी शिक्षाएं हमें प्रेरित करती रहती हैं। हम यूएई के साथ अपनी दोस्ती को मजबूत कर रहे हैं। समझा जाता है कि अपनी बातचीत के दौरान मोदी और अल नाहयान ने गाजा में स्थिति सहित वैश्विक चुनौतियों पर भी विचार-विमर्श किया। भारत-यूएई संबंधों में पिछले कुछ वर्षों में काफी प्रगाढ़ता आई है। (शेष पृष्ठ 9)

विदेश में राहुल गांधी के बयान पर भाजपा का तीखा हमला

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

भाजपा ने सोमवार को कांग्रेस नेता राहुल गांधी पर संयुक्त राज्य अमेरिका में उनकी नवीनतम टिप्पणी को लेकर तीखा हमला किया और उन्हें भारतीय लोकतंत्र में 'काला धब्बा' बताया। पार्टी ने आरोप लगाया कि यूपीए शासन के दौरान कांग्रेस और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के बीच कथित तौर पर हस्ताक्षरित एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) के अनुसार, राहुल जब भी वह विदेश में होंगे, अपनी टिप्पणियों से भारतीय लोकतंत्र को कमजोर करने की कोशिश करेंगे।

भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता गौरव भाटिया ने दावा किया कि कांग्रेस ने अपने शासन के दौरान 'चीन के साथ पार्टी-टू-पार्टी एमओयू' पर हस्ताक्षर किए थे। पार्टी ने अपने बयान में कहा, 'राहुल गांधी भारतीय लोकतंत्र को कमजोर करने के लिए जो प्रयास कर रहे हैं, वह उसी एमओयू का नतीजा है। अगर मैं गलत हूं तो मैं राहुल गांधी और (कांग्रेस अध्यक्ष) मल्लिकार्जुन खड़गे को एमओयू को सार्वजनिक करने की चुनौती देता हूं। राहुल की हालिया विदेश यात्रा पर भाजपा की यह पहली प्रतिक्रिया थी। उन्होंने कहा, हर कोई जानता है कि राहुल गांधी एक अपरिपक्व और अंशकालिक नेता हैं। लेकिन जब से वह (लोकसभा में) विपक्ष के नेता बने हैं, लोगों ने उनके कंधों पर एक बड़ी जिम्मेदारी डाल दी है। लेकिन मुझे यह कहते हुए दुख हो रहा है कि राहुल गांधी एक अपरिपक्व और अंशकालिक नेता हैं। भाटिया ने भाजपा मुख्यालय में एक संवाददाता सम्मेलन में कहा, 'राहुल भारतीय लोकतंत्र में काला धब्बा है। उन्हें यह भी नहीं पता कि जब वह किसी विदेशी देश का दौरा करते हैं तो क्या बात करनी है।' वह अमेरिका में एक कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के खिलाफ राहुल की टिप्पणी पर पत्रकारों के सवालों का जवाब दे रहे थे। राहुल ने भारतीय-अमेरिकी समुदाय को अपने संबोधन में कहा कि भारतीय (शेष पृष्ठ 9)

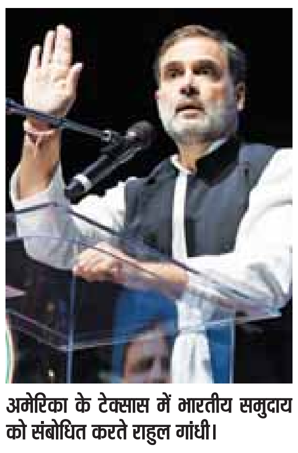

अमेरिका के टेक्सास में भारतीय समुदाय को संबोधित करते राहुल गांधी।

बारिश और ट्रैफिक जाम से जूझे ऑफिस जाने वाले

सौम्या शुक्ला। नई दिल्ली

राष्ट्रीय राजधानी के विभिन्न हिस्सों में हो रही बारिश के साथ-साथ एक विदेशी गणमान्य व्यक्ति की राजघाट की यात्रा ने सोमवार को यात्रियों और कार्यालय जाने वालों के लिए एक दु:स्वप्न बना दिया, क्योंकि विशेष रूप से मध्य दिल्ली में यातायात जाम के कारण शहर की सड़कों पर वाहन धीमी गति से रेंगते देखे गए। .शहर की सड़कों पर सुरक्षा कड़ी कर दी गई और पुलिस अधिकारियों की तैनाती बढ़ा दी गई क्योंकि अबू धाबी के क्राउन प्रिंस शेख खालिद बिन मोहम्मद बिन जायद अल नाहयान ने महात्मा गांधी को समर्पित स्मारक राजघाट का दौरा किया और वहां पुष्पांजलि अर्पित की। वह इस स्थान पर पौधा लगाने वाले संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) के शासक परिवार की तीसरी पीढ़ी भी बन गए।

यात्रा के मद्देनजर सुरक्षा व्यवस्था से यात्री नाराज हो गए और उन्होंने शहर में यातायात की स्थिति पर नाराजगी व्यक्त की। एक एक्स यूजर ने शहर में ट्रैफिक जाम पर अपनी पीड़ा व्यक्त करते हुए कहा, बस राजघाट पर एक हेलीपैड बनाओ; जब भी कोई विदेशी या घरेलू गणमान्य व्यक्ति गांधीजी को अपना सम्मान देना चाहता है तो मध्य दिल्ली को ट्रैफिक हार्ट अटैक देने से कहीं अधिक आसान होगा। दिलचस्प बात यह है कि दिल्ली यातायात पुलिस के पूर्व प्रमुख ने भी शहर में यातायात की स्थिति पर टिप्पणी की। दिल्ली के पूर्व विशेष पुलिस आयुक्त (यातायात) डॉ. मुक्तेश चंदर ने एक्स से बात करते हुए कहा, हर सुबह कालिंदी कुंज पुल के दिल्ली की तरफ लंबा ट्रैफिक जाम होता है। जब जेवर एयरपोर्ट शुरू होगा तो क्या होगा? क्या कोई योजना है? उन्होंने कहा, इस पुल के अंत में चोक प्वाइंट पर किसी वरिष्ठ ट्रैफिक पुलिस अधिकारी को कभी नहीं देखा।

विभिन्न स्टेशनों पर ट्रेनों के विलंबित होने के साथ मेट्रो में भी देरी देखी गई। आईटीओ पर मेट्रो से उतरने वाले एक यात्री ने कहा कि मेट्रो पुलिस ने उन्हें बाहर जाने से रोक दिया, जबकि उनमें से कुछ को हर 20 से 30 मिनट में बैचों में छोड़ दिया। एक मीडिया पेशेवर ने कहा, हमें आईटीओ निकास द्वार पर आधे घंटे से अधिक समय तक रोका गया, जिससे मुझे अपने कार्यालय के लिए देर हो गई। जिस बात ने स्थिति को बदतर बना दिया वह यह थी कि मेट्रो सुरक्षा ने हमें जाने से रोक दिया और यात्रियों को हर 20 मिनट में बैचों में छोड़ दिया। डच जियोलोकेशन टेक्नोलॉजी विशेषज्ञ, टॉमटॉम द्वारा प्रकाशित 13वें वार्षिक यातायात (शेष पृष्ठ 9)

कैंसर की दवा और नमकीन पर घटा जीएसटी

● स्वास्थ्य बीमा पर कर में कमी पर विचार के लिए होगा मंत्री समूह का गठन

पीटीआई। नई दिल्ली

नई दिल्ली में जीएसटी परिषद की बैठक में केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण, केंद्रीय मंत्री पंकज चौधरी तथा अन्य।

केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने सोमवार को कहा कि जीएसटी परिषद ने जीवन और स्वास्थ्य बीमा पर कर की दर कम करने के लिए मंत्री समूह गठित करने का निर्णय किया है। साथ ही कैंसर की दवाओं और नमकीन पर माल एवं सेवा कर (जीएसटी) को घटाने का फैसला किया है। उन्होंने जीएसटी परिषद की 54वीं बैठक लिए गए फैसलों के बारे संवाददाताओं को जानकारी देते हुए कहा कि जीवन और स्वास्थ्य बीमा पर जीएसटी दर में कमी के मामले पर विचार करने के लिए मंत्री समूह के गठन का निर्णय किया गया है। सीतारमण की अध्यक्षता वाली जीएसटी परिषद में राज्यों के वित्त मंत्री शामिल हैं। मंत्री समूह (जीओएम) की अगुवाई बिहार के उप-मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी करेंगे। वह फिलहाल जीएसटी दर को युक्तिसंगत बनाने के मंत्री समूह के भी प्रमुख हैं। सीतारमण ने कहा कि जीवन और स्वास्थ्य बीमा पर जीएसटी दर के बारे में विचार के लिए मंत्री समूह में नए सदस्य शामिल होंगे। उन्होंने कहा कि मंत्री समूह अक्टूबर के अंत तक अपनी रिपोर्ट देगा। बीमा प्रीमियम पर कराधान का मुद्दा संसद में उठ चुका है। विपक्षी सदस्यों ने मांग की थी (शेष पृष्ठ 9)

सीएम योगी ने किया 'लिकली' नोएडा का अनावरण

7 साल में विकास और निवेश के नए युग में उत्तर प्रदेश, 5500 करोड़ का निवेश, 9 हजार नौकरी आएंगी

- मुख्यमंत्री लखनऊ से वर्चुअल माध्यम से जुड़े, आइकिया नोएडा के सेक्टर 51 में 48000 वर्ग मीटर क्षेत्र में नोएडा में अब तक का सबसे बड़ा फ्लैगशिप स्टोर लिकली स्थापित करेगा

लखनऊ से वर्चुअल माध्यम से आइकिया रिटेल और इंग्का इन्वेस्टमेंट्स का उद्घाटन करते मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ।

नोएडा में उद्घाटन कार्यक्रम में मौजूद मंत्री नंद गोपाल नंदी व अन्य।

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

इंग्का समूह के (आइकिया रिटेल और इंग्का इन्वेस्टमेंट्स) लिकली का अनावरण प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने किया। इस मौके पर औद्योगिक विकास मंत्री नंद गोपाल गुप्ता, स्वीडन के राजदूत जान थेसलेफ, इंग्का सेंटर्स के वैश्विक विस्तार और विकास निदेशक सेबेस्टियन हाइल्विंग और आइकिया इंडिया की सीईओ और मुख्य सस्टेनेबिलिटी अधिकारी सुजैन पुलवर उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ इस कार्यक्रम में लखनऊ से वर्चुअल जुड़े। उन्होंने कहा नोएडा में लिक्ली का उद्घाटन उत्तर प्रदेश को आधुनिक शहरी जीवन का केंद्र बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह परियोजना न केवल नोएडा की संपन्नता की वृद्धि और विकास को दर्शाती है, बल्कि पूरे राज्य में सस्टेनेबल, समुदाय-केंद्रित स्थान बनाने के हमारे दृष्टिकोण से भी मेल खाती है। मुझे विश्वास है कि यह ऐसा प्रमुख गंतव्य बनेगा, जो हमारे नागरिकों की समृद्धि और खुशहाली में योगदान देगा।

उन्होंने कहा- मुझे विश्वास है कि यह ऐसा प्रमुख गंतव्य बनेगा, जो हमारे नागरिकों की समृद्धि और खुशहाली में योगदान देगा। हृदय से धन्यवाद निवेश के लिए ये एक अत्यंत प्रसन्नता का छड़ है। हमने निवेशों के विश्वास को अर्जित किया। आइकिया इंडिया उन्हीं निवेशकों में से एक। आइकिया रिटेल स्टोर और ऑफिस स्टोर सहित एक शॉपिंग सेंटर का प्रस्ताव भी है। उन्होंने कहा- हमारी सरकार ने औद्योगिक विकास नीति को बनाया। पीएम मोदी ने उस समय मार्गदर्शन किया और कहा इन्वेस्टमेंट एम्प्लॉयमेंट के साथ जुड़ना चाहिए। नए रोजगार की संभावना प्राप्त होगी। उत्तर प्रदेश आबादी का सबसे बड़ा राज्य है। अर्थ व्यवस्था 9.2 का योगदान दे रहा है। आज का निवेश पीएम मोदी की मंशा के अनुरूप है। यूपी देश की एक सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था में स्थापित करने में मददगार होगा।

सीएम योगी ने यूपी पिछले 7 वर्ष के अंदर विकास और निवेश के एक नए युग में प्रवेश किया। 7 वर्षों में इन्फ्रास्ट्रक्चर के नए डेवलपमेंट के लिए, युवकों के स्किल डेवलपमेंट के लिए। यूपी के अंदर बेहतरीन कानून व्यवस्था, ईज ऑफ डूइंग, इन्वेस्टमेंट के लिए डेस्टिनेशन के रूप में सामने आया है। उन्होंने कहा कि भारत का सबसे ब ?ा एयरपोर्ट भी यहीं है। अन लिमिटेड पोटेंशियली का प्रदेश है। 5,500 करोड़ (लगभग 607 मिलियन यूरो) के कुल निवेश के साथ, लिक्ली नोएडा में निवेश कर रहा है। इससे करीब 9,000 से अधिक नौकरियां मिलेंगी। प्राधिकरण ने 21 अक्टूबर 2019 को कॉमर्शियल बिल्डर प्लॉट योजना के तहत वाणिज्यिक भूखण्ड संख्या ई1, सेक्टर-51 में 47833.77 वर्ग मीटर का आवंटन किया गया।

इस प्रकार इस भूखंड के आवंटन से प्राधिकरण को कुल 850 करोड़ रुपए के राजस्व मिला। पांच साल की अवधि में पूरा करना होगा। औद्योगिक विकास मंत्री नंद गोपाल गुप्ता ने कहा, हम बड़ी प्रसन्नता से इंग्का सेंटर्स और आइकिया का यूपी में स्वागत करते हैं। लिकली उत्तर प्रदेश के लोगों के लिए अपने जीवन का आनन्द लेने, काम करने, खरीदारी करने और मिलने जुलने के लिए एक अनूठा गंतव्य होगा। उत्तर-प्रदेश की निवेशक-अनुकूल नीतियां इस परियोजना को अपनी पूरी क्षमता से साकार होने और राज्य को लाभान्वित करने में मदद करेंगी। इस मौके पर उन्होंने नोएडा और ग्रेटर नोएडा की तमाम परियोजना जिसमें जेवर एयरपोर्ट का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि आगाज तो सभी अच्छा करते है। लेकिन हम काम को अंजाम तक पहुंचाना जानते है। लिक्ली नोएडा 47,833 वर्ग मीटर में बनेगा।

दिल्ली-एनसीआर की सबसे बड़ी रिटेल परियोजनाओं में से एक होगा। आधुनिक शहरी निवासियों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए रिटेल, फूड कोर्ट, आतिथ्य, सह-कार्य स्थान, मनोरंजन और सांस्कृतिक अनुभवों का मिश्रण प्रदान करेगा। इससे 25 मिलियन से अधिक आगंतुकों के आकर्षित होने की उम्मीद है। यह बिल्डिंग पर्यावरण के अनुकूल होगी और पूरी बिल्डिंग के लिए एलईईडी प्लेटिनम सर्टिफिकेट और ऑफिस के लिए वेल गोल्ड सर्टिफिकेट लिया जाएगा।

नंदी ने सपा पर बोला हमला

- बोले, गाड़ी में सपा का झंडा तो समझो उसमें बैठा गुंडा, ये वन डिस्ट्रिक्ट वन माफिया पैदा करते थे

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

नोएडा में आइकिया के कार्यक्रम में शामिल होने आए औद्योगिक विकास मंत्री नंद गोपाल नंदी ने सपा पर जोरदार हमला बोला। उन्होंने कहा कि एनकाउंटर पर सवाल उठाने वाले लोगों के डीएनए में ही अपराधी और अपराध भरा हुआ है। ये मै नहीं कहा रहा हूं ये प्रदेश का बच्चा -बच्चा कहता है।

मंत्री नंदी ने कहा कि जिस 'गाड़ी में सपा का झंडा समझो उसमे बैठा गुंडा' इस तरह के जो वन डिस्ट्रिक्ट वन माफिया पैदा करते थे। आज वन डिस्ट्रिक्ट वन प्रोडेक्ट है। आज वन डिस्ट्रिक्ट वन मेडिकल कॉलेज है। आज इन्वेस्टमेंट आ रहा है। उन्होंने कहा कि उत्तर भारत का सबसे बड़ा डेटा सेंटर यहां संचालित है। रिकार्ड समय में फैक्ट्रियां चालू हो जा रही है। उप्र में बड़े पैमाने पर निवेश हो रहा है। उन्होंने सपा पर तंज कसते हुए ये भी कहा कि जो एनकाउंटर पर सवाल उठा रहे है उनका गुंडों, अपराधियों और माफियाओं से प्रेम जग जाहिर है। जब भी कोई गुंडा अपराध करता है तो वो अपराधी होता है। उसकी जाति धर्म देखकर नहीं।

पिछली सरकारों में पुलिस के सीईओ को सपा का झंडा लगाकर एक नेता स्कार्पियों पर घुमा रहे थे। गुंडे माफिया, अपराधी जिले के कप्तान और दरोगा को निर्देशित करने का काम करते थे। आज जो भी कानून को हाथ में लेने का दुस्साहस करता है। तो उनको उनकी भाषा में हमारी पुलिस जवाब देती है।

ग्रेनो एक्सप्रेसवे पर 180 करोड़ की लागत से बनेंगे दो अंडरपास

- डीपीआर बनाने की कवायद तेज, आईआईटी रुड़की के पास इसे मंजूरी के लिए भेजा जाएगा

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

नोएडा प्राधिकरण ने ग्रेटर नोएडा एक्सप्रेस वे पर दो नए अंडर पास बनाने की तैयारी तेज कर दी है। परियोजनाओं की डिटेल प्रोजेक्ट रिपोर्ट (डीपीआर) को अंतिम रूप दिया जा रहा है। इन्हें 10 दिन में आईआईटी रुड़की को मंजूरी के लिए भेजा जाएगा। इसके बाद टेंडर की प्रक्रिया होगी। दोनों अंडर पास को बनाने में करीब 180 करोड़ रुपए का खर्च आएगा। ग्रेटर नोएडा एक्सप्रेसवे पर एक अंडर पास झट्टा गांव के सामने बनाया जाएगा। यह अंडर पास सेक्टर-145, 146, 155 और 159 के बीच बनाया जाएगा। यह करीब 87 करोड़ रुपए की लागत से बनेगा। दूसरा अंडर पास सुल्तानपुर गांव के सामने बनाया जाएगा। यह अंडर पास सेक्टर-128, 129, 132 और 108 के बीच बनेगा। अधिकारियों का कहना है कि दोनों अंडर पास की डीपीआर लगभग तैयार हो गई है। एक बार सीईओ के समक्ष फाइनल प्रस्तुतिकरण दिया जाएगा। इसके बाद इसको मंजूरी के लिए आईआईटी के पास भेज दिया जाएगा। वहां से डीपीआर मंजूरी होने के बाद कुछ प्रक्रिया पूरी कर निर्माण के लिए टेंडर जारी कर दिया जाएगा। अभी दोनों जगह छोटे अंडर पास बने हुए हैं। यहां बड़े वाहन अटक जाते हैं और लंबा जाम लग जाता है। इसके पास ही चार लेन का बड़ा अंडर पास बनाया जाएगा। बड़े अंडर पास बनने से जाम की समस्या दूर हो जाएगी। ग्रेनो एक्सप्रेसवे पर पिछले डेढ़ से दो साल में तीन नए अंडर पास बनकर तैयार हुए हैं। ये अंडर पास सेक्टर-96, 142 और 152 में बनाए गए हैं। इनके बनने से एक्सप्रेस वे के दोनों ओर गांव, सेक्टर में जाने की बेहतर कनेक्टिविटी हुई है। इस बार बनाए जाने वाले अंडर पास में तकनीक का बदलाव किया गया है। 2020 के बाद एक्सप्रेस वे पर कोंडली, एडवंट और सेक्टर-96 अंडरपास बॉक्श पुशिंग तकनीक पर बनवाए गए थे। इसमें लगातार एक्सप्रेस वे की सड़क धंसने की समस्याएं सामने आई थीं। इसलिए अबकी बार झट्टा व सुल्तानपुर अंडरपास के लिए प्राधिकरण डायाफ्राम तकनीक का चयन किया है। इसमें बगैर खुदाई के डायाफ्राम वॉल कास्ट की जाएगी। इसके बाद दो तरफ जमीन के अंदर यह दीवार बनाकर उसके ऊपर अंडर पास की छत ढाल दी जाएगी। नीचे दोनों दीवारों व छत के बीच की मिट्टी खुदाई कर निकाली जाएगी। इसके बाद नीचे की सड़क का काम शुरू होगा। इसी तरह से दोनों लेन का काम प्राधिकरण करवाएगी। इसके कारण कुछ दिनों तक ट्रैफिक का संचालन प्रभावित रहेगा। जिससे सेक्टर-145, 146, 147, 148, 149, 150, 151, 152, 153, 154 को फायदा होगा। ये सभी सेक्टर रेजिडेंशियल और इंडस्ट्रियल है।

सोसाइटी की 10वीं मंजिल से गिरकर छात्र की मौत

- पंचशील हाईनीश सोसाइटी में हुआ हादसा, पुलिस कर रही जांच

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

ग्रेटर नोएडा में सोमवार को एक आवासीय सोसाइटी में दसवीं मंजिल की बालकनी से कथित तौर पर गिरकर एक छात्र की मौत हो गई। पुलिस ने यह जानकारी दी।

पुलिस ने बताया कि घटना बिसरख क्षेत्र की पंचशील हाईनीश सोसाइटी की है जब यहां रहने वाला अभि कुमार 10वीं मंजिल पर फ्लैट की बालकनी से संदिग्ध परिस्थितियों में गिर गया। थाना प्रभारी निरीक्षक मनोज कुमार सिंह ने बताया कि अभि (15) की मौके पर ही मौत हो गई। उन्होंने बताया कि शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है। उन्होंने बताया कि पुलिस हादसा और आत्महत्या दोनों पहलुओं को ध्यान में रखते हुए मामले की जांच कर रही है। थाना प्रभारी ने बताया कि अभि कक्षा 10वीं का छात्र था।

ट्रेन की चपेट में आने से दो लोगों की मौत

नोएडा। गौतमबुद्ध नगर जिले में अलग-अलग स्थानों पर ट्रेन की चपेट में दो लोगों की मौत हो गई। पुलिस ने सोमवार को यह जानकारी दी।

बादलपुर थाने के प्रभारी अमरेश कुमार सिंह ने बताया कि छपरौला गांव के पास एक व्यक्ति की ट्रेन की चपेट में आने से कमल सिंह की मौत हो गई जो पास के गांव का था। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्ट के लिए भेज दिया है।

थाना प्रभारी ने बताया कि एक अन्य घटना में चिपियाना बुजुर्ग गांव के पास ट्रेन की चपेट में आने से एक व्यक्ति की मौत हो गई जिसकी पहचान नहीं की जा सकी है।

नोएडा में पार्कों के संरक्षण के लिए जारी 3 करोड़ का टेंडर हुआ रद्द

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

नोएडा प्राधिकरण ने पार्कों में जल संरक्षण के लिए 3 करोड़ रुपए का टेंडर जारी किया था। इसको लेकर बड़ा विवाद खड़ा हो गया है। इसी से नोएडा के 27 पार्कों में वाटर हार्वेस्टिंग प्लांट लगने थे।

स्थानीय पर्यावरण विद विक्रांत तोंगड़ की शिकायत के बाद यह टेंडर रद्द कर दिया गया है। यह टेंडर उत्तर प्रदेश भूजल अधिनियम-2019 के नियमों का पालन नहीं करती है। विक्रांत तोंगड़ ने बताया कि नोएडा प्राधिकरण के वर्षा जल संरक्षण और उद्यान विभाग ने शहर के पार्कों में जल संरक्षण के लिए यह टेंडर जारी किया था। जब उन्होंने इस टेंडर की जांच की, तो पता चला कि यह उत्तर प्रदेश भूगर्भ जल अधिनियम का उल्लंघन करता है। तोंगड़ ने इस मामले में नोएडा प्राधिकरण से जवाब मांगा, लेकिन कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली। उन्होंने फिर डीएम व प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड को सूचित किया। आखिर में, यूपी भूजल विभाग ने नोएडा प्राधिकरण को नोटिस जारी किया। जिसके बाद टेंडर रद्द कर दिया गया।

संक्षिप्त समाचार

नोएडा थाने में रील बनाने का वीडियो वायरल

नोएडा। सेक्टर-126 थाने के अंदर रील बनाने का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। 18 सेकेंड के वायरल वीडियो में दो युवक थाने के अंदर जाते हुए दिखाई दे रहे हैं। पीछे से कोई वीडियो बना रहा है। वीडियो में तेज संगीत के साथ गाना बज रहा है जिसमें बियर और कट्टा जैसे शब्दों का इस्तेमाल है। युवक वीडियो बनाते हुए एक कार के पास पहुंचता है। कार के शीशे पर 251, 125 बीएनएस की धारा लिखी हुई दिखाई पड़ रही है। इस पर आठ अगस्त की तारीख भी लिखी हुई है। युवक हिम्मत दिखाते हुए बिना किसी काम के थाने में जाता है और वीडियो बनाकर वापस आ जाता है। पुलिस को भनक तक नहीं लगती है। सोशल मीडिया पर वीडियो वायरल होने के बाद यूजर ने पुलिस से आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई करने की मांग की है। पुलिस गा ?ी नंबर के आधार पर जांच कर रही है। साथ ही जल्द ही रील बनाने वाले इन युवकों की गिरफ्तारी की जाएगी। बता दे नोएडा में पहले भी थाने के बाहर वीडियो शूट कर रील बनाने के मामले सामने आ चुके है। ऐसा करने वाले सभी लोग जेल जा चुके है।

राधा जन्म बधाई रथयात्रा 11 को निकाली जाएगी

गाजियाबाद। श्री बांके बिहारी संकीर्तन मंडल द्वारा 11 सितम्बर को श्रीराधा जन्म बधाई रथ यात्रा का आयोजन किया जाएगा। प्रेसवार्ता में संस्था के अध्यक्ष हृद्य नारायण खत्री ने बताया कि 23 वर्षो से संस्था द्वारा इस यात्रा का आयोजन किया जा रहा है। यह रथयात्रा कालका गढ़ी चौक से आरंभ होकर मालीवाडा चौक, डासना गेट, चौपला मंदिर से होकर घंटाघर स्थित बड़े हनुमान मंदिर पर पूर्ण होगी। 17 सितम्बर को इसी क्रम में श्रीराधा जन्म षष्टी बधाई महोत्सव का आयोजन लोहिया नगर के अग्रसेन भवन में किया जाएगा। जिसमें राधारानी के नाम का संकीर्तन, कृष्ण लीला का भी मंचन किया जाएगा। इस दौरान सरंक्षक प्रेमचंद गुप्ता, पवन जिंदल, राजकौशिक, संजीव रहेजा, राकेश बेदी, जोगेन्द्र सहगल, गौरव भटनागर, बब्बन यादव, सौरभ यादव, वरूण लूथरा, गौरव सिंघल, ब्रजेश कुमार, संजय रैना और दिनेश शिशौदिया मौजूद रहे।

नोएडा में दो अज्ञात लोगों के शव मिले

नोएडा। नोएडा के विभिन्न जगहों से दो अज्ञात लोगों का शव मिले हैं। पुलिस के एक प्रवक्ता ने सोमवार को बताया कि थाना बिसरख क्षेत्र के चिपियाना के पास 50 वर्षीय एक अज्ञात व्यक्ति का शव मिला है। उन्होंने बताया कि थाना सेक्टर 58 क्षेत्र में एक अज्ञात व्यक्ति का शव मिला है। उन्होंने बताया कि पुलिस आसपास के लोगों और सोशल मीडिया के माध्यम से शवों की पहचान कराने का प्रयास कर रही है। प्रवक्ता ने बताया कि दोनों शवों की पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही मौत के सही कारणों का पता चलेगा।

गाजियाबाद में महिला डॉक्टर को ब्लैकमेल कर 20 लाख वसूले

पायनियर समाचार सेवा। गाजियाबाद

गाजियाबाद में स्त्री रोग विशेषज्ञ महिला चिकित्सक ने एक दूसरे डॉक्टर पर कोल्ड ड्रिंक में नशीला पदार्थ पिलाकर आपत्तिजनक फोटो लेने और ब्लैकमेल करके 20 लाख रुपए भी वसूल लिये। पुलिस ने आरोपी डॉक्टर को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी एक अस्पताल का मालिक भी है।

डीसीपी सिटी राजेश कुमार ने बताया कि नंदग्राम में रविवार को एक महिला डॉक्टर ने एक शिकायत पत्र दिया था। उन्होंने बताया था कि वह साहिबाबाद के आरएस हॉस्पिटल में विजिटिंग डॉक्टर हैं। इस अस्पताल के मालिक डॉक्टर हसीन है। जो पेशे से फिजियोथेरेपिस्ट हैं। महिला के मुताबिक डॉक्टर हसीन ने 20 लाख रुपए मांगे थे। जिससे वह अस्पताल में अल्ट्रासाउंड की मशीन लेंगे। जो पैसे आएंगे उनको बांट लिया करेंगे। महिला का आरोप है कि उनके द्वारा मना कर देने पर डॉक्टर हसीन ने उनको अपने घर बुलाया। महिला डॉक्टर के मुताबिक घर पर डॉक्टर हसीन ने उनको कोल्ड ड्रिंक में नशीला पदार्थ पिलाकर उनके आपत्तिजनक फोटो ले लिए। उन आपत्तिजनक फोटो को दिखाकर डॉक्टर हसीन महिला डॉक्टर से 20 लाख वसूल चुके थे। आगे भी पैसे मांग रहे थे। महिला की शिकायत पर पुलिस ने डॉक्टर हसीन को सोमवार को गिरफ्तार कर लिया।

खाते से साइबर अपराधियों ने निकाले 1.60 लाख रुपये

नोएडा। थाना बिसराख के प्रभारी निरीक्षक मनोज कुमार सिंह ने बताया कि सुरेंद्र कुमार ने थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई है कि वह दिल्ली में रहते हैं। पीड़ित के अनुसार वह अपने बेटे को नोएडा में शिफ्ट करवाने के लिए आए थे।

पीड़ित के अनुसार उन्होंने 29 जुलाई को एक एटीएम मशीन से कुछ पैसे विड्रा किया। इसके बाद अज्ञात साइबर अपराधियों ने उनके खाते से दो बार में 1,60,000 रुपए निकाल लिये। उन्होने बताया कि पीड़ित की शिकायत पर घटना की रिपोर्ट दर्ज कर पुलिस मामले की जांच कर रही है। थाना प्रभारी ने बताया कि जिन एटीएम मशीन से पैसे निकाले गए हैं, पुलिस वहां लगे सीसीटीवी कैमरे के आधार पर बदमाशों की तलाश कर रही है।

शेयर में निवेश के नाम पर करोड़ों की ठगी, दो गिरफ्तार

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

यूपी एसटीएफ ने शेयर बाजार कारोबार में निवेश के नाम पर करोड़ों की ठगी के आरोप में सगरना समेत दो लोगों को गाजियाबाद से गिरफ्तार किया है। एक अधिकारी ने सोमवार को जानकारी दी।

एसटीएफ (नोएडा इकाई) के पुलिस अधीक्षक राजकुमार मिश्रा ने बताया कि एक सूचना के आधार पर रविवार को टीम ने गाजियाबाद के वसुंधरा के सेक्टर-पांच में मोहन मिकिन्स सोसाइटी के एक फ्लैट में छापेमारी कर दो लोगों को गिरफ्तार किया। उनकी पहचान बागपत जिले के निवासी विनोद कुमार धामा और रविंद्र उर्फ नवाब के रूप में हुई है। पुलिस अधीक्षक ने बताया कि यह लोग गिरोह बनाकर ठगी को अंजाम देते थे और विनोद गिरोह का सरगना है। उन्होंने बताया कि गिरोह के अन्य सदस्यों की तलाश की जा रही है। उन्होंने बताया, ए लोग 10 से 15 फीसदी प्रतिमाह ब्याज देने का झांसा देकर करोड़ों की ठगी कर चुके हैं। इन्होंने पूर्व में नोएडा के सेक्टर-63 में कंपनी खोलकर घटना को अंजाम दिया था, लेकिन रातों-रात कंपनी बंद करके भाग गए थे। मिश्रा ने कहा, दोनों ने उत्तर प्रदेश, दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान और हैदराबाद के 500 से अधिक लोगों से 70 करोड़ से ज्यादा की ठगी करनी की बात कबूल की है।

निवेश का झांसा देकर दो लोगों से 1.40 करोड़ ठगे

नोएडा। साइबर ठगों ने शेयर बाजार में में निवेश कराने के नाम पर दो लोगों से क्रमशः 1 करोड़ और 40 लाख (कुल1.40 करोड़) रुपए से अधिक की ठगी कर ली। अपर पुलिस उपायुक्त (साइबर अपराध) प्रीति यादव ने बताया कि सेक्टर 75 स्थित गोल्फ एवेन्यू सोसाइटी में रहने वाली त्रिशला ने बीती रात को साइबर अपराध थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई कि कुछ महीने पहले उसे शेयर बाजार में निवेश के नाम पर एक करोड़ रूपए की ठगी की गई है। यादव ने बताया कि एक अन्य शिकायत में नोएडा के सेक्टर 16 में रहने वाले रोहित चावला ने भी बीती रात साइबर अपराध थाने में इसी तरह की ठगी की रिपोर्ट दर्ज कराई है। चावला ने अपनी शिकायत में 40.70 लाख रुपए की ठगी होने का आरोप लगाया है।

ग्रेटर नोएडा में गीली आउटफील्ड के कारण पहले दिन का खेल रद्द

- न्यूजीलैंड-अफगानिस्तान के बीच टेस्ट मैच

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

ग्रेटर नोएडा में टेस्ट मैच शुरू होने का इंतजार करते दर्शक।

न्यूजीलैंड और अफगानिस्तान के बीच एकमात्र टेस्ट के शुरुआती दिन सोमवार को यहां गीली आउटफील्ड के कारण खेल संभव नहीं हो सका।

मैच अधिकारियों ने दिन भर कई बार निरीक्षण किया लेकिन परिस्थितियां खिलाड़ियों के मैदान में उतरने के लिए उपयुक्त नहीं थीं। सोमवार को यहां बारिश नहीं हुई लेकिन आधुनिक ड्रेनेज (जल निकासी) व्यवस्था के अभाव के कारण पिछले सप्ताह भारी बारिश से मैदान प्रभावित हुआ। पूरे सप्ताह बारिश और तूफान के मौसम विभाग के पूर्वानुमान के कारण यह देखना होगा कि टेस्ट मैच खराब मौसम से कितना प्रभावित होता है।

अफगानिस्तान को 2017 में टेस्ट दर्जा मिला है और न्यूजीलैंड के खिलाफ यह उनका पहला टेस्ट मैच है। अफगानिस्तान ने अब तक 10 टेस्ट मैच खेले हैं। उसे बांग्लादेश, श्रीलंका और आयरलैंड के खिलाफ अपनी पिछली तीन टेस्ट मैचों में हार का सामना करना पड़ा है। न्यूजीलैंड के लिए यह इस साल मार्च के बाद पहला टेस्ट मैच है। टीम को उपमहाद्वीप के मौजूदा दौरे पर छह टेस्ट मैच खेलने है जिसमें श्रीलंका के खिलाफ दो और भारत के खिलाफ तीन मैचों की श्रृंखला शामिल है।

इस मैच को लेकर दिल्ली और एनसीआर से जुड़े खेल प्रेमियों में खासा क्रेज देखा जा रहा है। हालांकि व्यवस्था को लेकर लोग नाराज दिखे।

खेल मैदान में पिच का जायजा लेते दोनों टीम विशेषज्ञ व अंपायर।

छह साल की बच्ची से बैड टच का मुख्य आरोपी गिरफ्तार

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

नोएडा के सेक्टर-24 पुलिस ने एक निजी स्कूल में केजी में पढ़ने वाली छह साल की बच्ची से बैड टच मामले में मुख्य आरोपी कालू ठाकुर उर्फ आमिर को गिरफ्तार किया है। इसकी गिरफ्तारी के लिए पुलिस ने कई टीम लगाई थी। आरोपी को शिमला पार्क से गिरफ्तार किया है।

इससे पहले मुख्य आरोपी को भगाने और आरोपों को छिपाने के आरोप में स्कूल की प्रिंसिपल, टीचर, सुपरवाइजर और निर्माण कार्य कराने वाले ठेकेदार को गिरफ्तार किया गया था। सभी को कोर्ट में पेश किया गया, जहां से उन्हें न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया। परिजन के मुताबिक उनकी बेटी स्कूल परिसर में खेल रही थी। इसी दौरान स्कूल परिसर में चल रहे निर्माण कार्य में लगे एक मजदूर ने बच्ची को बैड टच किया। बच्ची ने इसका विरोध किया।

वहां से भागते हुए बच्ची ने इसकी जानकारी स्कूल में मौजूद शिक्षकों को दी। सूचना प्रिंसिपल और प्रबंधन तक पहुंची। आरोप है कि स्कूल प्रबंधन ने मामले को दबाने का प्रयास किया। उन्होंने आरोपी को बुलाकर धमकाया और कुछ देर बाद स्कूल से भगा दिया।

एडीसीपी मनीष कुमार मिश्र ने बताया कि घटना की जांच कराई गई। जांच में सामने आया कि बच्ची के साथ स्कूल में काम करने वाले एक मजदूर द्वारा घटना की गई।

नालों की सफाई में भ्रष्टाचार की जांच करेगी एसीबी

उपराज्यपाल ने दिए आदेश, एक ही ठेकेदार को 80 करोड़ का किया गया था फर्जी भुगतान

● पीडब्ल्यूडी के इंजीनियरों, अधिकारियों की मिलीभगत की जताई गई आशंका

राजधानी में नालों की सफाई के लिए अधिकारियों को दिशा-निर्देश देते उपराज्यपाल वीके सक्सेना। (फाइल फोटो)

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

पालम इलाके नालों की सफाई में गड़बड़ी की जांच भ्रष्टाचार निवारण शाखा करेगी। लोक निर्माण विभाग के इंजीनियरों और अधिकारियों की मिलीभगत से चार साल 2021-22 से 2024-25 के दौरान, 2 डिवीजनों में एक ही ठेकेदार को करीब 80 करोड़ रुपये का फर्जी तरीके से भुगतान करने का आरोप है। निगम पार्षद और अधिवक्ता अमित खरखरी ने कथित भ्रष्टाचार की शिकायत उपराज्यपाल विनय कुमार सक्सेना से की थी, जिसमें उन्होंने नालों की सफाई में फर्जी भुगतान, टेंडर दरों में अत्यधिक वृद्धि, फर्जी बिलिंग सहित बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार के आरोप लगाए थे। शिकायतकर्ता ने ठेकेदार द्वारा नालों की सफाई का काम सुपर-सकर मशीनों से कराने की बजाए, सफाई कर्मियों द्वारा मैनुअल तरीके से कराने का भी आरोप लगाया है। उनकी शिकायत को गंभीरता से लेते हुए उपराज्यपाल ने मुख्य सचिव को एसीबी द्वारा मामले की गहन जांच करने और जल्द कार्रवाई रिपोर्ट पेश करने का निर्देश दिया है।

पश्चिमी दिल्ली के नजफगढ़ क्षेत्र के निगम पार्षद अमित खरखरी ने उपराज्यपाल को 11 अगस्त 2024 को की गई शिकायत में आरोप लगाया है कि नालों की सफाई के काम में शामिल अधिकारी गंभीर भ्रष्टाचार में लिप्त हैं। इन आरोपों में जनता के धन का दुरुपयोग, तय निविदा मानदंडों की अवहेलना और भ्रष्ट आचरण शामिल हैं। शिकायत में कहा गया है कि सुरेंद्र सिंह नाम के ठेकेदार को अनुचित लाभ पहुंचाया गया और निर्धारित मानदंडों का उल्लंघन करते हुए उसे नालों की सफाई का ठेका दे दिया गया, जिससे सरकार को वित्तीय नुकसान हुआ। अपनी शिकायत में खरखरी ने निम्नलिखित अनियमितताओं का आरोप लगाया है।

वर्ष 2022 के मानसून के दौरान नालों की सफाई में भ्रष्टाचार। जाफरपुर में विभिन्न संवेदनशील स्थानों पर सीवरेज पंपों को लगाने में अनियमितता बरती गई। कार्य मापन में अनियमितता, एक ही कार्य के लिए दोहरा भुगतान किया गया। केवल कागजों पर किया गया काम। सब-डिवीजन निविदाओं का दुरुपयोग। निविदा नियमों का उल्लंघन और नालों की सफाई का काम मैनुअल तरीके से सफाईकर्मियों द्वारा कराया गया। निविदा दरों में अत्यधिक वृद्धि और धन का दुरुपयोग। लगातार चार वर्षों तक फर्जी बिलिंग। आरटीआई में बाधा डाली गई और आरोपों को दबाने का प्रयास किया गया। एनआईटी प्रक्रिया में भ्रष्टाचार और हेरफेर। वित्तीय कदाचार और अधिक बिलिंग। धन का दुरुपयोग और धोखाधड़ी से भुगतान। ठेकेदार सुरेंद्र सिंह को ठेका देने में पक्षपात, भ्रष्टाचार और सत्ता का दुरुपयोग।

खरखरी ने जिन अधिकारियों पर आरोप लगाए हैं, उनमें कार्यकारी अभियंता आशीष गुप्ता, कनिष्ठ अभियंता अजय कुमार मीणा, सहायक अभियंता धरम सिंह मीणा, के साथ ठेकेदार सुरेंद्र सिंह और पीडब्ल्यूडी के दूसरे कर्मचारी भी इस गलत काम में प्रत्यक्ष रूप से शामिल रहे हैं। शिकायत में यह भी कहा गया है,क्योंकि दोनों डिवीजन उच्च पदस्थ पीडब्ल्यूडी अधिकारियों के अधीन थे, जिनमें अधीक्षण अभियंता राजपाल शिवरेन और शैलेंद्र मिश्रा और मुख्य अभियंता दक्षिण (एम) मनोज कुमार अग्रवाल के शामिल थे, इसलिए इस बात की संभावना है कि इन्हें इन भ्रष्ट गतिविधियों की जानकारी थी और उन्होंने जांच से बचने के लिए उपर्युक्त पूर्व अभियंता और सहायक अभियंता के साथ मिलीभगत की होगी। ऐसे कई उदाहरण हैं, जहां इन अधिकारियों द्वारा दर्ज किए गए रिकॉर्ड को जानबूझकर बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया गया, ताकि ठेकेदार को तय राशि से अधिक भुगतान किया जा सके। इन आरोपों का समर्थन करने वाले विभिन्न दस्तावेजों से यह पता चलता है कि इसकी वजह से सरकारी खजाने का वित्तीय नुकसान हुआ है। उपराज्यपाल सचिवालय द्वारा मुख्य सचिव को भेजे गए पत्र में, मामले में की गई कार्रवाई की रिपोर्ट को जल्द से जल्द सचिवालय भेजने का भी अनुरोध किया गया है।

एलजी से कानून-व्यवस्था नहीं संभल रही इस्तीफा दें : प्रियंका

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

● कहा, सरेआम फायरिंग, लूटपाट और हत्याएं हो रही हैं, लेकिन कोई एक्शन नहीं हो रहा

आम आदमी पार्टी ने राष्ट्रीय राजधानी में कानून-व्यवस्था की बिगड़ती स्थिति को लेकर उपराज्यपाल विनय कुमार सक्सेना से इस्तीफा मांगा। आप की राष्ट्रीय प्रवक्ता प्रियंका कक्कड़ ने कहा कि शनिवार देर रात सीमापुरी में एक क्लब के बाहर गोलीबारी की घटना हुई थी।

उन्होंने आरोप लगाया, पहले भी ऐसी घटनाएं हुई हैं। जंगपुरा में लूटपाट की कोशिश में एक वरिष्ठ नागरिक की हत्या कर दी गई। जंगपुरा में आभूषण की एक दुकान में चोरी हुई। भारतीय जनता पार्टी की अगुवाई वाली केंद्र सरकार और उपराज्यपाल के शासन में कानून एवं व्यवस्था की स्थिति बिगड़ रही है। कक्कड़ ने दावा किया कि भाजपा द्वारा शासित राज्यों में कानून-व्यवस्था खराब है।

उन्होंने कहा, दिल्ली में कानून-व्यवस्था केंद्र तथा उपराज्यपाल के तहत आती है। ऐसी स्थिति में क्या उनके पास पद पर बने रहने का अधिकार है। उन्हें इस्तीफा देना चाहिए। आप नेता ने एलजी पर सरकार के कामकाज में हस्तक्षेप करने का भी आरोप लगाया और पुलिस सुधारों के लिए उनके द्वारा उठाए गए कदमों पर सवाल खड़ा किया।

नाले में गिरकर मां-बेटे की मौत मामले में गलत सूचना फैलाई जा रही : डीडीए

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

● हाईकोर्ट ने कहा था डीडीए मृतकों के कानूनी उत्तराधिकारियों को 20 लाख का मुआवजा दें

दिल्ली विकास प्राधिकरण (डीडीए) ने सोमवार को दावा किया कि गाजीपुर पेपर मार्केट के पास खुले नाले में गिरकर मां-बेटे की मौत के मामले में उच्च न्यायालय के आदेश को लेकर विभाग और उपराज्यपाल के बारे में गलत जानकारी फैलाई जा रही है। जिस नाले में यह घटना हुई, वह दिल्ली नगर निगम के अधिकार क्षेत्र में आता है।

उच्च न्यायालय ने बृहस्पतिवार कहा था कि खुल नाले में गिरकर मां-बेटे की मौत के मामले में डीडीए मृतकों के कानूनी उत्तराधिकारियों को मुआवजे के तौर पर 20 लाख रुपए दे। शुक्रवार को संवाददाता सम्मेलन में आम आदमी पार्टी की प्रवक्ता प्रियंका कक्कड़ ने उपराज्यपाल और भाजपा पर निशाना साधते हुए दावा किया कि मां-बेटे की मौत डीडीए के नाले में डूबने से हुई थी।

डीडीए द्वारा जारी एक बयान के अनुसार, 31 जुलाई की इस घटना के संबंध में पांच सितंबर के उच्च न्यायालय के आदेश को लेकर डीडीए और एलजी पर लगाए जा रहे विभिन्न आरोपों और गलत जानकारी की प्रतिक्रिया में प्राधिकरण अपने पिछले रुख पर कायम है। इसमें कहा गया कि डीडीए ने विवादों में उलझे बिना उच्च न्यायालय के समक्ष मृतकों-तनूजा और प्रियांश के कानूनी उत्तराधिकारी को 20 लाख रुपए का मुआवजा देने की अपनी इच्छा जाहिर की थी। इस दौरान उसने अपने दायित्व को स्वीकार नहीं किया था।

बयान में कहा गया, डीडीए ने मानवीय आधार पर मुआवजा देने पर सहमति जताई है। डीडीए का रुख यह था कि जिस खुले नाले में यह दुर्घटना हुई, वह नगर निगम के अधिकार क्षेत्र में आता है। इस नाले के साथ-साथ 9.9 किलोमीटर लंबी सड़क को डीडीए ने 26.05 करोड़ रुपए के डेफिशिएन्सी चार्ज का भुगतान कर मार्च 2023 में नगर निगम को सौंप दिया था। डीडीए अभी भी उसी रुख पर कायम है।

अदालत ने यह भी आदेश दिया कि अधीनस्थ अदालत उसके द्वारा जारी आदेशों से प्रभावित न होकर अपनी कार्यवाही जारी रखेगी। इसमें कहा गया कि निराधार गलत सूचना फैलाने वाले निहित स्वार्थी तत्वों को किसी भी तरह की भ्रामक बयानबाजी न करने की सलाह दी जाती है। बयान में कहा गया कि डीडीए इस संबंध में एक राजनीतिक दल के प्रतिनिधियों द्वारा लगाए गए आरोपों का स्पष्ट तौर पर खंडन करता है।

सख्ती : दिल्ली वाले इस दिवाली भी नहीं चला सकेंगे पटाखे

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

दिवाली एक ऐसा त्योहार है जिसमें रंगों से सजी रंगोली है, जगमग रोशनी के लिए लाइटें और झालर हैं तो जश्न के लिए पटाखे हैं। त्योहार से एक सप्ताह पहले से ही घर दुल्हन की तरह सजने लग जाते हैं। लोग रिश्तेदारों से मिलते हैं और उनका अभिवादन करते हैं या परिवार के साथ जश्न मनाते हैं। लेकिन पिछली बार ही तरह इस बार भी रौशनी का त्योहर थोड़ा बंदिशों वाला होगा। दिल्ली वाले इस दीवाली भी पटाखे नहीं चला सकेंगे। केजरीवाल सरकार ने सर्दियों के मौसम में वायु प्रदूषण खराब होने की आशंका के मद्देनजर सभी प्रकार के पटाखों के उत्पादन, भंडारण, बिक्री और उनके इस्तेमाल पर पूरी तरह प्रतिबंध लगा दिया है।

सरकार ने पिछले साल भी सर्दी के मौसम में वायु प्रदूषण को काबू करने के लिए पटाखों के इस्तेमाल पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया था। पर्यावरण मंत्री गोपाल राय ने बताया कि पटाखों की ऑनलाइन बिक्री व डिलीवरी पर भी प्रतिबन्ध लगाया गया है। यह प्रतिबन्ध 1 जनवरी 2025 तक लागू रहेगा। साथ ही प्रतिबन्ध को कड़ाई से लागू कराने के लिए दिल्ली पुलिस, डीपीसीसी और राजस्व विभाग के साथ मिलकर संयुक्त कार्य योजना बनायी जाएगी।

आतिशबाजी पर पूर्ण प्रतिबन्ध के बारे में विस्तार से जानकारी देते हुए पर्यावरण मंत्री ने बताया कि सर्दियों के मौसम में वायु प्रदूषण बढ़ने का खतरा रहता है। इस मौसम में पटाखों को जलाने से भी प्रदूषण बढ़ता है। ऐसी स्थिति को देखते हुए पिछले साल की तरह इस बार भी हर प्रकार के पटाखों के उत्पादन , भंडारण, बिक्री एवं उपयोग पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया जा रहा है, जिससे लोगों को प्रदूषण की मार से बचाया जा सके।

व्यापारियों को किसी तरह का कोई नुकसान न हो

गोपाल राय ने बताया कि उनकी सरकार नहीं चाहती है कि व्यापारियों और डीलरों को किसी भी तरह का आर्थिक नुकसान हो। ऐसी किसी भी स्थिति से बचने के लिए समय रहते हर प्रकार के पटाखों के उत्पादन, भंडारण, बिक्री और उपयोग पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने का निर्णय लिया गया है। प्रदूषण को नियंत्रित करने को लेकर सरकार गंभीर है। इसलिए 21 फोकस बिंदुओं पर विंटर एक्शन प्लान बना रही है।

लोगों में किसी प्रकार का कोई भ्रम नहीं रहे

पटाखों को लेकर लोगो में किसी भी तरह का भ्रम नहीं रहे। इसलिए यह प्रतिबन्ध हर तरह के पटाखों के लिए मान्य है। यह प्रतिबंध 1 जनवरी 2025 तक राष्ट्रीय राजधानी में लागू रहेगा, ताकि पटाखों से होने वाले प्रदूषण से निजात दिलाई जा सकें ।

ग्रीन पटाखों को प्रोत्साहित करे सरकार : सचदेवा

नई दिल्ली। दिवाली पर पटाखों पर पूर्ण प्रतिबंध को लेकर दिल्ली भाजपा ने पर्यावरण मंत्री गोपाल राय पर निशाना साधा है। पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा ने कहा है कि प्रदूषण के खिलाफ लड़ाई महत्वपूर्ण है और सख्त कदम उठाने की जरूरत है, लेकिन यह हैरान करने वाली बात है कि केजरीवाल सरकार वही पुराने दिखावटी कदम जैसे पटाखों पर प्रतिबंध लगाने में लगी हुई है। सचदेवा ने कहा कि सर्दियों के मौसम में वायु गुणवत्ता खराब होने का मुख्य स्रोत फसलों का अवशेष जलाना, निर्माण कार्य और सड़क की धूल है।

प्रदूषण का डर गोपाल राय को सताने लगा है : देवेंद्र

नई दिल्ली। प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष देवेन्द्र यादव ने कहा कि सर्दियों में प्रदूषण को नियंत्रित नहीं कर पाने का डर पर्यावरण मंत्री गोपाल राय को अभी से सताने लगा है। अगस्त के अंतिम सप्ताह में प्रदूषण नियंत्रण के 14 सूत्री कार्यक्रम की घोषणा करने के बाद उसमें संशोधन करके उसे 21 दिन का विंटर एक्शन प्लान बनाकर घोषणा करना लोगों को गुमराह करना है। यह चिंताजनक है कि सभी संसाधन, सत्ता, अधिकारी और कर्मचारी होने के बावजूद गोपाल राय प्रदूषण को नियंत्रित करने में आश्वस्त अथवा सुनिश्चित नहीं है।

विरोध के बाद जीएसटी के दायरे से बाहर होगा रिसर्च ग्रांट : आतिशी

● मंत्री ने कहा, यह देश के विकास के लिए एक बड़ा कदम है

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

वित्तमंत्री आतिशी ने दावा किया 54वें जीएसटी काउंसिल बैठक में केजरीवाल सरकार के विरोध के बाद अब रिसर्च ग्रांट को जीएसटी के दायरे से बाहर रखा जाएगा। दिल्ली व पंजाब सरकार के जीएसटी काउंसिल में विरोध पर केंद्र सरकार रिसर्च ग्रांट को जीएसटी के दायरे से बाहर करने के लिए राजी हो गई है।

इस बाबत जानकारी साझा करते हुए आतिशी ने कहा कि, जीएसटी काउंसिल ने रिसर्च ग्रांट पर जीएसटी ना लगाने का फैसला लिया है। यह देश के विकास के लिए एक बड़ा कदम है। शिक्षण संस्थानों के रिसर्च ग्रांट पर टैक्स लगना टैक्स टेररिज्म के समान है। लेकिन आम आदमी पार्टी के विरोध के बाद रिसर्च ग्रांट को जीएसटी के दायरे से बाहर करने का फैसला रिसर्च के जरिए देश की तरक्की में योगदान देने वाले इस मुद्दे पर केंद्र सरकार और बाक़ी राज्य सरकारों की सहमति बनी।

शिक्षण संस्थानों को मिलने वाले प्राइवेट रिसर्च ग्रांट पर केंद्र सरकार 18फीसदी जीएसटी लेती है। पिछले दिनों केंद्र सरकार ने देश के 6 बड़े शिक्षण संस्थानों को रिसर्च ग्रांट पर 220 करोड़ रुपये का टैक्स नोटिस भेजा था।

अगर जीएसटी लगा तो करेंगे आंदोलन : सीटीआई

नई दिल्ली। डेबिट और क्रेडिट कार्ड से 2 हजार रुपये तक के छोटे ऑनलाइन ट्रांजेक्शस पर जीएसटी लगाने का व्यापारी विरोध करेंगे। व्यपारियों का कहना है कि यदि इस प्रस्ताव को मंजूरी मिलती है, तो ऐसे छोटे लेन-देन पर अतिरिक्त कर लगने से उपभोक्ताओं को महंगाई का सामना करना पड़ सकता है। चैंबर ऑफ ट्रेड एंड इंडस्ट्री के चेयरमैन बृजेश गोयल और अध्यक्ष सुभाष खंडेलवाल ने कहा कि देश में कुल डिजिटल पेमेंट्स में से 80 प्रतिशत से ज्यादा लेनदेन 2 हजार रुपये से कम के होते हैं। कोविड-19 महामारी के बाद सरकार ने डिजिटल पेमेंट को बढ़ावा दिया था, यदि ट्रांजेक्शन पर जीएसटी वसूला जाएगा, तो लोग नकदी लेकर चलने लगेंगे। इससे जान माल का खतरा बढ़ेगा।

नगर निगम ने मच्छरों का प्रकोप रोकने के लिए चलाया अभियान

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

● 290 निर्माण स्थलों का निरीक्षण, 83 को कानूनी नोटिस और 60 अभियोजन हुआ जारी

डेंगू, मलेरिया और चिकनगुनिया जैसी मच्छर जनित बीमारियों के प्रसार से निपटने के लिए दिल्ली नगर निगम सभी 12 क्षेत्रों में निर्माण स्थलों पर मच्छरों के प्रजनन की जाँच के लिए विशेष अभियान चलाया। इस दौरान 290 निर्माण स्थलों का निरीक्षण किया गया, जिनमें से 148 में मच्छरों का प्रजनन पाया गया। प्रजनन को वहीं नष्ट कर दिया गया, और इस संबंध में 83 कानूनी नोटिस और 60 अभियोजन जारी किए गए।

निर्माण स्थल, पानी के ठहराव की प्रवृत्ति के साथ, एडीज और एनोफिलीज मच्छरों के लिए संभावित प्रजनन स्थल हैं, जो इन बीमारियों को फैलाने के लिए जिम्मेदार है। मच्छरों के प्रजनन को रोकने और नागरिकों के लिए सुरक्षित और स्वस्थ वातावरण सुनिश्चित करने में सभी का सहयोग महत्वपूर्ण है। दिल्ली नगर निगम नागरिकों को मच्छर जनित बीमारियों से बचाने के लिए सक्रिय कदम उठाने के लिए प्रतिबद्ध है।

प्याज व अन्य वस्तुओं की कीमतों पर रखें नियंत्रण : इमरान

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

अधिकारियों को बैठक में निर्देश देते खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री इमरान हुसैन।

● आप सरकार के खाद्य एवं आपूर्ति मंत्री ने की आवश्यक वस्तुओं के खुदरा मूल्यों की समीक्षा

खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री इमरान हुसैन ने बाजारों में प्याज समेत अन्य आवश्यक वस्तुओं की खुदरा कीमतों की समीक्षा की। दिल्ली के बाजारों में प्याज व अन्य खाद्य उत्पादों की कीमतों को जानने के लिए हुई बैठक में विशेष आयुक्त और खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग के मार्केटिंग इंटेलिजेंस सेल के वरिष्ठ अधिकारियों ने भाग लिया।

बैठक के दौरान इमरान हुसैन ने विभाग को खाद्य उत्पादों की कीमतों को नियंत्रण में रखने के लिए आवश्यक कदम उठाने को कहा। इमरान हुसैन ने खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग को निर्देशित किया कि प्याज के साथ आवश्यक वस्तुओं की कीमतों पर नजर रखने के लिए खाद्य आपूर्ति विभाग की क्रैक टीम मार्केट इंटेलिजेंस सेल को बाजार में तुरन्त कार्रवाई करने के लिए उतारा जाये। बैठक में उपस्थित अधिकारियों ने मंत्री को अवगत कराया कि प्याज की औसत खुदरा कीमत पिछले कई सप्ताह से स्थिर है। अधिकारीयों ने बताया कि आने वाले दिनों में भी कीमतों के स्थिर रहने या गिरने की संभावना है। हुसैन ने विभाग को नियमित आधार पर उनके समक्ष निरीक्षण रिपोर्ट भेजने का भी निर्देश दिया।

इसके साथ ही मंत्री इमरान हुसैन ने कहा कि जमाखोरी और कालाबाजारी से सम्बंधित जानकारी भी जुटाएं, ताकि संबंधित विभाग और आरोपियों के खिलाफ आवश्यक वस्तु अधिनियम के तहत समुचित कार्रवाई कर सकें।

संक्षिप्त समाचार

राजेश वर्मा ने सीएक्यूएम अध्यक्ष का कार्यभार संभाला

राजेश वर्मा

नई दिल्ली। भारतीय प्रशासनिक सेवा ओडिशा कैडर के 1987 बैच के अधिकारी राजेश वर्मा ने सोमवार को वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग के नए पूर्णकालिक अध्यक्ष के रूप में कार्यभार संभाल लिया। वर्मा आयोग में लोक प्रशासन एवं शासन में साढ़े तीन दशकों से अधिक का अनुभव और विशेषज्ञता रखते हैं। वर्मा के पास राष्ट्रपति सचिवालय सहित केंद्र और राज्य सरकारों के विभिन्न विभागों में काम करने का व्यापक अनुभव है। 31 अगस्त 2024 को सेवानिवृत्ति से पूर्व वर्मा ने राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के सचिव के रूप में कार्य किया। वर्मा अपने साथ सार्वजनिक प्रशासन और शासन में साढ़े तीन दशकों से अधिक का अनुभव और विशेषज्ञता लेकर आयोग में आए हैं। वर्मा को कार्यभार ग्रहण करने की तिथि से तीन वर्ष की अवधि या अगले आदेशों तक, जो भी पहले हो, नियुक्त किया गया है।

अमानतुल्लाह को भेजा 14 दिन की न्यायिक हिरासत में

नई दिल्ली। अदालत ने आम आदमी पार्टी के विधायक अमानतुल्लाह खान को धन शोधन के एक मामले में सोमवार को 14 दिन की न्यायिक हिरासत में भेज दिया। विशेष न्यायाधीश राकेश स्याल ने कहा कि अमानतुल्लाह को 23 सितंबर तक न्यायिक हिरासत में भेजा जाता है। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने अदालत को बताया कि आरोपी को हिरासत में रखकर पूछताछ करने की अब और जरूरत नहीं है और उसे न्यायिक हिरासत में भेजने का अनुरोध किया, जिसके बाद न्यायाधीश ने यह आदेश जारी किया। खान को सात दिन की ईडी हिरासत की अवधि समाप्त होने के बाद अदालत में पेश किया गया था। जांच एजेंसी ने अदालत को बताया कि रिहा कर दिए जाने पर खान मामले की जांच और गवाहों को प्रभावित कर सकता है। ईडी ने अदालत से कहा कि खान ने हिरासत की पिछली अवधि में पूछताछ के दौरान सहयोग नहीं किया। खान के वकील ने ईडी की अर्जी का विरोध किया और अदालत से उनके मुवक्किल को रिहा करने का अनुरोध करते हुए कहा कि न्यायाधीश रिहाई पर कोई भी शर्त निर्धारित कर सकते हैं।

सफदरजंग में बच्चे में सफल अस्थि मज्जा प्रतिरोपण

नई दिल्ली। केंद्र संचालित सफदरजंग अस्पताल ने लिंफोमा से पीड़ित नौ वर्षीय बच्चे का सफल अस्थि मज्जा प्रतिरोपण किया है। इस अस्पताल में बच्चों के संबंध में इस तरह का यह पहला प्रतिरोपण है। लिम्फोमा शरीर के रोगाणु रोधी लसीका तंत्र का कैंसर होता है। यह प्रतिरोपण वर्धमान महावीर मेडिकल कॉलेज और सफदरजंग अस्पताल के बाल चिकित्सा रुधिर एवं कैंसर रोग विज्ञान (पीएचओ) विभाग के चिकित्सकों ने किया। सफदरजंग अस्पताल के शिशु रोग विभाग के प्रमुख डॉ. रतन गुप्ता ने कहा कि बच्चे को उच्च जोखिम वाला रिलैप्स्ड हॉजकिन लिंफोमा था और उसका इलाज दवाओं एवं कीमोथेरेपी से किया जा रहा था।

एबीवीपी ने डूसू चुनाव के संभावित उम्मीदवारों की जारी की सूची

कनिष्का चौधरी

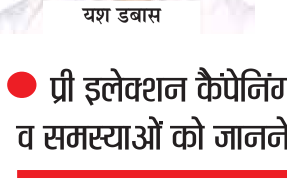
यश डबास

मित्राविंदा कर्णवाल

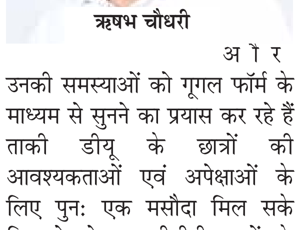
ऋषभ चौधरी

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

दिल्ली विश्वविद्यालय छात्रसंघ चुनाव 27 सितंबर को होंगे। इसको लेकर छात्र संगठनों ने कमर कस ली है। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने डूसू चुनाव के लिए 9 संभावित उम्मीदवारों की सूची जारी कर दी है। इस सूची में ऋषभ चौधरी, ऋषिराज सिंह, अमन कपासिया, भानुप्रताप सिंह, आर्यन मान, यश डबास, कनिष्का चौधरी, हिमांशु नागर एवं मित्राविंदा के नाम शामिल है।

एबीवीपी द्वारा जारी किए गए संभावित उम्मीदवारों ने सोमवार से कॉलेजों में प्री इलेक्शन कैंपेनिंग शुरू कर दिया है। यह प्री कैंपेनिंग सोमवार से 12 सितंबर तक अलग-अलग कॉलेजों में चलेगा, जहां पर एबीवीपी की तरफ से घोषित किए गए संभावित उम्मीदवार छात्रों से बात करके उन्हें एबीवीपी नीत डूसू के पिछले एक साल के उपलब्धियों से अवगत करवाएंगे एवं उनकी समस्याओं को गूगल फॉर्म के माध्यम से जानने का प्रयास करेंगे। एबीवीपी दिल्ली के प्रांत मंत्री हर्ष अत्री ने कहा कि, दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ चुनाव डीयू के छात्रों के लिए उत्सव होता है, इसलिए इसकी महत्ता और बढ़ जाती है। दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ चुनाव के लिए संभावित शीर्ष 9 उम्मीदवारों की सूची जारी की है,जो कॉलेजों में जाकर एबीवीपी नीत डूसू के पिछले एक साल के उपलब्धियों को छात्र-छात्राओं के सामने रख रहे हैं और उनकी समस्याओं को गूगल फॉर्म के माध्यम से सुनने का प्रयास कर रहे हैं ताकी डीयू के छात्रों की आवश्यकताओं एवं अपेक्षाओं के लिए पुनः एक मसौदा मिल सके जिसको लेकर एबीवीपी छात्रों के हित में नए स्तर पर कार्ययोजना बना सकें। एबीवीपी जल्द ही अंतिम चार उम्मीदवारों के नाम की सूची भी जारी करेगा।

● प्री इलेक्शन कैंपेनिंग से हर विद्यार्थी तक पहुंचने व समस्याओं को जानने कर रहे प्रयास : हर्ष अत्री

गुरुग्राम में निर्दलीयों का भविष्य भी रहा है स्वर्णिम

- वर्ष 2000 में जीते थे गोपीचंद गहलोत, 2009 में सुखबीर कटारिया
- गहलोत ने लड़ा था बागी होकर निर्दलीय चुनाव

संजय कुमार मेहरा। गुरुग्राम

नवीन गोयल,

मोहित ग्रोवर,

मुकेश शर्मा।

गुरुग्राम विधानसभा में राजनीति के दंगल में निर्दलीय उम्मीदवारों का भी मंगल हुआ है। जनता ने उन्हें सत्ता के गलियारों तक पहुंचाकर अपनी वोट की ताकत दिखाई है। हरियाणा बनने के 52 साल में अब तक 13 विधानसभा चुनाव हो चुके हैं। दो चुनाव में निर्दलीय ने जीत दर्ज की है। यानी जब कोई निर्दलीय उम्मीदवार मजबूती से चुनाव मैदान में आया तो जनता ने उसे स्वीकार किया।

गुरुग्राम के राजनीतिक परिदृश्य पर नजर डालें तो यहां से दो नेता ही दो या इससे अधिक बार विधायक बने हैं। बाकी का कार्यकाल एक ही योजना का रहा है। वर्ष 1967 में गुरुग्राम के पहले विधायक बने थे प्रताप सिंह ठाकरान। वे भारतीय जनसंघ के उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़े थे। उनके बाद 1968 व 1972 में कांग्रेस की टिकट पर महाबीर सिंह ने चुना जीता था। वर्ष 1977 में जनता पार्टी की टिकट पर प्रताप सिंह ठाकरान विधायक बने। इसके बाद वर्ष 1982 से शुरू हुआ पंजाबी नेता धर्मबीर गाबा का दौर। इस चुनाव में जीतने वाले धर्मबीर गाबा पंजाबियों के सिरमौर बनकर उभरे। वर्ष 1987 के चुनाव में उन्हें वैश्य समाज के नेता सीताराम सिंगला ने शिकस्त दी, जो भाजपा के टिकट पर चुनाव लड़े थे। 1987 के चुनाव के बाद पूर्व उप-प्रधानमंत्री चौधरी देवीलाल इंडियन नेशनल लोकदल (इनेलो) का भी उदय हुआ। इसके अगले दो चुनाव (1991 व 1996) में धर्मबीर गाबा लगातार चुनाव जीते।

2000 में निर्दलीय प्रत्याशी गोपीचंद गहलोत बने विधायक: वर्ष 2000 में चुनाव मैदान में कांग्रेस, भाजपा, इनेलो मुख्य पार्टियां रहीं। इस चुनाव में निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में चुनाव लड़े गोपीचंद गहलोत को गुरुग्राम की जनता ने विधायक चुना। उस समय राज्य में पहली बार इनेलो की सरकार बनी। ओमप्रकाश चौटाला मुख्यमंत्री बने। गोपीचंद गहलोत ने इनेलो सरकार को समर्थन दिया। सरकार ने उन्हें डिप्टी स्पीकर बनाया। गहलोत से ही निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में जीत की शुरुआत हुई थी। 2005 के चुनाव में फिर से कांग्रेस उम्मीदवार धर्मबीर गाबा सब पर भारी पड़े और चुनाव जीत गए।

2009 में सुखबीर कटारिया बने थे निर्दलीय विधायक: 2009 के चुनाव में भाजपा के उम्मीदवार उमेश अग्रवाल व कांग्रेस से धर्मबीर गाबा मैदान में थे। निर्दलीय के रूप में गुरुग्राम गांव के सरपंच रह चुके सुखबीर कटारिया ने चुनाव लड़ा। यहां से 41 प्रतिशत वोट लेकर वे विधायक चुने गए। दूसरे नंबर पर कांग्रेस के धर्मबीर गाबा व तीसरे पर भाजपा के उमेश अग्रवाल रहे। इस चुनाव के बाद सुखबीर कटारिया पर फर्जी वोट बनवाने के आरोपों में केस भी दर्ज हुआ। पिछले 15 साल से इस केस में सुनवाई चल रही है।

2014 के चुनाव में 84095 वोटों से जीते थे उमेश अग्रवाल: वर्ष 2014 के चुनाव में भी भारतीय जनता पार्टी ने 2009 में चुनाव हारे उमेश अग्रवाल पर ही दांव लगाते हुए उन्हें टिकट देकर उम्मीदवार बनाया। इस चुनाव में उमेश अग्रवाल का प्रदर्शन श्रेष्ठ रहा। उन्होंने 84095 से भी अधिक वोटों से जीत दर्ज की। 2019 के चुनाव में भाजपा ने उमेश अग्रवाल की टिकट काटकर उनके समधि सुधीर सिंगला को दी गई। इस चुनाव में उमेश अग्रवाल ने अपनी पत्नी अनीता लूथरा अग्रवाल को निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में मैदान में उतारने की घोषणा की। लेकिन बाद में उन्होंने कदम पीछे हटा लिए। इस चुनाव में भाजपा से सुधीर सिंगला के अलावा कांग्रेस से पूर्व विधायक सुखबीर कटारिया, कांग्रेस के पूर्व जिला अध्यक्ष मदन लाल ग्रोवर के बेटे मोहित ग्रोवर निर्दलीय, आम आदमी पार्टी से आरएस राठी, इनेलो से ब्रह्म प्रकाश जांगड़ा चुनाव मैदान में उतरे। इस चुनाव में भाजपा पूर्व मंत्री सीताराम सिंगला के पुत्र सुधीर सिंगला ने चुनाव जीता।

2024 के चुनाव में कांटे का हो सकता है मुकाबला: अब 2024 के चुनाव में गुरुग्राम विधानसभा सीट पर मुकाबला रोचक होने जा रहा है। भाजपा की टिकट नहीं मिलने पर नवीन गोयल निर्दलीय चुनाव लड़ रहे हैं। भाजपा ने मुकेश शर्मा को टिकट दी है और कांग्रेस ने पंजाबी नेता मोहित मदन लाल ग्रोवर को चुनाव मैदान में उतारा है। उधर, आम आदमी पार्टी के नेता उमेश अग्रवाल ने चुनाव लड़ने से इंकार कर दिया है। अब गुड़गांव के चुनाव मैदान में वैश्य, ब्राह्मण व पंजाबी समाज के प्रत्याशी के बीच मुकाबला होना है।

जीयू में सत्रारंभ उत्सव में विशेषज्ञों ने छात्रों को दिया सफलता का मंत्र

गुरुग्राम। नए छात्रों को गुरुग्राम विश्वविद्यालय से परिचित करवाने के उद्देश्य से जीयू के मानविकी संकाय ने विश्वविद्यालय परिसर में 4 दिवसीय ओरिएंटेशन प्रोग्राम सत्रारम्भ उत्सव का शुभारंभ किया। ओरिएंटेशन प्रोग्राम में मीडिया, हिंदी, इंग्लिश, संस्कृत, हिन्दू स्टडीज, योगा, जापानी व जर्मन लैंग्वेज कोर्स में दाखिला लेने वाले विद्यार्थियों को विवि में चल रहे पाठयक्रमों, परिसर के बुनियादी ढांचे और विश्वविद्यालय की नीतियों से परिचित कराया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे गुरुग्राम विवि के कुलपति प्रो. दिनेश कुमार ने नए छात्रों को यूनिवर्सिटी की संस्कृति और उपलब्धियों के बारे में जानकारी दी। इस अवसर पर मीडिया विभाग के चेयरपर्सन डॉ. राकेश कुमार योगी, अशोक श्रीवास्तव, पत्रकार अमित भारद्वाज व प्रसार भारती के डीडीजी दीपक जोशी ने संबोधित किया।

विपुल गोयल व राजेश नागर ने भरा नामांकन

- पूर्व मुख्यमंत्री मनोहर लाल व केंद्रीय मंत्री कृष्णपाल गुर्जर रहे मौजूद

पायनियर समाचार सेवा। फरीदाबाद

विपुल गोयल के नामांकन के दौरान मौजूद केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल, कृष्णपाल गुर्जर, विधायक नरेंद्र गुप्ता व राज कुमार बोहरा।

पूर्व मुख्यमंत्री मनोहर लाल व केंद्रीय मंत्री कृष्णपाल गुर्जर की मौजूदगी में सोमवार को फरीदाबाद विधानसभा क्षेत्र से भाजपा प्रत्याशी विपुल गोयल व तिगांव से भाजपा प्रत्याशी राजेश नागर ने नामांकन दाखिल किया। इससे पूर्व सेक्टर-16 में विशाल सभा का आयोजन भी किया गया। इस अवसर पर विधायक नरेंद्र गुप्ता, भाजपा जिलाध्यक्ष राजकुमार वोहरा, पूर्व जिलाध्यक्ष गोपाल शर्मा समेहत भजापा के अनेक कार्यकर्ता मौजूद रहे। इस मौके पर पूर्व मंत्री मनोहर लाल ने दोनों उम्मीदवारों को जीत का आशीर्वाद देते हुए कहा कि हरियाणा में एक बार फिर से भाजपा की सरकार बनना तय है।

इस मौके पर फरीदाबाद सीट से भाजपा प्रत्याशी विपुल गोयल ने कहा कि उन्हें विश्वास है कि केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल, केंद्रीय राज्य मंत्री कृष्णपाल गुर्जर के आशीर्वाद व विधायक नरेंद्र गुप्ता व भाजपा के कार्यकर्ताओं के सहयोग व फरीदाबाद विधानसभा क्षेत्र की जनता के स्नेह व सहयोग से फरीदाबाद विधानसभा सीट पर पुन: कमल खिलेगा और फरीदाबाद क्षेत्र की जनता कमल पर वोट देकर ऐतिहासिक जीत की साक्षी बनेगी। उन्होंने कहा कि हर सीट पर कमल खिलाने का काम कार्यकर्ताओं के सहयोग से किया जाएगा।

तिगांव से भाजपा उम्मीदवार राजेश नागर ने नामांकन से पहले अपने संबोधन में जनता का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि इस बार तिगांव की जनता भाजपा प्रत्याशी को भारी मतों से विजयी बनाएगी। उन्होंने पूर्व मुख्यमंत्री मनोहर लाल द्वारा उनकी कार्यशैली की सराहना किए जाने पर उनका आभार व्यक्त करते हुए कहा कि वे जनता के हक के लिए इसी तरह अपनी आवाज बुलंद करते रहेंगे। विपुल गोयल व राजेश नागर ने केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल और सांसद कृष्णपाल गुर्जर के नामांकन में शामिल होने पर आभार व्यक्त किया।

सोहना क्षेत्र में जनसभा व प्रचार सामग्री के लिए स्थान चिन्हित

- इन स्थानों के अलावा कहीं और ना लगाएं प्रचार सामग्री

पायनिय समाचार सेवा। गुरुग्राम

निर्वाचन विभाग की ओर से सोहना क्षेत्र में प्रचार सामाग्री लगाने तथा जनसभा करने के लिए स्थान तय किए गए हैं। जनसभा के लिए उम्मीदवार निर्वाचन अधिकारी कार्यालय में ऑफलाईन या सुविधा पोर्टल पर आनलाइन आवेदन कर सकते हैं।

सोहना के निर्वाचन अधिकारी एवं एसडीएम होशियार सिंह ने बताया कि सोहना के खेल स्टेडियम, नई अनाजमंडी परिसर तथा तावड़ू में नूंह रोड पर स्थित अनाजमंडी परिसर में जनसभा का आयोजन किया जा सकता है। सोहना नगरपरिषद क्षेत्र में नंगली मोड़, फव्वारा चौक, अग्रसेन चौक, लेबर चौक, बस स्टैंड, राम मंदिर चौक, गुरूद्वारा चौक, लाखुवास पानी की टंकी, सुशील नगर चौक और सिरसका चौक पर प्रचार सामग्री को लगाया जा सकता है। तावडू नगरपालिका क्षेत्र में सोहना चौक, पटौदी चौक, लखपत चौक, रेवाड़ी चौक और मौहम्मदपुर तावडू की चुंगी नंबर 5 पर होर्डिंग, बैनर, पोस्टर आदि लगाए जा सकते हैं। एसडीएम ने बताया कि तावडू खंड के गांव खरखड़ी में कुआं चौक के समीप, पढैनी, डिगरहेडी में एससी चौपाल, जफराबाद, ग्वारका में सरपंच की बैठक के समीप, चाहाल्का, कलियाका, फतेहपुर, भंगोह, गुढी, जलालपुर सोहना में आम चौपाल, गोगजाका में थडी की बैठक के समीप, बिस्सर अकबरपुर में जहारबीर मंदिर व धर्मशाला के समीप बैनर, पोस्टर लगाए जा सकते हैं।

कांग्रेस का भरोसा डगमगा रहा: मनोहर

- केंद्रीय मंत्री बोले- भाजपा सभी 90 सीटों पर लड़ रही चुनाव, जबकि कांग्रेस सहयोगी ढूंढ रही

पायनियर समाचार सेवा। फरीदाबाद

पूर्व मुख्यमंत्री एवं केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल व केंद्रीय राज्य मंत्री कृष्णपाल गुर्जर की मौजूदगी में सोमवार को फरीदाबाद विधानसभा क्षेत्र से भाजपा प्रत्याशी विपुल गोयल व तिगांव विधानसभा क्षेत्र से भाजपा प्रत्याशी राजेश नागर ने चुनाव के लिए नामांकन दाखिल किया। नामांकन के अवसर पर विधायक नरेंद्र गुप्ता, भाजपा जिलाध्यक्ष राजकुमार वोहरा, पूर्व जिलाध्यक्ष गोपाल शर्मा आदि मौजूद रहे।

नामांकन से पहले सेक्टर-16 में आयोजित नामांकन सभा में हरियाणा के पूर्व सीएम एवं केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल ने कांग्रेस पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि कांग्रेस का विश्वास डगमगा चुका है और वह लगातार तीसरी बार हरियाणा में हार का मुंह देखने जा रही हैं। भाजपा प्रदेश की सभी विधानसभाओं में चुनाव लड़ रही है, जबकि कांग्रेस ने सहयोगी ढूंढने शुरू कर दिए हैं। उन्होंने कहा कि नामांकन के दौरान जो वातवारण बन रहा है इससे निश्चित तौर पर हरियाणा में तीसरी बार भाजपा की सरकार बन रही है।

केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल ने उपस्थित लोगों को आह्वान करते हुए कहा कि विपुल गोयल और राजेश नागर को बड़े अंतराल की जीत का आशीर्वाद दे। केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल ने कांग्रेस पर गरजते हुए कहा कि 2014 से पहले कांग्रेस की सरकार में हफ्ता वसूली होती थी और चौकी-थाने तक बिकते थे। सरकारी दफ्तारी में कमिशन एजेंट घूमते थे। उन्होंने कहा कि 2014 में भाजपा की सरकार बनने के बाद हमने व्यवस्था परिवर्तन किया और राज्य में सुशासन स्थापित किया।

मनोहर लाल ने कहा कि भाजपा विचारधाराओं की पार्टी है।

वर्ल्ड जूनियर कुश्ती चैंपियनशिप में सृष्टि ने जीता कांस्य पदक

- स्पेन से ब्रान्ज मेडल जीतकर लाई है सृष्टि
- इससे पहले थाईलैंड में एशिया चैंपियनशिप में जीता था गोल्ड मेडल

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

खिलाड़ी सृष्टि का एयरपोर्ट पर स्वागत करते परिजन।

गुरुग्राम की बेटी सृष्टि ने स्पेन में आयोजित वर्ल्ड अंडर-20 जूनियर कुश्ती चैंपियनशिप में ब्रॉन्ज मेडल जीता है। सृष्टि के स्वदेश पहुंचने पर एयरपोर्ट पर परिजनों व ग्रामीणों ने भव्य स्वागत किया।

गुरुग्राम के गांव दौलताबाद की रहने वाली सृष्टि पुत्री पवन कुमार का शुरू से ही रुझान कुश्ती खेल की तरफ था। ऐसे में परिवार ने उन्हें इस खेल में निपुण बनाने के लिए आगे बढ़ाया। सृष्टि के पिता पवन कुमार के मुताबिक सृष्टि अपना पूरा फोकस खेल पर रखती है। 12वीं पास करने के बाद अब वह एमडीयू से स्नातक की पढ़ाई कर रही है। साथ ही खेल को आगे बढ़ा रहा है। सृष्टि के अंतरराष्ट्रीय कोच प्रदीप मलिक व एनआईएस संदीप सांगवान ने बताया कि स्पेन में हुई कुश्ती चैंपियनशिप में पूरी तैयारी के साथ सृष्टि कुश्ती के रिंग में उतरी। इसमें सृष्टि को ब्राम्न्ज मेडल मिला। उन्होंने बताया कि सृष्टि पिछले महीने थाईलैंड से एशिया चैंपियनशिप में गोल्ड मेडल लेकर आई थी। सृष्टि के स्वदेश पहुंचने पर परिवारजनों व ग्रामीणों ने जोरदार स्वागत किया। गांव पहुंचने पर अन्य ग्रामीणों ने भी उनका स्वागत करके आशीर्वाद दिया। उसके उज्जवल भविष्य की कामना की।

प्रसाद निलेगावकर ने प्रस्तुत किया वन मेन कॉमेडी शो

पायनियर समाचार सेवा। फरीदाबाद

महाराष्ट्र मित्र मंडल द्वारा सार्वजनिक श्री गणेश उत्सव बड़े धूमधाम से गांधी कॉलोनी स्थित समुदाय भवन में 06 सितम्बर से 15 सितम्बर तक मनाया जा रहा है।

मंडल द्वारा 08 सितम्बर को हास्य संध्या का आयोजन किया गया जिसमे प्रसाद निलेगावकर ने अपना खास असल मनसा इरसाल नामुने वन मेन कॉमेडी शो की शानदार प्रस्तुति दी। प्रसाद यह प्रस्तुति 1991 से लगभग तीन दशको से मराठी मंच पर चल रही है। इस शो में प्रसाद, वरहाद्कर, प्रो. लक्ष्मण देशपांडे के शिष्य, 10 से 85 की आयु के 48 क्लासिक, अनोखे हास्य पात्रों (पुरुष,महिला) को चित्रित करते है। प्रसाद इस वन मेन कॉमेडी शो के लेखक, निर्देशक, निर्माता और कलाकार है और यही शो उन्होंने पंडाल में प्रस्तुत किया जिससे उपस्थित भक्त जन अपनी हसी ना रोक पाये एवं सभी ने खूब तालियां बजाई। मंडल के अध्यक्ष राजेन्द्र पांचाल, चिंतामणि वेद्य, प्रवीन राठोड़, अरुण पवार, डीएम थोते, रवि गोसावी, अक्षय एवं रमा कान्त गुप्ता ने प्रसाद को स्मृति चिन्ह भेंट किया।

संक्षिप्त समाचार

लवकेश कटारिया को ब्रांड अंबेसडर का पत्र सौंपते एडीसी।

मतदाता जागरुकता के लिए लवकेश बने ब्रांड अंबेसडर

गुरुग्राम। युवा मतदाताओं को पांच अक्तूबर के दिन विधानसभा चुनाव में वोट के अधिकार का प्रयोग करने की प्रेरणा देने के लिए प्रसिद्ध यूट्यूबर व बिग बॉस के प्रतिभागी लवकेश कटारिया को स्वीप कार्यक्रम का यूथ अंबेसडर नियुक्त किया गया है। स्वीप अभियान के नोडल अधिकारी एवं एडीसी हितेश कुमार मीणा ने यूट्यूबर लवकेश कटारिया को स्वीप कार्यक्रम के लिए यूथ ब्रांड अंबेसडर का नियुक्ति पत्र प्रदान किया। उन्होंने कहा कि जिला की चारों विधानसभाओं में करीब 41 हजार नौजवानों के वोट बनाए गए हैं। स्वीप अभियान के तहत जिला में कई स्थानों पर रोजाना मतदान जागरूकता की मुहिम चलाई जा रही है। इसी मुहिम को गति प्रदान करने के लिए युवाओं के चहेते लवकेश कटारिया को स्वीप का ब्रांड अंबेसडर बनाया गया है। यूट्यूबर लवकेश कटारिया ने जिला प्रशासन का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि वे अपनी जिम्मेदारी को पूरी निष्ठा के साथ निभाएंगे। लोकतांत्रिक परंपरा में वोट का बड़ा महत्व होता है। इसलिए वे अपने सोशल मीडिया प्लेटफार्म तथा युवाओं के बीच जाकर उनसे पांच अक्टूबर को मतदान करने की अपील करेंगे।

फरीदाबाद से चार प्रत्याशियों ने भरे नामांकन: विक्रम सिंह

फरीदाबाद। जिला निर्वाचन अधिकारी विक्रम सिंह ने बताया कि भारत निर्वाचन आयोग की हिदायतों के अनुसार 86- एनआईटी फरीदाबाद विधान सभा के नामांकन के लिए निर्दलीय प्रत्याशी के तौर पर राजकुमार ने रिटर्निंग अधिकारी एवं अतिरिक्त उपायुक्त डॉ आनंद शर्मा के समक्ष, 90- तिगांव विधानसभा के नामांकन के लिए भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी के तौर पर राजेश नागर ने जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी एवं रिटर्निंग अधिकारी सतबीर मान के समक्ष और 89- फरीदाबाद विधान सभा के नामांकन के लिए भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी के तौर पर विपुल गोयल ने रिटर्निंग अधिकारी एवं उपमंडल अधिकारी शिखा अंतिल के समक्ष, 87- बड़खल विधानसभा से बुलंद भारत पार्टी से प्रेम चंद गौड़ ने रिटर्निंग अधिकारी एवं उपमंडल अधिकारी अमित मान के समक्ष नामांकन पत्र दाखिल किया है।

पलवल से चार उम्मीदवारों ने किया नामांकन : वशिष्ठ

पलवल। जिला निर्वाचन अधिकारी एवं उपायुक्त डा. हरीश कुमार वशिष्ठ ने बताया कि भारत चुनाव आयोग के निर्देशानुसार हरियाणा विधानसभा आम चुनाव-2024 के लिए जिला की तीन विधानसभा सीटों के लिए नामांकन प्रक्रिया गत 5 सितंबर से शुरू हो चुकी है, जोकि आगामी 12 सितंबर तक चलेगी। उन्होंने बताया कि 09 सितंबर को पलवल-84 विधानसभा क्षेत्र के लिए गौरव गौतम ने भारतीय जनता पार्टी तथा गोपालदत्त ने समता पार्टी की ओर से अपना नामांकन पत्र दाखिल किया है। इनके अलावा 09 सितंबर को ही भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की ओर से पलवल विधानसभा-84 के लिए करन सिंह दलाल और ज्योति दलाल ने अपना नामांकन पत्र दाखिल किया है। पलवल विधानसभा के लिए 09 सितंबर तक नामांकन की संख्या चार हो गई है। रिटर्निंग अधिकारी एवं एसडीएम ज्योति ने यह नामांकन प्राप्त किए।

स्कूलों में होगी छात्रों की आंखों की जांच

- उपायुक्त डा. हरीश कुमार वशिष्ठ ने नि:शुल्क सेवा देने के मिशन का किया शुभारंभ

पायनियर समाचार सेवा। पलवल

करीब तीन दशक से क्षेत्र के लोगों को शिक्षा और बेहतर चिकित्सा देने में सफल रही ऐबल चैरिटेबल संस्था द्वारा पांच लाख छात्रों की आंखों की जांच व चश्मा सहित ऑपरेशन की निशुल्क सेवा देने के मिशन का शुभारंभ सोमवार को जिला उपायुक्त डा. हरीश कुमार वशिष्ठ ने किया है।

इस मौके पर उनके साथ जिला शिक्षा अधिकारी अशोक कुमार बघेल, रेडक्रॉस सोसायटी के सचिव बिजेंदर सौरोत मुख्य रूप से उपस्थित रहे। जिला उपायुक्त ने इस मिशन का मुख्य आधार रहने वाली करीब चालीस लाख रुपये की लागत से तैयार एम्बुलेंस एवं ऐबल चैरिटेबल संस्था द्वारा चलाए जा रहे गुरुकुल के साथ अस्पताल में दी जाने वाली सुविधाओं का जायजा भी लिया। इस मौके पर उन्होंने डायलिसिस विभाग में जाकर इलाज करवा रहे मरीजों से भी बातचीत की।

हेल्थकेयर गुणवत्ता व रोगी सुरक्षा पर कांफ्रेंस

पायननियर समाचार सेवा। फरीदाबाद

अमृता अस्पताल ने हेल्थकेयर गुणवत्ता और रोगी सुरक्षा पर तीसरे अंतर्राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस की मेजबानी की, जिसका आयोजन नेशनल क्वालिटी ऑफ़ केयर नेटवर्क द्वारा किया गया था। सम्मेलन का उद्देश्य स्वास्थ्य सेवा की गुणवत्ता और रोगी सुरक्षा को बढ़ाने के लिए रणनीतियों पर चर्चा करने और आगे बढ़ने के लिए दुनिया भर के हेल्थकेयर नेताओं, नीति निर्माताओं और विशेषज्ञों को एक साथ लाना था।

सम्मेलन में स्वास्थ्य सचिव पुण्य सलिला श्रीवास्तव, महानिदेशक चिकित्सा सेवा (वायु) एयर मार्शल राजेश वैद्य, सशस्त्र बल चिकित्सा सेवा के महानिदेशक लेफ्टिनेंट जनरल दलजीत सिंह, एसोसिएशन ऑफ हेल्थकेयर प्रोवाइडर्स (इंडिया) के महानिदेशक डॉ. गिरधर ज्ञानी, एनएबीएच के सीईओ डॉ अतुल कोचर समेत कई प्रतिष्ठित अतिथि उपस्थित थे।

भारत सरकार के केंद्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय की सचिव पुण्य सलिला श्रीवास्तव ने कहा कि इस प्रतिष्ठित सम्मेलन में आकर मैं बहुत सम्मानित महसूस कर रही हूं, स्वास्थ्य मंत्रालय में शामिल होने के बाद यह मेरा पहला कार्यक्रम है।

कैनविन परिवार के मिलन समारोह में जुटी भारी भीड़

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

आशीर्वाद गार्डन में कैनविन सच्चा साथी परिवार मिलन समारोह में पहुंचे लोग।

कैनविन फाउंडेशन की जनसेवा से आमजन को जोड़ने के लिए मुहिम कैनविन सच्चा साथी का परिवार मिलन समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम में सिंगर एमडी व आजाद मंडोरी के गीतों पर लोग जमकर नाचे। आजाद मंडोरी द्वारा गाए गए गीत- शीतला माता संग तेरे तुझे कौन गिरा सकता है, गुरुग्राम तेरे साथ खड़ा तुझे कौन हरा सकता है...पर हर कोई झूम उठा।

समारोह में मौजूद हजारों कैनविन सच्चा साथी का डा. डी.पी. गोयल व नवीन गोयल ने मंच से अभिवादन किया। इस भव्य समारोह के लिए सच्चा साथी की संचालक डा. मोनिका सांगवान को इस बड़े आयोजन के लिए बधाई दी। इस अवसर पर नवीन गोयल ने कहा कि कैनविन सच्चा साथी परिवार की सोच है कि हम किसी के चेहरे पर खुशी लेकर आए। उन्होंने अपील करते हुए कहा कि गुड़गांव का हर व्यक्ति नवीन गोयल बनकर मैदान में आए। हर व्यक्ति 50-50 वोट दिलाने का प्रण ले। 50 वोट के लिए हर व्यक्ति के 12 से 15 घर ही हिस्से आएंगे।

नवीन गोयल ने की लोगों से नामांकन कराने के लिए आने की अपील

- जेल कॉम्पलेक्स सोहना चौक पर पहले जनसभा फिर शुरू होगा जुलूस

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

मजबूती से निर्दलीय प्रत्याशी के तौर पर गुड़गांव विधानसभा से चुनाव मैदान में उतरे नवीन गोयल ने अपना नामांकन शेड्यूज जारी किया है। नामांकन समारोह को ऐतिहासिक बनाने के लिए नवीन गोयल ने गुरुग्राम की जनता से अपील की है।

नवीन गोयल ने कहा कि मैं 11 सितम्बर को गुरुग्राम की जनता के साथ पूरे जोश, उत्साह, उल्लास, गाजे-बाजे के साथ नामांकन भरूंगा। गुरुग्राम की 36 बिरादरी के सहयोग से वे निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में चुनाव लड़ रहे हैं। इसलिए 36 बिरादरी से हजारों लोग नामांकन कार्यक्रम में शिरकत करेंगे। नामांकन भरने से पहले सोहना चौक के सामने जेल कॉम्पलेक्स में सुबह 10 बजे से जनसभा होगा। उन्होंने गुरुग्राम विधानसभा की जनता से अपील करते हुए कहा कि नामांकन समारोह में अपनी ताकत दिखाएं। यह ताकत ही भविष्य में गुरुग्राम की सेवा नीति पर मुहर लगाए। दूसरे लोग भी प्रेरित हों। उन्होंने कहा कि हम राजनीति नहीं सेवा नीति पर काम कर रहे हैं। गुरुग्राम में पिछले 11 साल से जनता की सेवा ही कर रहे हैं।

वार्ता विफल, आप ने जारी की पहली सूची

प्रदेशाध्यक्ष सुशील गुप्ता ने कहा, सभी 90 सीटों पर चुनाव लड़ेगी पार्टी, 20 प्रत्याशियों के नामों की घोषणा

पायनियर समाचार सेवा। चंडीगढ़

- सूची जारी होते ही बावल से कांग्रेस नेता जवाहर लाल आम आदमी पार्टी में शामिल
- कलायत से अनुराग ढांडा, नारायणगढ़ से गुरपाल सिंह और घरौंडा से जयपाल शर्मा को मैदान में उतारा

आम आदमी पार्टी ने विधानसभा चुनावों के लिए प्रत्याशियों की पहली सूची जारी कर दी है। सोमवार को राष्ट्रीय संगठन महामंत्री डॉ. संदीप पाठक ने 20 प्रत्याशियों की सूची जारी की। आम आदमी पार्टी ने कलायत विधानसभा से वरिष्ठ प्रदेश उपाध्यक्ष अनुराग ढांडा, नारायणगढ़ से गुरपाल सिंह, पूंडरी से पूर्व मंत्री नरेंद्र शर्मा, घरौंडा से जयपाल शर्मा, असंध से अमनदीप जुंडला, समालखा से बिट्टू पहलवान, उचाना कलां से पवन फौजी, डबवाली से कुलदीप गदराना, रानिया से हैप्पी रानिया, भिवानी से इंदु शर्मा, महम से विकास नेहरा, रोहतक से बिजेंद्र हुड्डा, बहादुरगढ़ से कुलदीप छिक्कारा, बादली से रणबीर गुलिया, बेरी से सोनू अहलावत शेरिया, महेंद्रगढ़ से डॉ. मनीष यादव, नारनौल से रविंद्र मटरू, बादशाहपुर से वीर सिंह सरपंच, सोहना से धर्मेंद्र खटाना और बल्लभगढ़ से रविंद्र फौजदार को चुनावी मैदान में उतारा है।

आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ प्रदेश उपाध्यक्ष अनुराग ढांडा पत्रकारिता से जुड़े रहे हैं, नरेंद्र शर्मा हरियाणा के पूर्व सिंचाई मंत्री रहे हैं, डॉ. मनीष यादव स्वास्थ्य सेवाओं से जुड़े रहे हैं और रविंद्र सिंह मटरू समाजसेवी हैं। वहीं हैप्पी रानिया किसानों से जुड़े रहे हैं और जयपाल शर्मा लंबे समय से राजनीति से जुड़े रहे हैं और 2005 में निर्दलीय व 2009 में बीजेपी से चुनाव लड़ चुके हैं। इसके साथ ही आम आदमी पार्टी की पहली सूची जारी होते ही बावल से कांग्रेस नेता जवाहर लाल आम आदमी पार्टी में शामिल हुए। उन्हें आम आदमी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष डॉ. सुशील गुप्ता ने पार्टी का पटका पहनाकर आम आदमी पार्टी में शामिल करवाया। जवाहर लाल बीजेपी की टिकट पर चुनाव लड़ चुके हैं।

आम आदमी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष डॉ. सुशील गुप्ता ने बताया कहा कि बीजेपी को जड़ से उखाड़ने के लिए आम आदमी पार्टी ने 20 उम्मीदवारों की घोषणा कर दी है। जल्द ही अगली सूची जारी कर दी जाएगी। चुनाव में समय कम बचा है और हमने अपनी लिस्ट को जारी कर दिया है। हम अपने राष्ट्रीय नेतृत्व के आदेश पर काम करते हैं। हमारा मजबूत संगठन चाहता था कि हम मजबूती से चुनाव लड़ें। आम आदमी पार्टी हरियाणा में एक मजबूत विकल्प है और यही मजबूत विकल्प हरियाणा में रंग लाएगा।

गुप्ता ने कहा कि बीजेपी सरकार ने हरियाणा को नशे की मंडी बना दिया। हरियाणा का युवक दर-दर ठोकरें खा रहा है। अब हरियाणा के विकास के लिए आम आदमी पार्टी तैयार है। आम आदमी पार्टी का संगठन हरियाणा में सबसे मजबूत है। आम आदमी पार्टी सभी 90 सीटों पर मजबूती से चुनाव लड़ेगी। हम आम आदमी पार्टी के द्वारा दिल्ली और पंजाब में किए गए कामों को लेकर जनता के बीच जाएंगे और इस बार बदलाव के लिए वोट करने की अपील करेंगे। उन्होंने कहा कि नामांकन के लिए तीन दिन बचे हैं। एक-एक सीट पर आम आदमी पार्टी के कई कई उम्मीदवार हैं। अब जल्द ही उम्मीदवारों की दूसरी लिस्ट भी जारी की जाएगी। हरियाणा में आम आदमी पार्टी एक मजबूत विकल्प देगी। आम आदमी पार्टी व्यवस्था बदलने के लिए लड़ाई लड़ रही है। हरियाणा के लिए परिणाम सकारात्मक होंगे।

जेजेपी-आसपा गठबंधन ने किया 12 प्रत्याशियों का ऐलान

चंडीगढ़। जननायक जनता पार्टी व आजाद समाज पार्टी ने हरियाणा में 12 सीटों पर प्रत्याशियों का ऐलान कर दिया है। इससे पहले यह गठबंधन 19 सीटों पर प्रत्याशियों को उतार चुका है। सूची के अनुसार दस सीटों पर जननायक जनता पार्टी तथा दो सीटों पर आजाद समाज पार्टी ने अपने प्रत्याशी उतारे हैं। पंचकूला से सुशील गर्ग, अंबाला छावनी से अवतार करधन, पिहोवा से डॉ.सुखविंदर कौर, कैथल से संदीप गढ़ी, गन्नौर से अनिल त्यागी, सफीदों से सुशील बैरागी, गढ़ी-सांपला-किलोई से एडवोकेट पंडित सुशीला देशवाल, पटौदी से अमरनाथ जेई, गुरुग्राम से अशोक जांगड़ा तथा फिरोजपुर झिरका से जॉन मोहम्मद जननायक जनता पार्टी की टिकट पर चुनाव लड़ेंगे। इसके अलावा अंबाला शहर से पारुल नागपाल तथा नीलोखेड़ी से कर्ण सिंह भुक्कल आजाद समाज पार्टी के प्रत्याशी होंगे।

हरियाणा कांग्रेस प्रभारी दीपक बाबरिया की तबीयत बिगड़ी

- दो दिन कार्यकर्ताओं से नहीं मिलेंगे, बैठकों में भी नहीं होंगे शामिल

पायनियर समाचार सेवा। चंडीगढ़

हरियाणा कांग्रेस प्रभारी दीपक बाबरिया की तबियत बिगड़ने के कारण उन्हें दिल्ली स्थित एम्स अस्पताल में भर्ती कराया गया। कई घंटे की जांच के बाद डाक्टरों ने उन्हें छुट्टी तो दे दी है लेकिन अगले दो से तीन दिन तक पूरी तरह आराम करने की सलाह दी है।

कांग्रेस नेता दीपक बाबरिया पिछले दिनों से लगातार कांग्रेस की बैठकों में शामिल हो रहे हैं। कांग्रेस व आम आदमी पार्टी के बीच गठबंधन को लेकर बनी संयुक्त कमेटी में भी दीपक बाबरिया शामिल थे। सोमवार को गठबंधन को लेकर दोनों दलों की तरफ से अंतिम निर्णय लेते हुए औपचारिक ऐलान किया जाना था।

इस बीच सोमवार अल सुबह बीपी बढ़ने के कारण दीपक बाबरिया की तबियत बिगड़ गई। जिसके बाद उन्हें एम्स में ले जाया गया। जहां कई घंटे तक डाक्टरों ने उन्हें अपनी निगरानी में रखा और उनका इलाज किया।

सोमवार की दोपहर बाबरिया को छुट्टी देकर घर तो भेज दिया गया लेकिन डाक्टरों ने उन्हें दो से तीन दिन किसी प्रकार की बैठकों में हिस्सा लेने, कार्यकर्ताओं की भीड़ में जाने आदि से मना किया है। जिसके चलते दीपक बाबरिया अब अपने आवास पर ही आराम कर रहे हैं। दीपक बाबरिया की तबियत बिगड़ने के कारण आज आप व कांग्रेस की गठबंधन को लेकर बैठक नहीं हो पाई और मामला खटाई में चला गया।

सफाई कर्मचारी की नौकरी पाने को 40 हजार स्नातकोत्तर व 6 हजार स्नातक दौड़ में

- राज्य में बेरोजगारी को लेकर एनसीआर चैंबर ऑफ कॉमर्स के अध्यक्ष ने जताई चिंता

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

हरियाणा कौशल रोजगार निगम द्वारा सरकारी कार्यालयों की सफाई के लिए नगर निगमों के अंतर्गत सफाई कर्मचारियों की भर्ती के लिए आवेदन मांगे गए। जिसमें 15000 रुपये प्रतिमाह के वेतन के लिए 6000 स्नातक तथा 40000 स्नातकोत्तर अभ्यर्थियों ने आवेदन किया है। यह भर्ती संविदा के आधार पर की जा रही है। यह हमारे देश के लिए बहुत ही चिंता का विषय है।

यह जानकारी देते हुए एनसीआर चैंबर ऑफ कॉमर्स के अध्यक्ष एचपी यादव ने कहा कि सफाई कर्मचारियों की भर्ती के लिए इतनी बड़ी संख्या में शिक्षित युवाओं का आवेदन करना यह दिखाता है कि देश में बेरोजगार

एचपी यादव।

कितनी बढ़ गई है। एचपी यादव ने बताया कि वर्तमान में युवाओं का तकनीकी क्षेत्रों में रुझान कम हो रहा है। जिसका प्रत्यक्ष उदाहरण हरियाणा की आईटीआई में लगभग 40 प्रतिशत सीटें खाली हैं। युवाओं की रुचि तकनीकी शिक्षा की तरफ कम होती जा रही है। पहले औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों में दाखिला बहुत मुश्किल से होता था।

अब रुझान कम होना गहन चिंता का विषय है। उनके विचार से यदि स्नातक तथा स्नातकोत्तर युवा सफाई कर्मचारियों का काम करेंगे तो अनपढ़ पांचवीं तथा आठवीं पास युवा क्या करेंगे। एचपी यादव ने कहा कि यह भर्ती इन लोगों के लिए आरक्षित होनी चाहिए। हम सभी को पता है कि भारत की साक्षरता दर 85 प्रतिशत के अनुपात में हरियाणा की साक्षरता दर केवल 70 प्रतिशत है।

कांग्रेस प्रत्याशी सुभाष आज भरेंगे नामांकन

चंडीगढ़। सफीदों विधानसभा सीट से कांग्रेस प्रत्याशी व निवर्तमान विधायक सुभाष गांगोली मंगलवार को अपना नामांकन दाखिल करेंगे। इस मौके पर उनके साथ सोनीपत लोकसभा सीट से सांसद सतपाल ब्रह्मचारी मौजूद रहेंगे। यह जानकारी प्रत्याशी सुभाष गांगोली ने दी। गांगोली ने बताया कि वे कांग्रेस पार्टी के दोबारा से उन पर विश्वास जताते हुए उन्हें टिकट दी है।

मंगलवार को वे अपने हलके की 36 बिरादरी की जनता के साथ अपना नामांकन दाखिल करेंगे। उन्होंने बताया कि इस मौके पर सांसद सतपाल ब्रह्मचारी समेत पार्टी के कई नेता उनका नामांकन दाखिल करवाने पहुंचेंगे। उन्होंने दावा किया कि वे पहले से भी ज्यादा वोटों से जीत दर्ज करेंगे और प्रदेश में कांग्रेस पार्टी की सरकार बनेगी। प्रदेश की जनता बीजेपी से दुखी है और उन्हें सत्ता से बाहर का रास्ता दिखाने के लिए तैयार बैठी है।

पंजाब में बढ़ा बस किराया तो हरियाणा में भी महंगा हुआ सफर

- चंडीगढ़-दिल्ली रूट हुआ सबसे महंगा
- अंतरराज्यीय बस किराया फैसलों का हरियाणा वासियों पर असर

पायनियर समाचार सेवा। चंडीगढ़

रूट	पुरानी किराया दर	नई किराया दर
चंडीगढ़ से दिल्ली	305 रुपये	315 रुपये
चंडीगढ़ से पिपली	125 रुपये	135 रुपये
चंडीगढ़ से अंबाला	75 रुपये	85 रुपये
चंडीगढ़ से शाहाबाद	100 रुपये	110 रुपये
अंबाला से लुधियाना	160 रुपये	185 रुपये
अंबाला से जालंधर	240 रुपये	280 रुपये
अंबाला से अमृतसर	340 रुपये	400 रुपये
अंबाला से जीरकपुर	50 रुपये	60 रुपये

पंजाब के रूटों से होकर निकलने वाली हरियाणा रोडवेज की बसों में अब सफर महंगा होगा। पंजाब सरकार द्वारा रविवार को बसों के किराये में बढ़ोतरी करने के बाद हरियाणा रोडवेज ने भी सोमवार से बस किराया बढ़ा दिया है। अब चंडीगढ़ से लेकर दिल्ली तक के किराये में 10 रुपये की बढ़ोतरी की गई है। बढ़ा हुआ किराया पंजाब रूटों पर ही लागू होगा।

हरियाणा की सीमा बस के प्रवेश करते ही सामान्य 1.22 रुपये किलोमीटर के हिसाब से ही किराया देना होगा। हरियाणा रोडवेज की बसों में चार साल पहले किराये में बढ़ोतरी की गई थी। सामान्य बस में किराये 1.22 रुपये, सामान्य एचवीएसी बस में 1.46 पैसे और लग्जरी वोल्वो बस में 2.44 पैसे प्रति किलोमीटर निर्धारित किया गया है। इसके साथ ही न्यूनतम 5 व 10 रुपये तय किया गया है।

रविवार को पंजाब सरकार ने रोडवेज बसों के किराये में 23 पैसे लेकर 46 पैसे की बढ़ोतरी की है। पहले पंजाब रोडवेज बस का किराया 1.22 रुपये प्रति किलोमीटर था, जोकि अब बढ़कर 1.45 रुपये प्रति किलोमीटर हो गया है। पंजाब रोडवेज का किराया बढ़ने के बाद हरियाणा रोडवेज ने भी पंजाब रूट पर जाने वाली सभी बसों के किराये में बढ़ोतरी की है।

बढ़े हुए किराये की सबसे ज्यादा मार चंडीगढ़ से दिल्ली रूट पर पड़ी है। पहले चंडीगढ़ से दिल्ली का किराया 305 रुपये था,जोकि अब बढ़कर 315 रुपये हो गया है। इसके साथ ही पिपली से चंडीगढ़ का किराया 125 रुपये से बढ़कर 135 रुपये और शाहबाद से 100 से बढ़कर 110 रुपये हो गया है।

हरियाणा रोडवेज वर्कर्स यूनियन के मीडिया सचिव रणजीत करोड़ा ने बताया कि हरियाणा रोडवेज की बसों का किराया अंतराज्यीय रूटों पर संबंधित प्रदेशों द्वारा तय की गई किराया दरों के हिसाब से ही लिया जाता है। दिल्ली आईएसबीटी से सिंघुबार्डर तक किराया 20 रुपये है और चंडीगढ़ परिसीमन किराया 20 से 25 रुपये है जबकि पंजाब में किराया निर्धारित दरों के हिसाब से ही लिया जाता है।

करण दलाल ने टिकट मिलने से पहले ही किया नामांकन

- खुद को बताया कांग्रेस का संभावित उम्मीदवार, नोमिनेशन के बाद किया शक्ति प्रदर्शन

पायनियर समाचार सेवा। पलवल

विधानसभा चुनाव को लेकर सोमवार को पलवल में चार नामांकन दाखिल हुए हैं। जिला निर्वाचन अधिकारी एवं उपायुक्त डा. हरीश कुमार वशिष्ठ ने बताया कि सोमवार को पलवल के लिए गौरव गौतम ने भाजपा तथा गोपालदत्त ने समता पार्टी की ओर से अपना नामांकन पत्र दाखिल किया है। जबकि कांग्रेस की ओर से करण सिंह दलाल और ज्योति दलाल ने अपना नामांकन पत्र दाखिल किया है।

सोमवार को टिकट मिले बिना ही करण सिंह दलाल ने नामांकन कर दिया। उन्होंने अपने आप को कांग्रेस का संभावित उम्मीदवार बताया। अभी तक कांग्रेस की ओर से तीन विधानसभा में से एक टिकट फाइनल की है वह होडल विधानसभा से है जहां प्रदेश अध्यक्ष उदयभान को प्रत्याशी बनाया है। नामांकन से पूर्व करण सिंह दलाल ने अपना शक्ति प्रदर्शन किया और कांग्रेस के संभावित उम्मीदवार के तौर पर

रिटर्निंग अधिकारी समक्ष नामांकन करते कांग्रेस के पूर्व विधायक करन सिंह दलाल।

नामांकन कर दिया। वह अपने समर्थकों के साथ हुड्डा चौक से मुख्य बाजार होते हुए लघु सचिवालय पहुंचे। जहां उनके पीछे-पीछे उनके समर्थकों का लंबा काफिला ट्रैक्टरों, गाड़ियों के अलावा पैदल चलता रहा। इस भारी भीड़ के कारण कई किलोमीटर लंबा जाम लग गया। यातायात पूरी तरह से प्रभावित हो गया। नामांकन करते वक्त रिटर्निंग अधिकारी ने करण दलाल से 12 सितंबर तक अपना निशाना जमा करने को कहा अगर 12 सितंबर तक अपना निशाना जमा नहीं करते हैं तो उनका नामांकन रद्द कर दिया जाएगा। इस दौरान उनके साथ शहरी और ग्रामीण इलाके से भारी भीड़ मौजूद रही। नामांकन से पहले करण सिंह दलाल ने अपना शक्ति प्रदर्शन दिखाया भारी भीड़ होने के कारण राष्ट्रीय राजमार्ग 19 और मुख्य बाजार में पूरी तरह से जाम लग गया। जाम में स्कूल बसों के अलावा एंबुलेंस व पुलिस की गाड़ियां भी फस गई जाम करीब दो से तीन घंटे तक लगा रहा पुलिस की काफी मशक्कत के बाद रोड को जाम से मुक्त किया गया। टिकट से पहले ही नामांकन करने के बारे में जब करण सिंह दलाल से बात की गई तो उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी से पलवल विधानसभा के वही एक उम्मीदवार हैं।

पुलिस ने चलाया ऑपरेशन आक्रमण

चंडीगढ़। हरियाणा पुलिस ने प्रदेशभर में ऑपरेशन आक्रमण-14 चलाकर भारी संख्या में आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस महानिदेशक शत्रुजीत कपूर ने बताया कि प्रदेशभर में 6584 पुलिस कर्मियों की 1431 टीमों द्वारा एक साथ रेड की गई। रेड के दौरान जुआ अधिनियम, एनडीपीएस, एक्साइज, आर्म्स एक्ट सहित अन्य आपराधिक मुकदमों की संबंधित धाराओं के तहत 454 मुकदमें दर्ज करके 979 आरोपियों को गिरफ्तार किया गया। पुलिस द्वारा अवैध हथियारों, नशीले पदार्थों और अवैध शराब की तस्करी सहित राज्य में आपराधिक गतिविधियों पर जानकारी एकत्र की गई। पुलिस अधीक्षकों व पुलिस उपायुक्तों के नेतृत्व में 6584 पुलिस जवानों की 1431 टीमों ने अपराध और अपराधियों पर 8 सितंबर सुबह से ही रेड शुरू कर दी।

कांग्रेस की तीसरी सूची में भी परिवारवाद

- प्रत्याशियों में वर्धन सबसे युवा तो परमवीर सबसे वृद्ध
- तीन हारे हुए नेताओं को फिर से मिले टिकट

पायनियर समाचार सेवा। चंडीगढ़

हरियाणा में कांग्रेस पार्टी की तरफ से रविवार की रात जारी की गई नौ प्रत्याशियों की तीसरी सूची में भी परिवारवाद हावी है। कांग्रेस अब तक कुल 41 प्रत्याशियों को चुनाव मैदान में उतार चुकी है। इनमें 2019 का चुनाव हारने के बावजूद 3 चेहरों अशोक अरोड़ा, कुलदीप शर्मा और परमवीर सिंह पर अनुभव के तौर पर दांव खेला। वहीं वर्धन यादव, मोहित ग्रोवर, बलराम दांगी और अनिरुद्ध चौधरी युवा चेहरे हैं। हाईकमान ने प्रदेश के पूर्व दिग्गज नेताओं की विरासत को भी पार्टी से जोड़े रखने का ध्यान रखा। इसी वजह से पूर्व मुख्यमंत्री बंसीलाल के पोते और सर छोटूराम के पूर्व मंत्री नाती बीरेंद्र सिंह के बेटे बृजेंद्र को भी टिकट दी है।

9 सीटों में कांग्रेस ने किसी रिजर्व सीट के बारे में घोषणा नहीं की। सामान्य वर्ग की सीटों पर कोई एससी चेहरा नहीं उतारा। इस लिस्ट में सबसे ज्यादा 4 जाट चेहरे हैं। जाटों के दबदबे वाली 4 सीटों उचाना कलां, तोशाम, टोहाना और महम में जाट बिरादरी के ही उम्मीदवार उतारे गए हैं। गुरुग्राम में पंजाबी-ब्राह्मण बिरादरी के वोट सबसे ज्यादा हैं। चूंकि भाजपा ब्राह्मण बिरादरी से मुकेश शर्मा को टिकट दे चुकी थी इसलिए कांग्रेस ने यहां पंजाबी कैंडिडेट उतारा है। पंजाबी वोटरों के दबदबे वाली थानेसर सीट से अशोक अरोड़ा को फिर से मौका दिया है। अशोक अरोड़ा थानेसर सीट से 3 बार विधायक रह चुके हैं। किरण चौधरी के भाजपा में जाने से खाली हुई तोशाम की सीट से कांग्रेस ने अनिरुद्ध चौधरी को प्रत्याशी बनाया है। अनिरुद्ध चौधरी रणबीर महेंद्रा के बेटे हैं। भाजपा ने यहां से श्रुति चौधरी को प्रत्याशी बनाया है। कांग्रेस ने महम से बलराम दांगी को मैदान में उतारा है। बलराम दांगी पूर्व विधायक आनंद सिंह दांगी के बेटे हैं।

गुरुग्राम से मोहित ग्रोवर को प्रत्याशी बनाया गया है। मोहित ग्रोवर पूर्व कांग्रेस नेता मदन ग्रोवर के पुत्र हैं। कांग्रेस की इस सूची में बादशाहपुर से प्रत्याशी वर्धन यादव सबसे कम उम्र 35 वर्ष के हैं। उनके बाद गुरुग्राम के प्रत्याशी मोहित ग्रोवर हैं जिनकी आयु 36 वर्ष है। कांग्रेस की इस सूची में परमवीर सिंह की उम्र 69 साल है और वह सबसे वृद्ध हैं।

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में पंजाबी विभाग के अध्यक्ष का कार्यभार ग्रहण करने के दौरान डॉ. परमजीत कौर सिद्धू।

परमजीत कौर बनी कुवि के पंजाबी विभाग की प्रथम महिला विभागाध्यक्ष

कुरुक्षेत्र। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर सोमनाथ सचदेवा के आदेशानुसार सोमवार को पंजाबी विभाग की सहायक प्रोफेसर डॉ. परमजीत कौर सिद्धू ने पंजाबी विभाग के अध्यक्ष का कार्यभार ग्रहण किया। गौरतलब है कि डॉक्टर परमजीत कौर सिद्धू पंजाबी विभाग कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की प्रथम महिला विभागाध्यक्ष है। डॉ. सिद्धू ने कुलपति प्रो. सोमनाथ सचदेवा का आभार प्रकट करते हुए कहा कि वह इस महत्वपूर्ण जिम्मेवारी का निर्वहन पूरी लगन व निष्ठा के साथ करेंगी।

इस विशेष मौके पर मौजूद सभी फैकल्टी एवं शिक्षकों ने डॉक्टर सिद्धू को विभाग की प्रथम महिला अध्यक्ष बनने पर बधाई और शुभकामनायें प्रेषित की। लोक सम्पर्क विभाग के निदेशक प्रो. महासिंह पूनिया ने बताया कि डॉक्टर सिद्धू एकादमिक कौंसिल तथा फैकल्टी ऑफ आर्ट्स एंड लैंग्वेजिज की सदस्य भी होंगी।

इस मौके पर डीन कला एवं भाषा संकाय प्रो. पुष्पा रानी, अंग्रेजी विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. ब्रजेश साहनी, लाइब्रेरी साइंस विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. मनोज कुमार जोशी, फाइन आर्ट्स विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. गुरचरण सिंह, डॉ. बैशाली जैन, डॉ. कुलदीप सिंह और विभाग के अन्य प्राध्यापक मौजूद थे।

भाजपा-इनेलो प्रत्याशियों ने भरे नामांकन पत्र

पायनियर समाचार सेवा। चंडीगढ़

भाजपा के नेताओं असीम गोयल और विपुल गोयल ने पांच अक्टूबर को होने वाले हरियाणा विधानसभा चुनाव के लिए सोमवार को अपने नामांकन पत्र दाखिल किए। इनके अलावा, पूर्व उप प्रधानमंत्री देवीलाल के पोते एवं इंडियन नेशनल लोकदल (इनेलो) के उम्मीदवार आदित्य देवी लाल ने भी नामांकन पत्र दाखिल किए।

मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के नेतृत्व वाली सरकार में मंत्री असीम ने अंबाला शहर विधानसभा क्षेत्र से अपना नामांकन दाखिल किया। उनके साथ मुख्यमंत्री सैनी और पार्टी के अन्य नेता भी थे। हरियाणा की 90 सदस्यीय विधानसभा के लिए पांच अक्टूबर को मतदान होगा और मतों की गिनती आठ अक्टूबर को होगी। पूर्व मंत्री विपुल गोयल ने फरीदाबाद विधानसभा सीट से नामांकन पत्र दाखिल किया। उनके साथ केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल खट्टर और कृष्ण पाल गुर्जर भी थे।

विपुल गोयल ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर एक पोस्ट में कहा, आज फरीदाबाद विधानसभा क्षेत्र की जनता के आशीर्वाद से भाजपा प्रत्याशी के रूप में अपना नामांकन दाखिल किया। उन्होंने एक जनसभा को संबोधित करते हुए विश्वास जताया कि फरीदाबाद निर्वाचन क्षेत्र में कमल (भाजपा का चुनाव चिह्न) खिलेगा। उन्होंने कहा कि सभा में भारी संख्या में लोगों की उपस्थिति ने दिखा दिया है कि वे कांग्रेस के के झांसे में नहीं आने वाले हैं। उन्होंने कहा, फरीदाबाद के लोगों को भाजपा पर भरोसा है। आदित्य देवीलाल ने डबवाली सीट से अपना नामांकन पत्र दाखिल किया। वह रविवार को भाजपा छोड़कर इनेलो में शामिल हुए थे और उन्हें डबवाली से चुनाव मैदान में उतारा गया। आदित्य, देवीलाल के सबसे छोटे बेटे जगदीश चौटाला के पुत्र हैं।

आदित्य का मुकाबला जननायक जनता पार्टी (जजपा) के उम्मीदवार दिग्विजय सिंह चौटाला और पूर्व उप मुख्यमंत्री दुष्यंत चौटाला के भाई से है।

सफीदों से हर बार हार का सामना करना पड़ा है बाहरी को

- देवीलाल की आंधी में भी हार गया था लोकदल का प्रत्याशी
- सुषमा स्वराज की बहन वंदना शर्मा भी नही दर्ज कर पाई थीं जीत

पायनियर समाचार सेवा। चंडीगढ़

जींद जिले की सफीदों विधानसभा सीट की बात की जाए तो सफीदों ने कभी बाहरी व्यक्ति हार का नहीं अपनाया और उसको हमेशा हार का मुंह देखना पड़ा है। अब तक 13 विधानसभा चुनाव में यहां से तीन बार निर्दलीय प्रत्याशी विधायक बने हैं। यहां से पांच बार कांग्रेस के विधायक बने हैं। वर्तमान में भी सुभाष गांगोली कांग्रेस के विधायक हैं। कांग्रेस ने विधायक सुभाष गांगोली पर ही विश्वास जताते हुए दोबारा से टिकट दी है। 2019 में कांग्रेस के सुभाष गांगोली ने बीजेपी के बचन सिंह आर्य को 3658 वोटों से मात दी थी।

बीजेपी ने इस बार नारनौंद से विधायक राजकुमार गौतम को अपना प्रत्याशी बनाया है। उनकी टिकट के साथ ही बीजेपी नेता बचन सिंह आर्य, जसबीर देशवाल सहित अन्य नेताओं ने बगावत कर निर्दलीय चुनाव लड़ने का ऐलान कर रखा है। इस बार भी सुभाष गांगोली सेफ जोन में नजर आ रहे है।

सफीदों से अब तक चुने गए विधायक			
1967	श्रीकृष्ण	1996	रामफल कुंडू
1968	सत्यनारायण	2000	रामफल कुंडू
1972	धज्जा राम	2005	बच्चन सिंह आर्य
1977	रामकिशन	2009	कलीराम पटवारी
1982	कुंदनलाल	2014	जसबीर देशवाल
1987	सरदूल सिंह	2019	सुभाष गांगोली
1991	बच्चन सिंह आर्य		

बाहरी व्यक्ति को नहीं चाहते लोग: सफीदों की जनता कभी भी बाहरी व्यक्ति पर भरोसा नहीं करती है। 1987 में जब चौधरी देवीलाल और उनकी लोकदल पार्टी की आंधी थी, तब चौधरी देवीलाल ने सफीदों से रामचंद्र जांगड़ा को अपनी पार्टी का प्रत्याशी बनाया था। रामचंद्र जांगड़ा सफीदों के लिए ही नहीं, बल्कि जींद जिले के लिए भी बाहरी थे। उस समय चौधरी देवीलाल को लगता था कि वह जिसे भी जहां से अपनी पार्टी की टिकट दे देंगे, उसका विधानसभा में पहुंचना निश्चित है। उन्होंने सफीदों के लोगों की भावनाओं को दरकिनार करते हुए रामचंद्र जांगड़ा को सफीदों से चुनावी दंगल में उतार दिया था। सफीदों के लोगों ने रामचंद्र जांगड़ा का विरोध कर निर्दलीय प्रत्याशी सरदार सरदूल सिंह को चुनावी मैदान में उतार दिया। उस समय रामचंद्र जांगड़ा की जमानत जब्त हुई थी। इसी प्रकार फिलहाल बीजेपी प्रत्याशी रामकुमार गौतम ने 1991 में भी जनकल्याण मोर्चा की तरफ से सफीदों विधानसभा क्षेत्र में चुनाव लड़ा था। उस समय भी बाहरी का नारा लगा और उनको केवल 1570 वोट मिले थे। 2005 में कांग्रेस की लहर के बावजूद कांग्रेस प्रत्याशी कर्मवीर सैनी चुनाव हार गए थे। उनको 26077 वोट मिले थे। उनके खिलाफ भी बाहरी का नारा लगा था। कांग्रेस की बजाय 2005 में निर्दलीय बच्चन सिंह आर्य जीते थे। पूर्व केंद्रीय मंत्री दिवंगत सुषमा स्वराज की बहन डॉ. वंदना शर्मा भी वर्ष 2014 में बीजेपी की टिकट पर सफीदों से चुनाव लड़ चुकी है मगर वो भी चुनाव जीत नहीं पाई। उस समय सुषमा स्वराज एवं केंद्रीय गृहमंत्री राजनाथ सिंह ने उनके लिए प्रचार किया था। राजनाथ सिंह ने राजपूत बाहुल्य मुवाना गांव में आयोजित चुनावी सभा में लोगों से वंदना के लिए वोट की अपील की थी जबकि सुषमा स्वराज यहां कई दिन ठहरी थीं।

इसके अलावा 2009 के विधानसभा चुनाव में कुलदीप बिश्नोई ने अपनी पार्टी हरियाणा जनहित कांग्रेस से सोनीपत जिले के जय भगवान शर्मा को सफीदों से प्रत्याशी बनाकर मैदान में उतारा था। जयभगवान शर्मा युवा हजकां के प्रदेश अध्यक्ष थे। कुलदीप बिश्नोई को लगता था कि जय भगवान शर्मा सफीदों में ब्राह्मण मतदाताओं की बड़ी संख्या के आधार पर शानदार प्रदर्शन करेंगे, लेकिन जय भगवान शर्मा 3000 वोट भी नहीं ले पाए थे, और उनकी जमानत जब्त हो गई थी।

पायनियर
नई दिल्ली, मंगलवार, 10 सितंबर, 2024

कारगिल युद्ध

पाकिस्तानी संलिप्तता

कारगिल युद्ध में 25 साल तक अपनी संलिप्तता से इनकार करने वाले पाकिस्तान ने अंततः इसे स्वीकार किया है। पाकिस्तान ने पहली बार आधिकारिक रूप से 1999 के कारगिल युद्ध में अपनी सेना की भूमिका स्वीकारी है। रक्षा दिवस के अवसर पर पाकिस्तानी सेना प्रमुख जनरल असीम मुनीर ने कहा कि अनेक पाक सैनिक भारत के खिलाफ 1999 में लड़े कारगिल युद्ध में शहीद हुए। पहली बार पाकिस्तान ने इस युद्ध में अपनी सक्रिय भूमिका स्वीकारी है जो उसके भ्रामक दृष्टिकोण में आश्चर्यजनक परिवर्तन है। पहले पाकिस्तान यह कहता रहा है कि 'कारगिल आपरेशन' मुजाहिदीनों या 'स्वतंत्रता सेनानियों' तथा स्थानीय विद्रोहियों ने किया था। इस प्रकार उसने युद्ध से अपनी सैनिक अवस्थापना को दूर रखा था। लेकिन नई स्वीकारोक्ति से न केवल उसके देश के भीतर आंतरिक विमर्श बदल सकता है, बल्कि इससे भारत तथा व्यापक अंतरराष्ट्रीय समुदाय से उसके संबंध भी प्रभावित हो सकते हैं। वास्तव में भारत और सारी दुनिया पहले से ही यह जानती थी और उसे कारगिल युद्ध में जनरल मुशर्रफ के नेतृत्व में पाकिस्तानी सेना की भूमिका के बारे में जरा भी संदेह नहीं था। पाकिस्तान के तत्कालीन सेना प्रमुख जनरल परवेज़ मुशर्रफ ने इसकी योजना बनाई थी और इसकी जानकारी देश के तत्कालीन प्रधानमंत्री नवाज़ शरीफ़ को भी नहीं दी थी। मई से जुलाई, 1999 तक कारगिल युद्ध भारत और पाकिस्तान के बीच लड़ा गया था। इसकी शुरुआत पाकिस्तानी सैनिकों और उग्रवादियों द्वारा जम्मू कश्मीर के कारगिल जिले में नियंत्रण रेखा–एलओसी पार कर भारतीय क्षेत्र में घुसपैठ से हुई थी। उनका लक्ष्य महत्वपूर्ण पहाड़ियों पर कब्जा कर भारत की उत्तरी सैनिक चौकियों तक सप्लाई रोकना था जिसमें सियाचिन ग्लेशियर भी शामिल है। भारत शुरुआत में आश्चर्यचकित हुआ, पर बाद में उसने अपने क्षेत्र पर पुनः कब्जा करने के लिए पूरी मजबूती से सैनिक कार्रवाई की। भारतीय सैनिकों ने प्रतिबद्ध ढंग से जवाबी हमला किया जिससे अंततः पाकिस्तानी सैनिकों को पीछे हटना पड़ा। पकड़े गए पाकिस्तानी सैनिकों समेत अनेक स्वतंत्र स्रोतों और खुफिया रिपोर्टों ने संकेत दिए थे कि पाकिस्तानी सेना की नियमित यूनिटें इसमें पूरी तरह भाग ले रही हैं। लेकिन बड़ा सवाल यह है कि पाकिस्तान ने इसे अब क्यों स्वीकार किया है? संभवतः यह परिवर्तन आंतरिक और बाहरी कारणों से है जिसमें विकसित होती राजनीतिक गतिशीलता, सैनिक अवस्थापना के भीतर बढ़ती पारदर्शिता तथा बदलता भू–राजनीतिक यथार्थ शामिल हैं। अपनी भूमिका स्वीकार कर पाकिस्तान संभवतः पूरा विमर्श पुनः लिखते हुए अपने सैनिक इतिहास के असहज करने वाले तथ्यों से साक्षात्कार करना चाहता है। इस स्वीकारोक्ति के पाकिस्तान, भारत और पूरे क्षेत्र के लिए महत्वपूर्ण परिणाम होंगे। इस आधिकारिक स्वीकृति से आंतरिक निर्णय लेने की उन प्रक्रियाओं का गहन परीक्षण होगा जिसके कारण कारगिल युद्ध हुआ था। अपनी भूमिका स्वीकार कर पाकिस्तान संभवतः भावी राजनयिक संपर्कों में विश्वास पैदा करना चाहता है। इस स्वीकारोक्ति से पाकिस्तानी सैनिक रणनीति प्रभावित होगी तथा भावी कार्रवाइयों में ज्यादा सावधानी व नियंत्रण को प्रोत्साहन मिलेगा। पाकिस्तान द्वारा अपनी सेना की संलिप्तता स्वीकार करने से कश्मीर विवाद के प्रति उसका दृष्टिकोण बदल सकता है और इसके समाधान के लिए सैनिक प्रयासों के बजाय ज्यादा राजनयिक प्रयासों को बल मिल सकता है। हालांकि, कारगिल युद्ध की दुःखद स्मृतियां रातोंरात समाप्त नहीं होंगी, पर इस स्वीकारोक्ति से ज्यादा गहन आत्मनिरीक्षण तथा भविष्य में सुलह–समझौते की संभावना पैदा हो सकती है।

भारतीय अर्थव्यवस्था की प्रगति

वैश्विक स्तर पर जहां शक्ति संघर्ष तथा आर्थिक मंदी है, वहीं भारत में रणनीतिक सुधारों, फलते–फूलते स्टार्टअप तंत्र तथा उभरते मध्य वर्ग से इसकी आर्थिक प्रगति को काफी गति मिली है।

सुधीर हिंदवान
(लेखक, रणनीति विशेषज्ञ हैं)

वैश्विक स्तर पर जहां शक्ति संघर्ष तथा आर्थिक मंदी है, वहीं भारत में रणनीतिक सुधारों, फलते–फूलते स्टार्टअप तंत्र तथा उभरते मध्य वर्ग से इसकी आर्थिक प्रगति को काफी गति मिली है। भारत का आर्थिक परिदृश्य उल्लेखनीय दृढ़ता एवं असीम संभावनाओं से भरा है, हालांकि उसे अनेक चुनौतियों का सामना भी करना पड़ रहा है। वर्तमान वित्त वर्ष की अंतिम तिमाही का जीडीपी डेटा अनुमानित 8 प्रतिशत वृद्धि के बजाय थोड़ी कमी के साथ 6.7 प्रतिशत की वृद्धि दर प्रदर्शित कर रहा है, पर देश इसके बावजूद विश्व अर्थव्यवस्थाओं में सबसे तेज गति से प्रगति करने वाली अर्थव्यवस्था बना हुआ है। भारतीय अर्थव्यवस्था की यह उपलब्धि देश के निरंतर आर्थिक वृद्धि का संकेत देती है। इससे भारत वैश्विक स्तर पर आर्थिक प्रगति एवं विकास के मामले में महत्वपूर्ण पक्ष बना हुआ है। जहां दुनिया की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में धीमी पड़ने के संकेत मिल रहे हैं, वहीं भारत की आर्थिक प्रगति जीवन्त व तेज बनी हुई है। लेकिन इसके बावजूद भारत सरकार के समक्ष अनेक प्रमुख चुनौतियां बनी हुई हैं। इनमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण रोजगार के ज्यादा अवसर पैदा करना है। पिछले सालों में देश में बेरोजगार तथा आंशिक रोजगार वाले नागरिकों की संख्या बढ़ी है और तेजी से विस्तार लेते 'वैश्वीकरण' के कारण यह समस्या और गंभीर हुई है। इसके कारण एक नया युग शुरू हुआ है जिसका प्रमुख सिद्धान्त 'करो या मरो' बन गया है। इसका प्रभाव सार्वजनिक क्षेत्र उद्यमों तथा दुनिया भर के बिजनेसों पर पड़ा है। हालांकि, भारत का सार्वजनिक क्षेत्र भी इस प्रवृत्ति से अलग नहीं है, पर सस्ते श्रम की उपलब्धता तथा प्रत्यक्ष विदेशी निवेश–एफडीआई प्राप्त करने के सक्रिय प्रयासों के चलते इस क्षेत्र में भी देश का भविष्य उज्ज्वल है।

हालांकि, शुरुआत में आर्थिक सुधारों के प्रति भारत का दृष्टिकोण बहुत सावधानी और संकोच वाला रहा, पर धीरे–धीरे सरकार ने अनेक प्रकार के विश्वास–बहाली कदम उठाए। इन पहलों से न केवल आर्थिक प्रगति को बढ़ावा मिला, बल्कि इसका लक्ष्य विभिन्न सामाजिक क्षेत्रों का समतापूर्ण विकास सुनिश्चित करना भी था। भारत द्वारा विकसित सामाजिक–आर्थिक न्याय के ढांचे ने देश के भीतर और दुनिया में विश्वास पैदा करने का काम किया। भारत के निर्यातोन्मुख विशेष आर्थिक क्षेत्रों–एसईजेड में प्रगति ने भी दुनिया में भारत के प्रति विश्वास मजबूत करने में प्रमुख भूमिका निभाई। शुरुआती चरणों में विश्व व्यापार में भारत का हिस्सा केवल 0.7 प्रतिशत था, पर 2002 से 2007 के बीच देश की मध्यकालीन निर्यात रणनीति ने सकारात्मक परिणाम प्रदर्शित किए। इसके साथ ही 1991 के आर्थिक सुधारों ने भारतीय अर्थव्यवस्था को काफी गति दी। यह भारत द्वारा किए 'आर्थिक उदारीकरण' का प्रारंभ था।

हालांकि, पूर्वी एशिया की कुछ अर्थव्यवस्थाओं और चीन ने प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का उच्च स्तर प्राप्त किया, लेकिन भारत के उत्कृष्ट कार्पोरेट प्रबंधन तथा उच्च गुणवत्ता वाली वाणिज्य–संचालित कंपनियों ने निवेश पर बेहतर लाभ देना सुनिश्चित किया। इससे देशी और प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को बाद में बढ़ावा मिला। भारत की सफलता उसकी बिजनेस विशेषज्ञता तथा निवेशकों द्वारा संचालित है। उन्होंने विदेशों में खासकर सूचना प्रौद्योगिकी, बायोटेक्नोलोजी, फार्मास्यूटिकल्स व स्वास्थ्यरक्षा में अपनी छाप छोड़ी। ये ऐसे क्षेत्र बन गए हैं जहां विकसित अर्थव्यवस्थाओं को आगे बढ़ने में अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। इसके साथ ही भारत की स्वदेशी उद्यमिता तथा उद्योगों ने देश में एक ऐसा माहौल पैदा किया जिससे भारत को प्रत्यक्ष विदेशी निवेश पर अत्यधिक निर्भर उद्योगों की तुलना में काफी लाभ की स्थिति प्रदान की। चीन इसका एक प्रमुख उदाहरण है जहां निर्यातोन्मुख विनिर्माण की प्रगति मुख्यतः एफडीआई संचालित थी, लेकिन यह देश में पैदा उद्यमिता का कोई विकल्प नहीं है। दूसरी ओर भारत ने अपने देश में मजबूत आंतरिक बाजार विकसित करने पर ज्यादा ध्यान दिया।

भारत के समक्ष एक और चुनौती वित्तीय संबंधों की जटिलता रही है। भारत ने इसका सामना भी बहुत अच्छी तरह किया। उदाहरण के लिए, हालिया वर्षों में जापान को वित्तीय व्यवस्था में गड़बड़ियों के कारण गंभीर आर्थिक मुद्दों का सामना करना पड़ा जिसके कारण सक्षम अधिकारियों को वित्तीय व्यवस्थाओं की लगातार निगरानी पर जोर देना पड़ा। भारत के परिपक्व वित्तीय बाजारों और जीवन्त नियामक संस्थानों ने निवेशकों में विश्वास पैदा कर निवेशों में स्थायित्व लाने में प्रमुख भूमिका निभाई। इसके साथ ही भारत ने दुनिया के अनेक अन्य देशों की तुलना में अनेक क्षेत्रों में बेहतर प्रदर्शन का प्रयास किया। हालांकि, बचत दरों, ढांचागत संरचनाओं तथा विनिर्माण में चीन की भूमिका नेतृत्वकारी है, पर भारत की सेवा क्षेत्र संचालित प्रगति और संस्थागत स्थायित्व की जड़ें देश के लोकतंत्र और बहुलवाद में हैं। इससे भारत पूरी दुनिया में अपनी अलग छाप छोड़ने में सफल हुआ है। भारत के आर्थिक परिदृश्य में एक खास उम्मीदों से भरी घटना हाल में स्टार्टअप की संख्या में वृद्धि है। पिछले पांच साल में देश में 10,000 से अधिक स्टार्टअप विकसित हुए हैं जिन्होंने प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से 100,000 से अधिक रोजगार सृजित किए हैं।

इस सफलता का श्रेय भारत सरकार की जीवन्त रणनीति को दिया जाना चाहिए जिसने ग्रामीण क्षेत्रों से लेकर शहरी क्षेत्रों तक अपनी कार्रवाइयों का विस्तार कर विभिन्न नेटवर्कों को सहायता दी है। 'नेशनल असोसियेशन आफ साफ्टवेयर एंड सर्विस कंपनीज़'–नैस्काम के अनुसार, इन स्टार्टअप ने रोजगार सृजन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है जिससे भविष्य में भारतीय अर्थव्यवस्था की प्रगति संभावनायें और उज्जवल हुई हैं। विदेशी निवेशकों ने भारत की संभावनाओं को पहचान लिया है। पिछले दो दशक से अधिक समय में भारतीय शेयर बाजारों में 60 बिलियन डालर से अधिक निवेश आया है। इसके साथ ही 600 से अधिक निवेशकों ने भारतीय शेयर बाजारों में व्यापार की अनुमति मांगी है। शेयर बाजारों में निवेश के इस प्रवाह से सेंसेक्स में 125 प्रतिशत वृद्धि हुई है तथा मुंबई स्टाक एक्सचेंज में 148 प्रतिशत उछाल आया है।

आईटी उद्योग में भारत की उल्लेखनीय प्रगति ने भारतीय कंपनियों के लिए विकास के नए दरवाजे खोले हैं जो अब विदेशी बाजारों में अपना तेजी से विस्तार कर रही हैं। देश की नियामक एवं नियम लागू कराने वाली संस्थाओं ने यह सुनिश्चित किया है कि विदेशी निवेश सुरक्षित हो तथा आर्थिक लेनदेन पर लगातार गहरी नजर बनी रहे। चुनौतीपूर्ण वैश्विक आर्थिक परिदृश्य के बावजूद भारत द्वारा जी20 की अध्यक्षता ने उसे एक अवसर प्रदान किया जिससे वह वैश्विक विनिर्माण में प्रमुख पक्ष तथा विभिन्न क्षेत्रों में विश्वसनीय साझीदार के रूप में उभर सकता है। जी20 देशों में सहयोग ने नई रणनीतियों के विकास का अवसर दिया है जिससे संकटग्रस्त देशों की मदद की जा सकती है तथा एक नए समावेशी विश्व समाज का निर्माण किया जा सकता है। इस सहयोग का परिणाम अंतरराष्ट्रीय संबंधों में सकारात्मक परिवर्तनों के रूप में सामने आ सकता है जिससे ज्यादा सामंजस्य और सहयोग का माहौल बनेगा।

भारत ने जी20 की अध्यक्षता के अपने कार्यकाल में उल्लेखनीय वैश्विक विकास परियोजनाओं की नीव डाली है जिसमें एशिया व यूरोप के अनेक देश सहभागिता को तैयार हैं। भारत की शानदार प्रगति का श्रेय मुख्यतः उसकी असाधारण प्रतिभा तथा रणनीतिक दूरदृष्टि को दिया जाना चाहिए। लेकिन देश को अपने विकास की गति बनाए रखने के लिए सामाजिक व राजनीतिक दबावों से होकर गुजरना होगा। इन चुनौतियों का सामना कर भारत विश्व अर्थव्यवस्था की महत्वपूर्ण संचालक शक्ति के रूप में अपनी स्थिति और मजबूत कर सकता है। भारत अपने प्रयासों से न केवल अपनी सीमाओं के भीतर, बल्कि दुनिया भर में आर्थिक प्रगति तथा समावेशी सामाजिक विकास को बढ़ावा दे सकता है।

ऋद्धि-सिद्धि के स्वामी हैं भगवान गणेश

"गणेश भौतिक सृष्टि के सबसे निकट के देवता हैं, ऋद्धि और सिद्धि के स्वामी, जो माया, अवास्तविकता के अतिरिक्त और कुछ नहीं हैं।"

अश्विनी गुरुजी
(लेखक आध्यात्मिक गुरु हैं)

भगवान गणेश ऋद्धि और सिद्धि के स्वामी हैं। ऋद्धि वह शक्ति है जो समृद्धि और प्रचुरता के लिए जिम्मेदार है – पाँच इंद्रियों से संबंधित भौतिक संपदा और विलासिता। सिद्धि आध्यात्मिक शक्तियों को संदर्भित करती है, जैसे अतिरिक्त संवेदी बोध, दिव्यदृष्टि, दिव्यश्रवण, पूर्वाभास, विचार अभिव्यक्ति आदि। गणेश का जन्म माता आदि शक्ति की गंदगी से हुआ था, क्योंकि उन्होंने स्नान किया था, जो दर्शाता है कि सृष्टि में सभी ऋद्धि और सिद्धि माँ की अभूतपूर्व शक्ति की गंदगी के कण के अलावा और कुछ नहीं हैं। गणेश भौतिक सृष्टि के सबसे करीबी देवता हैं, ऋद्धि और सिद्धि के स्वामी, जो माया, अवास्तविकता के अलावा और कुछ नहीं हैं।

वे अस्थायी हैं और जाने के लिए बाध्य हैं। अधिकांश लोग इन शक्तियों की अस्थायी प्रकृति को भूलकर अपना जीवन इनके पीछे बिता देते हैं और इस बात से बेखबर रहते हैं कि इनके परे क्या है... गणेश प्रथम देवता हैं, प्रथम पूज्य, आध्यात्मिक दुनिया के अभूतपूर्व अनुभवों की ओर पहला कदम। गणेश उस समय प्रकट हुए जब समाज में अशुद्धियाँ घुसने लगी थीं। समय के साथ–साथ जब सांसारिक इच्छाएँ सामान्य लोगों में आध्यात्मिक खोजों पर हावी होने लगीं, तो गणेश के विभिन्न पहलुओं को जगाने के लिए, भौतिक जगत में, सृष्टि की सबसे स्थूल परत में विशिष्ट इच्छाओं को पूरा करने के लिए अलग–अलग मंत्र और साधनाएँ निर्धारित की गईं।

उच्छिष्ट गणपति को वरदान देने वाले, मातृभूमि के रक्षक के रूप में या पाँच इंद्रियों पर महारत हासिल करने के लिए विशिष्ट मंत्रों के माध्यम से बुलाया जाता है। हेरम्बा गणपति का पाँच सिर वाला रूप है, जो सुनहरे रंग का है और शेर पर सवार है। इस दस भुजा वाले देवता का आह्वान

निर्भयता और अपने दुश्मनों को हराने के लिए किया जाता है। महागणपति रूप धन और सुखों से मेल खाता है, जो आनंद का दाता है। लाल–सुनहरे बालगणपति को अच्छे स्वास्थ्य और उज्ज्वल भविष्य के लिए बुलाया जाता है। हल्दी रंग और पीले वस्त्रों वाले हरिद्रा गणपति समृद्धि और सुरक्षा के अग्रदूत हैं। श्वेतार्क गणपति सफ़ेद होते हैं और कहा जाता है कि वे मदार के पौधे की जड़ में मौजूद होते हैं, जो मदार की एक दुर्लभ किस्म है, जिस पर मदार के सामान्य बैंगनी फूलों के बजाय सफ़ेद फूल लगते हैं। श्वेतार्क गणपति शयन कक्ष में रखे जाने पर जीवन शक्ति, जोश, शक्ति, अध्ययन कक्ष में बुद्धि और एकाग्रता, पूजा कक्ष में पूजा करने पर आध्यात्मिक शक्ति, सौभाग्य और समृद्धि लाते हैं और घर को हर समय बुरे प्रभावों से मुक्त रखते हैं। ये साधनाएँ अत्यंत शक्तिशाली हैं। इन्हें गुरु द्वारा व्यक्ति की आवश्यकता और क्षमता के अनुसार दिया जाता है, जो स्वयं सिद्ध होते हैं और आपसे कोई शुल्क नहीं लेते हैं।

ये गुरु और शिष्य के बीच एक व्यक्तिगत संबंध हैं, जिन पर चर्चा नहीं की जानी चाहिए और न ही सामूहिक रूप से सिखाया जाना चाहिए। जब गुरु मंत्र देते हैं, तो आशीर्वाद मिलता है लेकिन फिर उस कर्म को संतुलित करना अनिवार्य है, क्योंकि हर क्रिया की समान और विपरीत प्रतिक्रिया होती है, हर सुख के साथ एक दर्द जुड़ा होता है, जिसके लिए गुरु रास्ता दिखाते हैं। गुरु साधक को मार्गदर्शन देते हैं कि किस मंत्र का अभ्यास करना है, कितने समय तक, सही चरण और भाव और सौना के पूरक के लिए अभ्यास करना है। मंत्र साधना के बाद मंत्र सिद्धि के लिए यज्ञ किया जाता है। गणेश की शक्ति के प्रकटीकरण के लिए अभ्यास करने के लिए सबसे सुरक्षित मंत्रों में से एक है– गं गणपतये नमः लेकिन इसे भी वांछित प्रभावों के लिए गुरु द्वारा निर्देशित किया जाना चाहिए।

साधना की सफलता यज्ञ अग्नि में देवता के प्रकट होने से संकेतित होती है। ध्यान आश्रम के साधक जो विभिन्न मंत्र सिद्धियों का गंभीरता से अभ्यास कर रहे हैं, उन्हें कई देवताओं के भौतिक प्रकटीकरण हुए हैं (चित्र देखें)। गणेश चतुर्थी गुरु की संध्या के तहत सिद्धि मंत्र और मंत्र दीक्षा की रात है। गणेश चतुर्थी पर विचार की अभिव्यक्ति के लिए मंत्र साधना और वैदिक यज्ञ की शक्ति का अनुभव करें।

आप की बात

भारत की प्रशंसा

संयुक्त राष्ट्रसंघ के 78वें सत्र के अध्यक्ष डेनिस फ्रांसिस ने कहा कि भारत बहुपक्षवाद का प्रतिबद्ध समर्थक रहा है और वह वैश्विक सहयोग में भी हमेशा अग्रणी रहा है। भारत सुरक्षा परिषद की स्थाई सदस्यता का महत्वाकांक्षी है। सदस्यों को इस बारे में विचार करना चाहिए कि सुरक्षा परिषद् में कौन–कौन से विकासशील देश बेहतर प्रदर्शन कर सकते है। भारत ने ग्लोबल साउथ में अन्य विकासशील देशों के साथ मिलकर अपनी विशेषज्ञता साझा करने में उन्नत विकासशील देश के रूप में प्रतिबद्धता प्रदर्शित की है। डेनिस फ्रांसिस ने 140 करोड़ जनसंख्या वाले इतने बड़े लोकतंत्रीय देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की भी सराहना की। इस तरह दुनिया में भारत की प्रशंसा हमारे देशवासियों के लिए गर्व की बात है। लेकिन बड़े आश्चर्य की बात है कि जहां विदेशों में मोदी और उनके नेतृत्व वाली सरकार के कामकाज की तारीफ़ हो रही है, वहीं हमारे देश में विपक्ष को उनके कोई काम नजर ही नहीं आते हैं। इससे लगता है कि विपक्ष के अनेक नेता मोदी का विरोध करते–करते भारत की प्रगति को अनदेखा करने लगते हैं। हालांकि, दुनिया भर में मोदी का लगातार बढ़ता कद स्वयं ही इन विपक्षियों को देश–विदेश में हास्यास्पद बनाता जा रहा है। देश की जनता असलियत समझ रही है।

– **शकुंतला महेश नेनावा,** इंदौर

वंशवादी राजनीति

भारत में लोकतंत्र है, लेकिन क्या हर कोई इसमें हिस्सा ले सकता है? शायद नहीं, क्योंकि वंशवादी राजनीति ने इसे एक पारिवारिक संपत्ति बना दिया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जब वंशवादी राजनीति के खात्मे की बात की तो मानो कई राजनीतिक परिवारों के घर में बिजली गुल हो गई हो। आखिरकार, सत्ता पर काबिज रहना जैसे उनका जन्मसिद्ध अधिकार है। अगर राजनीति में प्रवेश के लिए पिता या दादा का नाम ही पासपोर्ट है तो बाकी युवाओं के लिए विकल्प क्या बचता है? हो सकता है उन्हें सलाह दी जाए कि अच्छे से पढ़ो–लिखो और राजनीति को भूल जाअ क्योंकि इसमें जगह सिर्फ खास लोगों के लिए है। हालांकि, इसके बावजूद आम जनता के पास भी एक महत्वपूर्ण भूमिका है, लेकिन अक्सर वह मूकदर्शक बनकर रह जाती है। हम चुनाव के समय यह नहीं सोचते कि उम्मीदवार की योग्यता क्या है, बल्कि यह देखते हैं कि उनका खानदानी नाम क्या है और फिर हम लोकतंत्र के कमजोर होने की शिकायत करते रहते हैं। युवा जोश और नई सोच के लिए राजनीति के दरवाजे अक्सर बंद ही रहते हैं। लोकतंत्र को सफल बनाने के लिए वंशवाद को खत्म करना जरूरी है। यह गंभीर विमर्श का विषय है।

– **अवनीश कुमार गुप्ता,** आजमगढ़

रक्षा मंत्री का बयान

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कश्मीर घाटी में विधानसभा चुनाव के प्रचार के दौरान पड़ोसी पीओके के कश्मीरी निवासियों से कहा कि जब स्वयं पाकिस्तान ही आपको अपने देश का नागरिक नहीं मानता है एवं गुलाम कश्मीर कहता है तब क्यों आप इतने सालों से उसके साथ हैं? इसलिए आइये एवं भारतीय कश्मीर का हिस्सा बन जाइए। हमने तो कभी आपको बेगाना नहीं कहा, जबकि ये पाकिस्तानी तो आपको हमेशा ही विदेशी नागरिक कहते रहे हैं। अतः आज भी उसके साथ बने रहने का क्या मतलब? इन दिनों तो पाकिस्तानी सेना भी आपके साथ काफी जुल्म कर रही है। भूखे प्यासे रहने से भी क्या मतलब क्योंकि पाकिस्तान आपको खाने–पीने की रसद भी नहीं दे रहा है। हमारे यहां स्वयं आपके कश्मीरी भाई आपका स्वागत करने के लिए तैयार हैं। राजनाथ सिंह के इस बयान को केवल चुनावी भाषण समझने के बजाय इसके निहितार्थों पर गौर करना चाहिए। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के बाद राजनाथ सिंह का केन्द्रीय कैबिनेट में सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान है। ऐसे में उनके बयान को पाक अधिकृत कश्मीर के बारे में भारत सरकार तथा भारतीय जनता पार्टी के भीतर व्याप्त भावना का स्वागत योग्य प्रकटीकरण माना जाना चाहिए।

– **एमएम राजावत,** शाजापुर

जिला न्यायपालिका

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने जिला न्यायपालिका के राष्ट्रीय सम्मेलन में न्याय प्रणाली की चुनौतियों पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि जब तक आम लोगों को न्याय सुलभ नहीं होता, न्यायपालिका का कार्य अधूरा है। राष्ट्रपति ने देशवासियों के मन के दर्द को उठाया। आज पूरे देश में 4 करोड़ से अधिक मुकदमे लंबे समय से पेंडिंग पड़े हुए हैं और उनकी संख्या में बढ़ोतरी होती जा रही है। कुछ दिनों पूर्व भारत के प्रधान न्यायाधीश ने भी न्याय देरी से मिलने पर चिंता जाहिर की थी। इस विलंब के कारण समझ कर जिला न्यायपालिका को मजबूत कर उसका विस्तार किया जाना चाहिए। देश में बढ़ती हुई आबादी के अनुपात में न्यायालयों की संख्या में वृद्धि की जानी चाहिए तथा रिक्त पदों को जल्दी से जल्दी भरा जाना चाहिए। इसके साथ ही कई कानूनों और प्रक्रियाओं को सरल बनाना जरूरी है। जमानत संबंधी कानून का सरलीकरण भी जरूरी है। हालांकि, सरकार ने तीन नए अपराध न्याय कानून लागू कर उल्लेखनीय पहल की है, पर जमीनी स्तर पर इनका पूरी तरह क्रियान्वयन भी जरूरी है। पुलिस व जेल सुधार इसका अंग हैं।

– **सुभाष बुडावन वाला,** रतलाम

पाठक अपनी प्रतिक्रिया ई–मेल से
responsemail.hindipioneer@gmail.com
पर भी भेज सकते हैं।

अपने उत्तरदायित्वों का निर्वहन प्रतिबद्धता व ईमानदारी से करे पुलिसः योगी

● मुख्यमंत्री ने 73वें अखिल भारतीय पुलिस रेसलिंग कलस्टर का किया शुभारंभ

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा है कि प्राचीन काल से ही भारत की परंपरा में खेल और खेलकूद की गतिविधियों को महत्व दिया गया है। भारतीय ऋषि इस बात का उद्घोष करता है कि 'शरीरमाद्यम् खलु धर्म साधनम्' यानी धर्म के जितने भी साधन हैं, वह स्वस्थ शरीर से ही संभव हैं। स्वस्थ शरीर के लिए खेलकूद, योगासन, प्राणायाम आदि क्रियाएं अत्यंत महत्वपूर्ण है। स्वस्थ शरीर ही समर्थ समाज और सशक्त राष्ट्र की परिकल्पना को भी साकार कर सकता है।

मुख्यमंत्री सोमवार को सशस्त्र सीएम बल के 73 वें अखिल भारतीय पुलिस रेसलिंग क्लस्टर-2024 का उद्घाटन करने के बाद समारोह को संबोधित कर रहे थे। सीएम योगी ने प्रतियोगिता में शामिल प्रतिभागियों का अभिनंदन किया। योगी ने कहा कि 2014 में प्रधानमंत्री बनने के बाद नरेंद्र मोदी ने विकसित भारत की संकल्पना के लिए जो कार्यक्रम प्रस्तुत किए थे, उनमें खेल और खेलकूद की गतिविधियां भी महत्वपूर्ण हैं। खेलो इंडिया खेलो, फिट इंडिया मूवमेंट, सांसद खेलकूद प्रतियोगिता, गांव-राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताएं आयोजित हो रही हैं। हर तबके का व्यक्ति इन आयोजनों के साथ जुड़ रहा है। पेरिस में पैरालंपिक में भारतीय खिलाड़ियों के जज्बे को पूरा देश और दुनिया देख रही है कि कैसे बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए हमारे दिव्यांग खिलाड़ियों ने अपनी प्रतिभा और तेज का लोहा मनवाने का भी काम किया है। यह दृश्य हमारे लिए इसलिए भी प्रसन्नता का है, क्योंकि यह प्रधानमंत्री की 'एक भारत श्रेष्ठ भारत की' परिकल्पना को भी साकार कर रहा है। सीएम योगी ने कहा कि खेल अपने कार्य के प्रति समर्पण के भाव के साथ तो जोड़ता ही है, साथ ही साथ जीवन में उतार-चढ़ाव के हर एक मोड़ पर जीतने की भी प्रेरणा देता है। अति प्रफुल्लित होकर अन्य के जीवन में बाधा पैदा करने की जो कुत्सित चेष्टाएं होती है, उसे रोकने का सामर्थ्य भी देता है। अगर किसी कारणों से सफलता नहीं प्राप्त हुई तो हर खिलाड़ी के अंदर शालीनता से उसे स्वीकार करने का भी सामर्थ्य भी पैदा करता है और जीवन इसी से चलता है। बहुत बार पराजय भी बड़ी जीत का मार्ग प्रशस्त करती है।

सीएम ने पुलिस बल के उपस्थित जवानों को संबोधित करते हुए कहा कि राष्ट्रीय सुरक्षा का मुद्दा रहा हो या विभिन्न प्रदेशों में कानून व्यवस्था, सुरक्षा का बेहतरीन माहौल बनाने का मुद्दा। पुलिस अपने इन उत्तरदायित्वों का निर्वहन पूरी प्रतिबद्धता और ईमानदारी के साथ करने का प्रयास करती है, लेकिन इन सभी के बावजूद अन्य ऐसी गतिविधियां जो समाज को जोड़ती हो, एक दूसरे के मन में विश्वास पैदा करती हो, उन आयोजनों के साथ जुड़ना उतना ही रचनात्मक है और इसीलिए केवल पुलिसिंग ही नहीं, बल्कि हमें अन्य रचनात्मक कार्यों के साथ भी जुड़ना होगा। सीएम योगी ने कहा कि पीएम मोदी के मार्गदर्शन में उत्तर प्रदेश में खेल और खेलकूद की गतिविधियों के लिए व्यापक कार्ययोजना को आगे बढ़ाया है। हम लोगों ने खेल नीति भी बनाई। ओलंपिक, कॉमनवेल्थ, एशियाड व विश्व चैंपियनशिप में जो खिलाड़ी मेडल प्राप्त करते हैं, उन्हें सीधी भर्ती के माध्यम में उत्तर प्रदेश पुलिस बल का हिस्सा बनाने की कार्रवाई हो रही है। अब तक ऐसे 500 से अधिक खिलाड़ियों को हम लोगों ने उत्तर प्रदेश पुलिस में सीधी भर्ती करने की कार्रवाई के साथ जोड़ा है। उनके बेहतरीन प्रदर्शन आज उत्तर प्रदेश पुलिस बल को नई गति देने में योगदान दे रहे हैं।

खेलकूद की गतिविधियों को आगे बढ़ाने के लिए 57000 ग्राम पंचायत में खेल का मैदान, 825 विकास खंडों में मिनी स्टेडियम और 75 जनपदों में स्टेडियम निर्माण के कार्यक्रम को युद्ध स्तर पर आगे बढ़ाने वाला राज्य उत्तर प्रदेश है। योगी ने कहा कि नाम भले ही अलग-अलग हो सकते हैं, लेकिन सबका कार्य व मिशन एक ही है और वह है भारत की सुरक्षा। यह हम सभी के लिए सर्वोच्च मायने रखती है। भारत नेपाल सीमा हो या भारत भूटान सीमा, वहां पर इन देशों के साथ भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक संबंधों पर कोई आंच आए बगैर एसएसबी इन सीमाओं की सुरक्षा के लिए बेहतरीन प्रयास कर रहा है। उत्तर प्रदेश के अंदर साढ़े पांच सौ किमी. की सीमा नेपाल से जुड़ी हुई है। उत्तर प्रदेश पुलिस एसएसबी के साथ ज्वाइंट पेट्रोलिंग में भाग लेती है। राष्ट्रीय सुरक्षा का उत्तरदायित्व मिलकर हम एक साथ निभाएंगे तो सीमाओं के क्षेत्र में आमजन का विश्वास भी अर्जित करेंगे। सुरक्षा के साथ कहीं पर कोई खरोच भी नहीं आने देंगे, इस विश्वास के साथ बेहतरीन तालमेल के माध्यम से यह कार्यक्रम आगे बढ़ते हैं तो अनेक रचनात्मक गतिविधियों को भी वहां पर उस क्षेत्रवासियों के लिए एसएसबी द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। इस अवसर पर यूपी के डीजीपी प्रशांत कुमार, सशस्त्र सीमा बल के डीजी दलजीत सिंह चौधरी आदि मौजूद रहे।

दुग्ध मूल्य का भुगतान समय पर किया जाएः दुग्ध विकास मंत्री

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

दुग्ध विकास मंत्री धर्मपाल सिंह ने अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि दुग्ध उत्पादन के साथ ही पौष्टिक एवं गुणवत्तायुक्त दूध आम जनता को उपलब्ध कराना हमारा उद्देश्य है। इसलिए सिंथेटिक दूध पर प्रभावी अकुंश लगााने के लिए दूध की जांच विभाग द्वारा कराये जाने के संबंध में प्रस्ताव बनाया जाए और जांच कार्यों के लिए संबंधित विभागों से भी समन्वय स्थापित कर सहयोग लिया जाए। एक सप्ताह का अभियान चलाकर जांच कार्य सम्पादित किया जाए।

सिंह ने प्राथमिकता के आधार पर किसानों एवं पशुपालकों को दुग्ध मूल्य का भुगतान करने, दुग्ध समितियों के सुव्यवस्थित संचालन एवं प्रदेश में दुग्ध उत्पादन को बढ़ाने के संबंध में तेजी से कार्य करने के निर्देश दिये हैं।

उत्तर प्रदेश के दुग्ध विकास मंत्री धर्मपाल सिंह ने सोमवार को विधान भवन स्थित कार्यालय कक्ष में दुग्ध विकास विभाग के कार्यों की समीक्षा की। सिंह ने डेयरी विकास को बढ़ावा देने तथा दुग्ध संघों/ डेयरी प्लांट्स के संचालन एवं प्रबंधन हेतु तकनीकी जनशक्ति के अभाव के दृष्टिगत पीसीडीएफ की व्यवसायिक गतिविधियों में सहायता और मार्गदर्शन के संबंध में आवश्यक दिशा निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि पीसीडीएफ द्वारा मार्केटिंग को बढ़ावा दिया जाए और मित्व्ययिता का ध्यान रखते हुए दक्ष एवं तकनीकी रूप से कुशल विशेषज्ञों की सहायता ली जाए। श्री सिंह ने कहा कि समितियों के गठन, सुदृढ़ीकरण एवं संचालन पर विशेष ध्यान दिया जाए। जितनी अधिक संख्या में समितियों का गठन किया जायेगा उतना ही किसानों और पशुपालकों को लाभ होगा और दुग्ध उत्पादन में भी वृद्धि होगी। पीसीडीएफ द्वारा दुग्ध उपार्जन एवं दुग्ध उत्पादों की सभी संभावनाओं पर गंभीरता से कार्य किया जाए और एनडीडीबी से सहयोग स्थापित कर आवश्यक कार्य किया जाए।

साढ़े सात साल में विकास और निवेश के नए युग में यूपीः मुख्यमंत्री

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ नोएडा में स्थापित हो रहे आइकिया स्टोर का वर्चुअल माध्यम से शिलान्यास किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि साढ़े सात वर्ष में उत्तर प्रदेश ने देश-दुनिया के निवेशकों का विश्वास अर्जित किया है। आइकिया इंडिया उन्हीं निवेशकों में से एक है। आइकिया इंडिया द्वारा उत्तर प्रदेश में 5500 करोड़ रुपये के निवेश प्रस्ताव पर धन्यवाद ज्ञापित करते हुए सीएम योगी ने कहा कि उत्तर प्रदेश भारत के अंदर अब इन्वेस्टमेंट का ड्रीम डेटिनेशन बन गया है। उन्होंने कहा कि पिछले साढ़े सात साल में उत्तर प्रदेश ने विकास और निवेश के नए युग में प्रवेश किया है।

सीएम योगी ने कहा कि इंग्का सेंटर्स की इस नई परियोजना में आइकिया रिटेल स्टोर, होटल, ऑफिस स्पेस और शॉपिंग सेंटर खोला जाएगा। इसके माध्यम से 9 हजार से अधिक युवाओं को रोजगार प्राप्त होगा। उन्होंने कहा कि 2017 के बाद से इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट, निवेश की नई संभावनाओं के विकास, स्किल डेवलपमेंट और परंपरागत उत्पादों के प्रोत्साहन में उत्तर प्रदेश ने अनेक कार्यक्रम प्रारंभ किए हैं, आज उसके परिणाम हम सबके सामने है। सीएम योगी ने कहा कि उत्तर प्रदेश की ओडीओपी योजना देश की अभिनव योजना बन गई है। साथ ही बेहतरीन कानून व्यवस्था से उत्तर प्रदेश ईज ऑफ डूइंग बिजनेस में देश में अग्रणी है। सीएम योगी ने कहा कि उत्तर प्रदेश भारत की आबादी का सबसे बड़ा राज्य है, जो वर्तमान में भारत की अर्थव्यवस्था में 9.2 प्रतिशत का योगदान दे रहा है। आज उत्तर प्रदेश देश में दूसरे नंबर की अर्थव्यवस्था वाला राज्य है, जो तेजी के साथ भारत के विकास के ग्रोथ इंजन के रुप में आगे बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि 2017 में उत्तर प्रदेश ने अपनी औद्योगिक विकास नीति बनाई थी, उस समय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हम लोगों का मार्गदर्शन करते हुए कहा था कि इन्वेस्टमेंट को एम्प्लॉयमेंट के साथ जोड़ना चाहिए। आइकिया इंडिया के स्टोर का शिलान्यास उसी का परिणाम है।

सीएम योगी ने कहा कि देश की सबसे बड़ी और प्रतिभावान युवा आबादी उत्तर प्रदेश में निवास करती है। विगत साढ़े सात वर्ष में उत्तर प्रदेश की बेरोजगारी दर घटी है। 27 अलग-अलग सेक्टर की सेक्टोरियल पॉलिसी के साथ उत्तर प्रदेश भारत के विकास में अपना योगदान दे रहा है। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश का नोएडा, ग्रेटर नोएडा और यमुना अथॉरिटी का क्षेत्र इस वर्ष के अंत में पब्लिक ट्रांसपोर्ट की सुविधाओं के साथ ही भारत के सबसे बड़े नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट के साथ जुड़ जाएगा। उन्होंने कहा कि यह क्षेत्र लॉजिस्टिक की दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। ईस्टर्न और वेस्टर्न डेडीकेटेड फ्रेट कॉरिडोर का जंक्शन इसी क्षेत्र के गौतमबुद्धनगर जनपद में पड़ेगा। उत्तर प्रदेश अनलिमिटेड पोटेंशियल का प्रदेश है, इसकी संभावनाओं का लाभ भारत और अंतरराष्ट्रीय समुदाय के हित में है।

परिवहन निगम के बेड़े में महाकुंभ से पूर्व शामिल होंगी 220 इलेक्ट्रिक बसें

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

परिवहन मंत्री दयाशंकर सिंह ने बताया कि परिवहन निगम जल्द ही 220 इलेक्ट्रिक बसों की सौगात प्रदेश के लोगों को देने जा रही है। 100 इलेक्ट्रिक बसों की खरीदे जाने की कार्यवाही की जा चुकी है। जो प्रयागराज गाजियाबाद और आगरा क्षेत्र से संचालित होगी सयह बसें लखनऊ से अयोध्या, कानपुर, नैमिषारण्य, बाराबंकी आदि जनपदों के लिए संचालित होगी। 120 और इलेक्ट्रिक बसों को खरीदे जाने हेतु टेण्डर प्रक्रिया शुरू की जा चुकी हैं। यह बसे एकबार पूर्ण चार्ज होने पर लगभग 160 किमी की दूरी तय करेंगी। जिसमें 20 डबल डेकर 9 मीटर लम्बी, 2-2 सेट की, 60 सीटर 30 बसें 12 मीटर लम्बी, 2-2, 40 सीटर, 30 बसें 9 मीटर लम्बी, 2म3, 38 सीटर एवं 40 बसें 12 मीटर लम्बी 2-3 ,51 सीटर इलेक्ट्रिक बसें शामिल हैं।

परिवहन मंत्री दयाशंकर सिंह ने बताया कि उक्त बसें पूर्ण निर्मित आधार पर क्रय की जायेगी। सभी इलेक्ट्रिक बसें पूर्णतः वातानुकूलित बसें होगी। उक्त बसें आरामदेय होने के साथ-साथ प्रदूषण मुक्त होंगी। इलेक्ट्रिक बसों से किसी भी प्रकार की हानिकारक गैस या धुओं का उत्पादन नहीं होता है। यह लोगों के स्वास्थ्य पर किसी भी प्रकार का नकारात्मक प्रभाव नहीं डालता है।

परिवहन मंत्री ने बताया कि क्रय की जाने वाली सभी इलेक्ट्रिक बसों में वेहकिल लोकेशन एण्ड टैऊकिंग डिवाइस के साथ-साथ पैनिक बटन भी लगी होगी, जिससे कि लोगों को बसों की वास्तविक पोजीशन की जानकारी के साथ-साथ सुरक्षा भी मुहैया होगी। उक्त बसों में रिवर्स कैमरा, वाई-फाई एवं सीसीटीवी कैमरे भी लगे होंगे। इसके अलावा पब्लिक एनाउन्समेंट डिवाइस से भी लैस होगा, जो ड्राइवर के पास लगा होगा। उन्होंने बताया कि परिवहन निगम महाकुंभ-2025 के पूर्व उक्त बसों के क्रय की प्रक्रिया पूर्ण कर लेगा, जिससे कि कुंभ में भी उक्त बसों का संचालन किया जा सके।

आत्महत्याओं की बड़ी वजह पारिवारिक समस्याएं हैं

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

हर साल लाखों लोग मानसिक तनाव, सामाजिक दबाव और व्यक्तिगत चुनौतियों के कारण आत्महत्या करने पर मजबूर होते हैं। आत्महत्या को लेकर जागरूकता बढाने को लेकर विश्व आत्महत्या रोकथाम दिवस 10 सितंबर को विश्व स्तर पर मनाया जाता है। यह आत्महत्या की रोकथाम के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए एक महत्वपूर्ण दिन है। इस बार इस दिवस की थीम है नैरेटिव बदलें जोकि एक महत्वपूर्ण संदेश देता है कि आत्महत्या के बारे में हमारी सोच बदलने की जरूरत है। इस सम्बन्ध में राज्य कार्यक्रम अधिकारी, राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थय कार्यक्रम की तरफ से सभी जिलों को इस दिवस पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन करने के लिए पत्र जारी किया गया है।

राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के एक्सीडेंटल डेथ एवं सुसाइड रिपोर्ट 2022 के अनुसार देश की सबसे बड़ी आबादी वाले राज्य उत्तर प्रदेश में आत्महत्या की दर 3.5 है। राज्य में 2022 में कुल 8,176 आत्महत्याएँ दर्ज कीं गय। जिसमें 5225 संख्या पुरुषों की रही। वही 2951 आत्महत्या महिलाओं द्वारा कीं गयी। इनमें से 1631 आत्महत्या गृहिणियों की रही, 5162 शादीशुदा जोड़ो की, 1521 बेरोजगार व्यक्ति और 1060 छात्रों कि रही। यह दिखाता है कि सामाजिक और मानसिक दबाव, पारिवारिक समस्याएं और वित्तीय तनाव आत्महत्याओं के पीछे मुख्य कारण हैं।

इन पांच राज्यों से आत्महत्या के मामलों की सबसे ज्यादा हिस्सेदारी

आत्महत्या के मामले में महाराष्ट्र की संख्या 22,746 है वही तमिलनाडु में 19,834, मध्य प्रदेश में 15,386, कर्नाटक में 13,606, बंगाल में 12669 में आत्महत्या के मामलों की संख्या रही। देश में होने वाली कुल आत्महत्या के मामलों में 49.3 प्रतिशत आंकड़े सिर्फ इन पाँच राज्यों से है।

भाजपा आरक्षण समाप्त करने का कुचक्र कर रहीः अखिलेश

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

● महाराष्ट्र एनसीपी के दर्जनों पदाधिकारी सपा में शामिल

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव के नेतृत्व एवं समाजवादी पार्टी की नीतियों पर आस्था जताते हुए सोमवार को महाराष्ट्र एनसीपी (अजीतगुट) के दर्जनों पदाधिकारी एनसीपी के राज्य महामंत्री इरशाद भाई जागीरदार के नेतृत्व में समाजवादी पार्टी में शामिल हो गए।

अखिलेश यादव ने एनसीपी नेताओं को समाजवादी पार्टी में शामिल होने पर बधाई देते हुए उम्मीद जताई है कि इनके आने से समाजवादी पार्टी को मजबूती मिलेगी। उन्होंने कहा कि समाजवादी पार्टी सामाजिक न्याय की लड़ाई शुरू से ही लड़ती आई है। जातीय जनगणना की मांग पूरी होने पर ही समानुपातिक भागीदारी तय हो सकेगी और सभी को हक तथा सम्मान मिलेगा। भाजपा आरक्षण समाप्त करने का कुचक्र कर रही है। समाजवादी पार्टी लोकतंत्र और समाजवाद के लिए प्रतिबद्ध है। समाजवादी पार्टी सामाजिक न्याय और सद्भाव की पक्षधर है। अखिलेश यादव ने कहा कि समाजवादी पार्टी महाराष्ट्र सहित अन्य राज्यों में विस्तार के पक्ष में है। समाजवादी पार्टी को राष्ट्रीय पार्टी की स्वीकृति दिलाने के लिए अन्य राज्यों के चुनावों में पूरी सक्रियता से भाग लेंगे।

मंगेश यादव का एनकाउंटर एक सुनियोजित हत्याः अजय राय

● सपा के बाद अब कांग्रेस ने सुल्तानपुर पुलिस मुठभेड़ पर उठाए सवाल, न्यायिक जांच की मांग की

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

समाजवादी पार्टी के बाद अब कांग्रेस ने भी सुल्तानपुर पुलिस मुठभेड़ पर सवाल उठाए हैं। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अजय राय ने कहा है कि सारी परिस्थितियां एनकाउंटर के फर्जी होने की तरफ इशारा कर रही हैं। इतना ही नहीं जिस तरह से घटना के मुख्य आरोपी विनय सिंह को एस.टी.एफ. और पुलिस की नाक की नीचे से कोर्ट में सरेंडर कराया गया और बाकी आरोपियों को भी पैर में गोली मारकर गिरफ्तार किया गया उससे एक बात और चर्चा में है कि कहीं मंगेश का एनकाउंटर उसके पिछड़े वर्ग से होने की वजह से तो नहीं किया गया।

अजय राय सोमवार को जौनपुर स्थित मंगेश यादव के घर पहुंचे और परिजनों से मिलकर उन्हें सांत्वना देने के साथ ही घटना की वस्तुस्थिति की जानकारी ली। राय ने परिजनों को कांग्रेस पार्टी की ओर से हर संभव मदद का आश्वासन भी दिया। राय ने कहा कि पुलिस की कहानी में कई झोल हैं, और प्रथम दृष्टया देखने से ही ये फर्जी एनकाउंटर लग रहा है। राय ने कहा कि जो व्यक्ति इतने संगीन अपराध में लिप्त होगा, क्या वो बेखबर अपने घर पर सोयेगा? 2 तारीख की देर रात मंगेश यादव को उसके घर से पुलिस उठाती है और दो दिन बाद का एनकाउंटर दिखाती है। मंगेश के परिजनों के इस बयान के बाद पूरी पुलिसिया कहानी फेल हो गई है। लूट का अब तक केवल 10 प्रतिशत माल ही बरामद हुआ है, सवाल ये है कि बाकी माल कहां है? अजय राय ने कहा कि पूरा प्रदेश पुलिसिया खौफ में जी रहा है। योगी आदित्यनाथ के राज में पुलिस निरंकुश हो गई है। उनके राज में या तो बुल्डोजर से घर गिराए जाते हैं या फर्जी एनकाउंटर होते हैं। राय ने कहा कि मंगेश यादव फर्जी एनकाउंटर की न्यायिक जांच हाईकोर्ट के किसी सिटिंग जज से कराई जानी चाहिए। इस मौके पर पूर्व विधायक नदीम जावेद, प्रदेश कांग्रेस कोषाध्यक्ष शिव पाण्डेय एवं प्रदेश महासचिव प्रभारी संगठन अनिल यादव भी मौजूद रहे।

गांधी जयन्ती पर 12 कोच की स्पेशल सचल प्रदर्शनी ट्रेन संचालित की जायेगी

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने कहा कि काकोरी ट्रेन एक्शन की स्मृति ताजा करने तथा जनमानस में राष्ट्रभक्ति की भावना जाग्रत करने के लिए गांधी जयन्ती 02 अक्टूबर, 2024 के अवसर पर स्पेशल सचल प्रदर्शनी टेऊन का संचालन कराया जायेगा। इसके तहत 12 कोच की स्पेशल ट्रेन के माध्यम से सचल प्रदर्शनी पूरे राज्य भर में संचालित कर काकोरी ट्रेन एक्शन के प्रति युवाओं, विद्यार्थियों तथा जनमानस को इसका इतिहास बताया जायेगा। इस सचल रेल प्रदर्शनी के लिए अध्यक्ष एवं सीईओ रेलवे बोर्ड, रेल भवन, नई दिल्ली को प्रमुख सचिव पर्यटन एवं संस्कृति की ओर से 5 सितम्बर, 2024 को पत्र भेजकर अनुरोध किया गया है।

पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने दी। उन्होंने बताया कि प्रदर्शनी वाले स्टेशनों पर नुक्कड़ नाटक, क्विज प्रतियोगिताओं, चित्रकला प्रतियोगिता, रंगोली आदि का आयोजन किया जायेगा। इसमें स्कूल एवं कालेज की छात्र-छात्राओं को शामिल होने के लिए आमंत्रित किया जायेगा, ताकि उनके मन में राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना एवं नई ऊर्जा का संचार हो सके। जयवीर सिंह ने बताया कि सचल रेल प्रदर्शनी के लिए 12 कोच की एक विशेष रेलगाड़ी की आवश्यकता होगी, जिसमें 11 कोच प्रदर्शनी के उद्देश्य से प्रयोग में लाये जायेंगे तथा 1 कोच एसी-3 भी लगाया जायेगा, जिसमें संबंधित अधिकारी, कर्मचारी एवं प्रतिनिधि यात्रा करेंगे। इस ट्रेन की साज-सज्जा एवं प्रदर्शनी हेतु विनायल आदि की व्यवस्था विभाग द्वारा की जायेगी। पर्यटन मंत्री ने बताया कि भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन की महत्वपूर्ण घटना काकोरी टेऊन एक्शन की 100वीं वर्षगांठ का शुभारम्भ 9 अगस्त, 2024 से काकोरी ट्रेन एक्शन शताब्दी महोत्सव के रूप में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के द्वारा किया गया था। इस अवसर पर राज्य सरकार द्वारा एक स्पेशल ट्रेन पर सचल प्रदर्शनी आयोजित कर शताब्दी वर्ष समारोह के आयोजन का निर्णय लिया गया।

एक हजार से अधिक कुंभ मेला मित्र और स्वयं सेवकों की तैनाती

महाकुंभ-2025

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ/ प्रयागराज

योगी सरकार ने महाकुंभ में आने वाले श्रद्धालुओं और पर्यटकों की मदद के साथ बेहतर अनुभव देने के लिए एक हजार से अधिक कुंभ मेला मित्रों की नियुक्ति करने का निर्णय लिया है। इनके चयन की प्रक्रिया शुरू हो गयी है। इन सभी कुंभ मेला मित्रों को स्किल की ट्रेनिंग भी दी जाएगी ताकि श्रद्धालु और पर्यटक अपने साथ उत्तर प्रदेश की सकारात्मक अनुभव को अपने प्रदेश के लोगों के बीच शेयर कर सकें।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देश पर महाकुंभ को दिव्य और भव्य आयोजित कराने के लिए लगातार युद्धस्तर पर काम किये जा रहे हैं। इसी के तहत योगी सरकार ने महाकुंभ में देश-विदेश से आने वाले 41 करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं और पर्यटकों के लिए खास इंतजाम किये जा रहे हैं ताकि वह अपने गंतव्य लौटते समय प्रदेश की अच्छी छवि को अपने से शेयर कर सकेंगे। इसके लिए सीएम योगी के निर्देश पर कुंभ मेला प्रशासन बड़े स्तर पर कुंभ मेला मित्र और स्वयं सेवकों को नियुक्त करने का निर्णय लिया। कुंभ मेला अधिकारी विजय किरण आनंद ने बताया कि मेला क्षेत्र में 1000 से अधिक कुंभ मेला मित्रों और स्वयं सेवकों के चयन की प्रक्रिया चल रही है। इसके बाद सभी को मेला क्षेत्र में प्रतिकूल परिस्थितियों में कार्य करने के लिए स्किल ट्रेनिंग दी जाएगी। इसके लिए मेला प्राधिकरण ने आरएफपी जारी की है।

गोवंशों को रेडियमयुक्त पट्टी डालने की कार्ययोजना बनाई जाएः धर्मपाल

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

● गोआश्रय स्थलों पर सभी आवश्यक सुविधायें सुनिश्चित की जाए

पशुधन विकास मंत्री धर्मपाल सिंह ने सोमवार को विधान भवन स्थित कार्यालय कक्ष में प्रदेश के गौ आश्रय स्थलों की अद्यतन स्थिति की समीक्षा करते हुए अधिकारियों को निर्देश दिये कि जिन गौ आश्रय स्थलों में अव्यवस्था या गौवंश की देखभाल संबंधी कोई भी शिकायत संज्ञान में आए वहां तत्काल सुधार किया जाए। मुख्य पशु चिकिसाधिकारी ये सुनिश्चित करें कि केयरटेकर द्वारा गौवंश हेतु आवश्यक कार्य सुचारू रूप से पूरे किए जाएं। गोवंश भूखा-प्यासा न रहे और बीमार पशु को पर्याप्त चिकित्सा उपलब्ध हो। गौवंश आश्रय स्थलों का संचालन व्यवस्थित और विधिवत तरीके से किया जाए। वर्तमान में अब तक प्रदेश के 7557 गोआश्रय स्थलों पर 1190965 निराश्रित गोवंश संरक्षित किये गये हैं। सिंह ने पशुधन विभाग के अधिकारियों को मार्ग दुर्घटनाओं को रोकने के लिए राष्ट्रीय राज्यमार्ग व अन्य राज्यमार्गों के समीपवर्ती ग्रामों में पशुपालकों एवं किसानों के गोवंश को रेडियमयुक्त पट्टी डाले जाने पर चर्चा करते हुए आवश्यक एवं व्यवहारिक कार्ययोजना तैयार कर प्रस्तुत करने के निर्देश दिये। सिंह ने कहा कि टीकाकरण एवं बधियाकरण के लक्ष्यों को पूरा किया जाए और इन कार्यों में लगे पैरावेट्स को निर्धारित धनराशि समय पर दी जाए। धर्मपाल सिंह ने प्रदेश में निराश्रित गोवंश को गोआश्रय स्थल तक पहुंचाने, गोशालाओं में चारा, भूसा, स्वच्छ पेयजल, प्रकाश, औषधि उपलब्धता, प्रत्येक जिले में कृत्रिम गर्भाधान के लक्ष्य निर्धारण आदि की गहन समीक्षा की। सिंह ने कहा कि मण्डलीय अपर निदेशक प्रतिदिन अपने मण्डल में कम से कम एक जनपद का भ्रमण कर गोआश्रय स्थलों का निरीक्षण करें। सिंह ने गोशालाओं को आत्मनिर्भर बनाने के निर्देश दिये। बैठक में दुग्ध विकास विभाग पशुधन विभाग के प्रमुख सचिव के. रवीन्द्र नायक ने मंत्री को विभाग की योजनाओं की अद्तन स्थिति से अवगत कराया और आश्वस्त किया कि उनसे प्राप्त दिशा-निर्देशों का अक्षरशः अनुपालन सुनिश्चित किया जायेगा।

एआईएमआईएम के कई नेता व कार्यकर्ता कांग्रेस में शामिल

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की नीतियों एवं उसकी समावेशी विचारधारा प्रेरित होकर जनपद संभल से शहर कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष तौकरी अहमद एवं कांग्रेस कार्यकर्ता मुशांर खां तरीन के नेतृत्व में बड़ी संख्या में एआईएमआईएम पार्टी नेताओं एवं कार्यकर्ताओं ने प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय पर प्रदेश अध्यक्ष अजय राय के समक्ष कांग्रेस पार्टी की प्राथमिक सदस्यता ग्रहण की। इस मौके पर प्रदेश कांग्रेस उपाध्यक्ष, प्रभारी प्रशासन दिनेश सिंह तथा प्रदेश उपाध्यक्ष विश्वविजय सिंह भी मौजूद रहे। इसी क्रम में आज जनपद सीतापुर से सेवानिवृत्त वरिष्ठ अधिकारी त्रिभुवन सिंह ने भी कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण की।

पायनियर
नई दिल्ली, मंगलवार, 10 सितम्बर, 2024

आवास दिलाने के नाम पर धोखाधड़ी कर लाभार्थियों से रिश्वत लेने का मुकदमा दर्ज

● लाभार्थियों ने बरौर थाने में दर्ज कराई एफआईआर

● किसी भी व्यक्ति द्वारा आवास दिलाने के नाम पर यदि पैसे की मांग की जा रही है तो तत्काल करें सूचित

कानपुर देहात। डीएम आलोक सिंह के निर्देशन में परियोजना निदेशक वीरेंद्र सिंह ने बताया कि सीता पत्नी राजचन्द, गुड्डी पत्नी अरविन्द, सन्तोष पुत्र लल्लू प्रसाद, शंकर पुत्र महावीर आदि निवारी ग्राम बरौर, थाना बरौर, तहसील भोगनीपुर ने अपने प्रार्थना पत्र के माध्यम से 20.08.2024 को डीएम से मिल कर यह अवगत कराया कि ग्राम नवीपुर, थाना अकबरपुर, कानपुर देहात निवासी मोहित तिवारी पुत्र जयराम द्वारा षड्यन्त्र कर प्रार्थीगणों को आवास दिलाने के नाम पर धोखाधड़ी कर सीता से रूण् 10000, गुड्डी से 22000 संतोष से 12000 शंकर से 15000 करूणेन्द्र से 14000 जगदीश से 10000 एवं गीता से 22000 रूपये नकद तथा कुछ ऑनलाइन पैसे लिये इस प्रकार कुल लगभग 105000 रूपये हड़प लिये और मांगने पर या कहीं शिकायत करने पर प्रार्थीगण व उनके परिवार को जान से मारने की धमकी दी गयी है।

उक्त शिकायत की जांच खण्ड विकास अधिकारी मलासा को सौंपी गयी। जांच में शिकायतकर्ता द्वारा अपने अपने लिखित बयान में मोहित तिवारी निवासी नवीपुर, अकबरपुर को पैसे दिये जाने की बात स्वीकार की एवं मोहित तिवारी के मोबाइल नंण् 8887832883 पर किये ऑनलाइन किये कुछ ट्रान्जेक्शन का स्क्रीन शाट भी उपलब्ध कराये। मोहित तिवारी से उससे दिये पते से और न ही उसके मोबाइल के माध्यम से कोई सम्पर्क हो पाया है। डीएम के निर्देशनुसार लाभार्थीगणों द्वारा बरौर में मोहित तिवारी निवासी नवीपुरए अकबरपुरए कानपुर देहात के विरुद्ध प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज करायी गयी है। वर्तमान में प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण 2024.29 के अन्तर्गत आवास विहीन/कच्चे घरों में निवास करने वाले परिवारों के सर्वे का कार्य चल रहा है। यह कार्य संबंधित ग्राम के सचिव के माध्यम से किया जा रहा है। किसी भी व्यक्ति द्वारा आवास दिलाने के नाम पर यदि पैसे आदि की मांग की जा रही है तो तत्काल इसकी शिकायत विकास खण्ड पर खण्ड विकास अधिकारी से एवं जिलास्तर पर परियोजना निदेशक, जिला ग्राम्य विकास अभिकरण से करने का कष्ट करें।

नील गाय की टक्कर से बाइक सवार युवक की मौत

मृतक की फाइल फोटो

मौदहा हमीरपुर। नीलगाय से बाइक सवार की टक्कर हो जाने पर युवक की मौत हो गई वहीं ग्रामीणों ने युवक इलाज हेतु कस्बे के सरकारी अस्पताल लेकर गए जहां चिकित्सकों ने देखते ही युवक को मृत घोषित कर दिया कोतवाली पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पीएम के लिए भेज दिया। प्राप्त जानकारी के अनुसार भवानी गांव निवासी संजय 24 वर्ष पुत्र ओमना दूध बेचने का काम करता था रोज की भाति वह भवानी गांव से दूध लेकर कस्बा मौदहा दूध बेचने के लिए जाते समय भवानी गहबरा के बीच नदी के रफ्तार के साथ अचानक नीलगाय बीच सड़क में आ गई और बाइक सवार से टक्कर हो गई जिससे बाइक सवार सड़क पर गिर तड़पता रहा वहां से निकल रहे रायगीरो ने ग्रामीणों को सूचना देकर बताया आनंन.फानन परिजनों ने कस्बे के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र लेकर गए जहां चिकित्सकों ने देखते ही मृत घोषित कर दिया मृतक तीन भाई एक बहन में सबसे बड़ा था दूध बेचकर परिवार का बड़ा पोषण कर रहा था मौत की खबर सुनते ही परिजनों में को राम मच गया और गांव में शोक की धार दौड़ गई मृतक के भाई अजय ने बताया सोमवार की शाम नीलगाय से टकरा जाने से भाई की मौत हो गई जिसका पोस्टमार्टम हो रहा है। वहीं कोतवाली प्रभारी राम आसरे सरोज बताया कि शव को कब्जे में लेकर पीएम के लिए भेज दिया गया है।

राजस्व की बेसिक कड़ी हैं लेखपालः सी. इन्दुमती

● डीएम ने नवनियुक्त राजस्व लेखपालों के प्रशिक्षण का किया शुभारंभ

फतेहपुर। वर्ष 2022 में नवनियुक्त/चयनित राजस्व लेखपालों के प्रशिक्षण कार्यक्रम का सरदार वल्लभ भाई पटेल प्रेक्षागृह में जिलाधिकारी सी. इंदुमती ने मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्जवलित कर शुभारंभ किया। जिलाधिकारी ने नवनियुक्त राजस्व लेखपालों से कहा कि आपका पद बहुत ही महत्वपूर्ण है। अपने पदेन दायित्वों का निर्वहन निष्पक्ष होकर नियमानुसार करें। उन्होंने कहा कि तकनीकी ज्ञान को सीखें जिससे कार्य को करने में काफी सहूलियत मिलेगी। नक्शा, नाप व पैमाइश आदि का कार्य अच्छे से सीख लें जिससे कार्य करने में कोई कठिनाई न आए। प्रशिक्षण इसलिए कराया जाता है कि कार्य करने की बेसिक चीजो की जानकारी सही से हो सके जिससे दायित्वों का निर्वहन करने में कोई समस्या न आए। उन्होंने राजस्व संहिता के अंतर्गत धारा-24, 116, 38, 67 आदि पर प्रकाश डाला और नवनियुक्त राजस्व लेखपालों से संवाद भी किया। मुख्य विकास अधिकारी पवन कुमार मीना ने राजस्व लेखपालों के कार्यों पर प्रकाश डाला। प्रधानाचार्य लेखपाल प्रशिक्षण विद्यालय/तहसीलदार सदर विजय प्रताप सिंह ने नवनियुक्त राजस्व लेखपालों को प्रशिक्षण में उनके कार्यों को विस्तार से बिंदुवार बताय प्रभारी अधिकारी लेखपाल प्रशिक्षण विद्यालय/अपर जिलाधिकारी अविनाश त्रिपाठी ने प्रशिक्षण में डीएम व सीडीओ के मार्गदर्शन व सारगर्भित उद्बोधन के लिए धन्यवाद व आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर अपर जिलाधिकारी (न्यायिक) धीरेन्द्र प्रताप, उप जिलाधिकारी सदर, बिंदकी, खागा, प्रशिक्षण के नोडल अधिकारी, पर्यवेक्षक, अपर उप जिलाधिकारी अभिनीत कुमार, समस्त तहसीलदार, नवनियुक्त राजस्व लेखपाल उपस्थित रहे।

तीस बीघा आरक्षित जमीन पर अतिक्रमण, शासन से शिकायत

फतेहपुर। नगर पालिका परिषद सदर के मोहल्ला खंभापुर में तालाब, खलिहान, पशुचर, वृक्षारोपण एवं खेल के मैदान आदि की लगभग 30 बीघा आरक्षित जमीन पर दबंगों ने इमारतें खड़ी करके अतिक्रमण कर रखा है। जिसकी शिकायत शासन स्तर पर की गई है। शिकायतकर्ता नरेंद्र श्रीवास्तव ने शासन को भेजे गए प्रार्थना पत्र में बताया कि राजस्व अभिलेखों में नगर पालिका परिषद के मोहल्ला खंभापुर में तालाबी खाता संख्या 00157 के चार गाटा में क्रमशः गाटा संख्या 15 रकबा 0.1620 हे., गाटा संख्या 25 रकबा 0.9310 हे. गाटा संख्या 142 रकबा, 0.5180 हे., गाटा संख्या 183 रकबा 0.1130 हे. कुल रकबा लगभग 1.724 हे. है। खलिहान खाता संख्या 00161 गाटा संख्या 200 रकबा 0.7930 हे. एवं गाटा संख्या 204 रकबा 0.4050 हे. कुल रकबा 1.158 हेक्टेयर पशुचर खाता संख्या 00154 गाटा संख्या 183 रकबा 0.4050 हेक्टेयर गाटा संख्या 230 रकबा 0.2190 हेक्टेयर, गाटा संख्या 281 रकबा 0.4690 कुल रकबा 1.093 वृक्षारोपण खाता संख्या 00153 गाटा संख्या 208 रकबा 0.7430 हेक्टेयर वही खेल का मैदान खाता संख्या 00163 गाटा संख्या 253 रकबा 0.2020 हेक्टेयर सरकारी आरक्षित जमीनों का कुल रकबा 4.9600 हेक्टेयर यानी लगभग 30 बीघा है जिसे मोहल्ले के ही दबंग किस्म के लोग राजस्व कर्मचारी एवं अधिकारियों की मिलीभगत से घरों का निर्माण करा कर अतिक्रमण कर लिए हैं। जिससे कागजों तक सीमित तालाब, खलिहान, पशुचर, वृक्षारोपण एवं खेलकूद के मैदान की जमीन में विकसित आबादी लोगों का जीना दुश्वार कर दिया है। उन्होंने शिकायती पत्र में कहा कि खंभापुर मोहल्ले के उपरोक्त अतिक्रमित लगभग 30 बीघा जमीन को अतिक्रमण मुक्त कराकर उक्त आरक्षित भूमि का वास्तविक स्वरूप में लाकर विकसित किया जाए।

एंटी करप्शन टीम ने लोनिवि के जेई को दस हजार की रिश्वत लेते हुये दबोचा

हमीरपुर। हमीरपुर जिले के स्थानीय लोनिवि परिसर में सोमबार को ठेकेदार द्वारा दस हजार रुपये रिश्वत लेते हुये एंटी करप्शन टीम बांदा ने रंगे हाथों गिरफ्तार कर लिया है। इस कार्यवाही से कर्मियो में हडकंप मच गया है। लोनिवि खंड दो का अवर अभियंता (जेई) रमेश गुप्ता नगर पंचायत सुमेरपुर में संबद्ध था, सुमेरपुर निवासी ठेकेदार ने विकास कार्य कराने के बाद सिक्योरिटी निकालने के लिये ठेकेदार को कई महीनों से घुमा रहा था। ठेकेदार ने पुलिस को बताया कि उसने इस मामले की शिकायत 29 अगस्त को नगर पालिका सुमेरपुर के ईओ से की थी,तीन सितम्बर को नगर पंचायत का लिपिक सिक्योरिटी निकासी को लेकर जेई से रिपोर्ट मांगी थी। सिक्योरिटी निकलवाने को लेकर अवर अभियंता से बीस हजार रुपये मांगे थे। बगैर कमीशन लिये जेई सिक्योरिटी निकालने को तैयार नही था. ठेकेदार ने छह सितम्बर को इस मामले की

पुलिस की गिरफ्त में जेई

शिकायत एंटी करप्शन टीम बांदा से की थी। टीम ने कमीशन खोर अवर अभियंता को दवोचने का ताना बाना बुना। ठेकेदार ने बताया कि जेई को दस हजार रुपये पहले देने की बात कही और वह मान गया। दो बजे टीम ने रुपये लेते जेगी रमेश गुप्ता को दबोच लिया और कोतवाली हमीरपुर में लिखापढ़ी कर जेई व ठेकेदार को अपने साथ बादा ले गयीहै। इस कार्यवाही से लोनिवि मेंहड़कंप मच गया है।

हर ठेकेदार को किया जाता है परेशान एमआई के हाल सबसे बद्तर

हमीरपुर। ठेकेदारों की सिक्योरिटी वापस करने में हर कार्यदायी संस्था मे विवाद होता रहता है। नियमानुसार कोई काम संपन्न होने के बाद उसमे जो दस फीसदी सिक्योरिटी जमा करायी जाती है उसे विभाग के एक्शियन को अपने आप सिक्योरिटी वापस करने का शासनादेश है मगर जब तक ठेके दार से एक्शियन पैसा नही ले लेता है तब तक उसे सिक्योरिटी वापस नही करता है यही नही सबसे ज्यादा खराब स्थिति लघुसिचाई विभाग की बतायी जाती है यहा पर पांच साल व्यतीत जाने के बाद करीब आधा दर्जन ठेकेदारों की सिक्योरिटी वापस नही की गयी है। यदि जांच करा ली जाये तो हर कार्यदायी संस्था के एक्शियन सिक्योरिटी के नाम पर ठेकेदारों को प्रताड़ित करते है। बहुत ही जल्द ही इसी प्रकार की पुनरावृत्ति लघु सिचाई विभाग में होने वाली है ठेकेदारों ने पूरा ताना बाना तैयार कर लिया है। केवल बाउन्ड्री के बाहर गेंद जाने का इंतजार किया जा रहा है।

खराब कन्टेनर में कन्टेनर ने मारी टक्कर मैकेनिक की मौत

फतेहपुर। हुसैनगंज थाना क्षेत्र के चंदनापुर गांव निवासी राम शिरोमणि का 40 वर्षीय पुत्र राजेश कुमार ट्रक मैकेनिक है और लोधीगंज के समीप कारखाना खोले है। बताते हैं कि रात नौ बजे ओवर ब्रिज के ऊपर कन्टेनर बिगड़ जाने पर अपने साथी रईस पुत्र मदार बक्श 30 वर्ष निवासी पीरनपुर थाना कोतवाली सदर को साथ लेकर कन्टेनर को ठीक कर रहा था। इसी दौरान सामने से तेज रफ्तार आ रहे कन्टेनर ने टक्कर मार दिया जिससे खराब कन्टेनर बैक हो गया जिसकी चपेट में आकर राजेश की घटनास्थल पर ही मौत हो गई। वहीं रईस गंभीर रूप से घायल हो गया। घटना के बाद भाग रहे चालक को पुलिस ने वाहन सहित हिरासत में ले लिया है। उधर घायल को उपचार के लिए जिला चिकित्सालय लाया गया जहां उसकी हालत गंभीर देखते हुए कानपुर मेडिकल कालेज के लिए रेफर कर दिया जहां वह जिंदगी और मौत के बीच संघर्ष कर रहा है।

क्विक न्यूज

अपर एसपी और दो क्षेत्राधिकारियों समेत करीब तीन दर्जन पीपीएस अफसर इधर से उधर

बांदा। उत्तर प्रदेश शासन की तबादला एक्सप्रेस एक बार फिर फर्राटा भरने लगी है। बांदा जिले के अपर एसपी और दो क्षेत्राधिकारियों समेत करीब तीन दर्जन पीपीएस अफसर इधर से उधर किए गए हैं। शासन स्तर से बांदा के अपर एसपी लक्ष्मी निवास मिश्रा का तबादला भ्रष्टाचार निवारण संगठन लखनऊ के लिए कर दिया गया है। बता दें कि अपर एसपी लक्ष्मी मिश्र बांदा जनपद में करीब तीन साल से तैनात थे। जबकि बरेली में अपर पुलिस अधीक्षक यातायात रहे शिवराज को यहां का अपर पुलिस अधीक्षक बनाया गया है। फतेहपुर जनपद के मूल निवासी शिवराज 2001 बैच के पीपीएस अफसर हैं। शिवराज ने सिविल इंजीनियर से बैचलर आफइंजीनियरिंग की पढ़ाई की है। आपको बताते चलें कि अपर पुलिस अधीक्षक बांदा शिवराज साइबर क्राइम पर दो बड़ी.बड़ी बुक्स लिखी है वह बुक्स बड़ी ही शिक्षाप्रद है किताबों को सभी को पढ़ना चाहिए आखिर साइबर क्राइम क्या है क्राइम को कैसे कंट्रोल किया जाए कैसे इन चीजों से बचा जाए आदि का उल्लेख किया गया है। अपर पुलिस अधीक्षक शिवराज जी का बताना है की मैं बरेली में यातायात व्यवस्था बड़ी ठीक.ठाक किया था बांदा में भी ऐसा लगता है कि इसे भी एक सिस्टमैटिक तरीके से करना पड़ेगा जिससे जाम से बांदा की जनता को निजात मिल सके।

ट्रैक्टर ट्राली पलटने से चाचा की दब हुई मौत, भतीजा उरई रेफर

राठ (हमीरपुर)। पनवाड़ी मार्ग स्थित बसेला सैदपुर के बीच ट्राली अनियंत्रित होकर सड़क पर पलट गई। इस हादसे में ट्राली में सवार चाचा की मौत हो गई। जबकि भतीजा गंभीर रूप से घायल हो गया। घायल को इलाज के लिए सीएचसी ले जाया गया। जहां चिकित्सक ने मेडिकल कालेज उरई रेफर कर दिया है। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। महोबकंठ थाने के दिदवारा गांव निवासी चमन ने बताया कि उसका बड़ा भाई 32 वर्षीय अमर सिंह पटेल पुत्र लक्ष्मण पारिवारिक भतीजा 21 वर्षीय प्रवेंद्र पुत्र हरी सिंह गांव के प्रताप सिंह का ट्रैक्टर भाड़े से लेकर राठ गेहूंए मटर गल्ला मंडी में बेचने आ रहे थे। तभी पनवाड़ी मार्ग स्थित बसेला सैदपुर गांव के बीच ट्रैक्टर की ट्राली अनियंत्रित होकर पलट गई। वहां मौजूद राहगीरों ने आनन.फानन में एंबुलेंस से सीएचसी ले गए। जहां चिकित्सक ने उसके भाई अमर सिंह को मृत घोषित कर दिया। जबकि प्रवेंद्र की हालत गंभीर होने पर डॉ अखिलेश सिंह ने मेडिकल कालेज उरई रेफर कर दिया है। मृतक के भाई ने बताया कि उसकी मां सोमवती के नाम दस बीघा जमीन है। उसका भाई खेती व मजदूरी कर परिवार का भरण.पोषण करता था। मृतक अपने पीछे छह वर्षीय पुत्र आरूद्ध को रोता बिलखता छोड़ गया है। पति की मौत पर पत्नी पूजा का रो रोकर बुरा हाल है।

पूरे शहर में इलेक्ट्रॉनिक ट्रैफिक सिग्नल के इशारे पर चलेंगे वाहन

फर्रुखाबाद। महानगरों की तर्ज पर अब शहर की सड़कों पर भी इलेक्ट्रॉनिक ट्रैफिक सिग्नल के इशारे पर वाहन चलेंगे। नगर में पहला ऑटोमेटिक सिग्नल लगाया जा रहें हैं। जल्द इसे संचालित भी किया जाएगा ।शहर के लाल दरवाजा, त्रिपोलिया चौक व फतेहगढ चौराहे पर लगभग 41 लाख की लागत से इलेक्ट्रॉनिक ट्रैफिक सिग्नल नगर पालिका फर्रुखाबाद के द्वारा लगाये जा रहें हैं। ट्रैफिक सिग्नल से यातायात का संचालन होगा। जिससे जाम की समस्या से काफी निजात मिलेगी। यातायात पुलिस का मानना है कि इन चौराहों पर ट्रैफिक सिग्नल लगने के बाद लोगों को जाम से राहत मिलेगा और परेशान नहीं होना पड़ेगा। पालिकाध्यक्ष पति मनोज अग्रवाल नें बताया कि लगभग 41 लाख की लागत से तीन जगह ट्रैफिक सिग्नल लगाये जा रहें है। जल्द तीनों का लोकार्पण किया जायेगा।

अनियंत्रित बाइक गिरने से तीन गंभीर, रेफर

फतेहपुर। हथगाम थाना क्षेत्र के नगराहा सरांय गांव निवासी विजय शंकर का 25 वर्षीय पुत्र रोशन अपनी 22 वर्षीय पत्नी शिवांशी और बनवारी के 18 वर्षीय पुत्र आशीष को बाइक पर बैठाकर रिश्तेदारी में हुसैनगंज थाना क्षेत्र के मकनपुर गांव गया था। वापस घर लौटते समय छिवलहा मोड के समीप बाइक मोडते समय अनियंत्रित होकर गिर गई। बाइक पर सवार तीनों लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। घटना की सूचना पर पहुंची सरकारी 108 एम्बुलेन्स ने सभी को इलाज के लिए हुसैनगंज सीएचसी पहुंचाया। जहां से सभी को जिला अस्पताल के लिए रेफर कर दिया।

संदिग्ध हालत में फांसी लगाकर दी जान

फतेहपुर। चांदपुर थाना क्षेत्र के ग्राम गौरी औरा निवासी अब्दुल हमीद के पुत्र लईक ने सोमवार की सुबह घर के अंदर कमरे में पंखे में रस्सी का फंदा डाल फांसी लगाकर आत्महत्या कर लिया। परिजनों की जब नजर पड़ी तो घर में कोहराम मच गया। पुलिस ने शव को विच्छेदन गृह भेज दिया जहां मौजूद मृतक के पिता ने पुत्र के आत्महत्या करने का कारण अज्ञात बताया है।

डीएम की अध्यक्षता में बैठक सम्पन्न

बाँदा। जिलाधिकारी नगेन्द्र प्रताप की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में आगामी ईद.ए.मिलाद/बाराबफात व गणेश महोत्सव आदि त्यौहारों को शान्तिपूर्ण एवं कुशलता पूर्वक तथा आपसी भाईचारे एवं सामाजिक सौहार्द के साथ मनाये जाने के सम्बन्ध में जिला शान्ति समिति की बैठक सम्पन्न हुई। डीएम ने कहा कि परम्परागत रूप से जो कार्यक्रम व जुलूस आदि आयोजित किये जाते रहे हैंए उसी अनुरूप शान्तिपूर्णढंग से कार्यक्रम आयोजित किये जायें। उन्होंने पुलिस एवं प्रशासन के अधिकारियों को निर्देश दिये कि जुलूस के मार्गों का निरीक्षण करते हुए आवश्यक व्यवस्थाओं विद्युत के तारों को ठीक करने तथा सड़क की मरम्मत कराये जाने के निर्देश सम्बन्धित अधिकारियों को दिये। अधिशाषी अधिकारी नगर पालिका को साफसफाई की समुचित व्यवस्था किये जाने तथा स्ट्रीट लाइट ठीक कराये जाने एवं आवारा पशुओं को बन्द कराने के निर्देश दिये।

टीएसआई ने मानक विहीन स्कूल वाहनों पर कसी नकेल

स्कूली प्रायवेट वाहन की जॉच करते टीएसआई अरशद अली।

कन्नौज। जनपद के छिबरामऊ में प्रायः देखने में आ रहा है कि स्कूल के प्रबंधक/प्राचार्य द्वारा स्कूली बच्चों को प्राइवेट वाहनों से लाने लेजाने की कार्रवाई कराई जा रही है। जिसके चलते सोमवार को टीएसआई अरशद अली ने स्कूली बसों की फिटनेस, बीमा और ड्राइविंग लाइसेंस (डीएल) व अन्य कागज़ों इत्यादि की जांच की। सोमवार को टीएसआई अरशद द्वारा वाहन चालकों को निर्धारित गति सीमा में ही वाहन चलाने के निर्देश दिए गए।

इस अभियान के तहत दोषी पाए गए कई स्कूलों के वाहनों पर चालान की कार्रवाई की गई। जांच के दौरान, टीएसआई अरशद ने स्कूली बसों के सेफ्टी मेजर्स की भी जांच की और यह सुनिश्चित किया कि सभी वाहनों में आवश्यक सुरक्षा मानकों का पालन हो रहा है। इस अभियान का उद्देश्य बच्चों की सुरक्षा को सुनिश्चित करना और स्कूली बसों की स्थिति को मानकों के अनुसार बनाए रखना है। यातायात पुलिस द्वारा की गई इस कार्रवाई से स्कूल प्रशासन और बस संचालकों को महत्वपूर्ण संदेश मिला है कि वे यातायात नियमों और सुरक्षा मानकों का पालन करें।

भाजपा विधायक सुशील शाक्य बौद्ध महोत्सव का करेंगे उद्घाटन 16, 17 सितम्बर को

फर्रुखाबाद। संकिसा में 16,17 अक्टूबर को आयोजित बौद्ध महोत्सव का उद्घाटन भाजपा विधायक सुशील शाक्य करेंगे। आज धम्मालोंको बुद्ध विहार में सेवा ट्रस्ट के अध्यक्ष कर्मवीर शाक्य की अध्यक्षता में बैठक हुई। जिसमें सर्व सम्मति से अनेकों निर्णय लिए गए। महोत्सव के संयोजक व संरक्षक कर्मवीर शाक्य व विधायक सुशील शाक्य होंगे। सांसद देवेश शाक्य उर्फ बिल्लू, बौद्ध गुरु डॉ भंते धम्मपाल थैरो, नागेंद्र शाक्य व अघौनापुर के सुरेश चंद्र को महोत्सव का सह संयोजक बनाया गया।16 अक्टूबर को दोपहर 12 बजे भाजपा विधायक सुशील शाक्य टीन शेड के सभागार में महोत्सव का उद्घाटन करेंगे। प्रमुख वक्ताओं में सांसद देवेश शाक्य उर्फ बिल्लू, सांसद चंद्रशेखर रावण, पूर्व स्वामी प्रसाद मौर्य एवं प्रोफेसर लक्ष्मण यादव के नाम तय किए गए। 16 अक्टूबर को रात 11 बजे से सुबह 4 बजे तक गीतों भरी शाम व नाटकों का आयोजन किया जाएगा।

भिक्षु सम्मेलन का संचालन भिक्षु धम्मपाल थैरो व भिक्षु धम्म कीर्ति करेंगे। सांस्कृतिक कार्यक्रमों के संचालन की जिम्मेदारी श्याम सुंदर बौद्ध को दी गई। 17 अक्टूबर को सुबह 7 बजे धम्मालोंको बुद्ध विहार से धम्म यात्रा बौद्ध स्तूप के लिए रवाना होगी। सुबह 10.30 के बाद मुख्य पंडाल में कार्यक्रमों की शुरुआत होगी। दोपहर 1 बजे से 4 बजे तक भिक्षु सम्मेलन का आयोजन होगा। इसी दौरान भिक्षुओं को भोजन दान किया जाएगा। मंच के संचालन की जिम्मेदारी सह संयोजक नागेंद्र शाक्य एवं प्रधान अनंगपाल कुशवाहा को सौंपी गई।

बौद्ध महोत्सव आयोजन समिति के पदाधिकारियों को 16 अक्टूबर को सुबह 10 बजे कार्यक्रम स्थल पहुंचना होगा। जो 18 अक्टूबर को सुबह 10 बजे के बाद ही अपने घरों के लिए रवाना होंगे। यदि कोई सदस्य पूर्व में चला जाता है तो उसको अगले कार्यक्रम में कोई जिम्मेदारी नहीं दी जाएगी। बैठक में एटा के सांसद देवेश शाक्य उर्फ बिल्लू को आमंत्रित किया गया था जिनके स्वागत की भी तैयारी की गई थी। ऐन वक्त पर उन्होंने कार्यक्रम में आने से मना कर दिया। सांसद शाक्य की गैर मौजूदगी में उन्हें महोत्सव का सहसंयोजक बनाया गया। दशकों से महोत्सव का संचालन करने वाले शिवशरन शाक्य का इस वार पत्ता साफ कर दिया गया। महोत्सव के जिम्मेदार लोग 16 अक्टूबर को सुबह ही चले जाते हैं। बैठक में आरोप प्रत्यारोप के कारण विवाद की स्थिति रही। बैठक में डा धर्मपाल थैरो, नागेंद्र शाक्य प्रबंधक राहुल शाक्य उपप्रबंधक रघुवीर शाक्य डॉ देवेश शाक्य सुधीर शाक्य एडवोकेट आदि लोग मौजूद रहे। महोत्सव आयोजन समिति की अगली बैठक 29 सितंबर को बुद्ध विहार में होगी।

खीरी में नवनियुक्त 122 लेखपालों की ट्रेनिंग शुरू, डीएम ने किया शुभारंभ

● राजस्व कार्यों में लेखपाल महत्वपूर्ण कड़ीः जिलाधिकारी

लखीमपुर खीरी। जनपद खीरी में सोमवार को नवनियुक्त लेखपालों की राजस्व कार्यों की ट्रेनिंग शुरू हुई। प्रशिक्षण केंद्र जीआईसी में डीएम दुर्गा शक्ति नागपाल ने एडीएम संजय कुमार सिंह, एसडीएम सदर अश्विनी कुमार सिंह के साथ मां सरस्वती के चित्र पर पुष्प अर्पित कर और दीप जलाकर ट्रेनिंग का शुभारंभ किया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन करने के बाद डीएम दुर्गा शक्ति नागपाल ने नवनियुक्त लेखपालों को उनके जीवन में इस नई शुरुआत की कामयाबी के लिए शुभकामनाएं दीं। कहा कि वह स्वयं सप्ताह में एक बार प्रशिक्षण कार्यक्रम में मौजूद रहकर नवनियुक्त लेखपालों द्वारा हासिल किये जा रहे प्रशिक्षण के बारे में फीड बैक लेंगी। उन्होंने लेखपालों को राजस्व से संबंधित उनके कार्यकलापों और जिम्मेदारियों की विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने कहा कि पूरे लगन से प्रशिक्षण हासिल करें ताकि अपनी ड्यूटी के दौरान किसी भी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पडे।

डीएम ने कहा कि लेखपाल राजस्व सेवा की महत्वपूर्ण कड़ी हैं। आज लेखपाल के दायित्व काफी बढ़ गए हैं। इसलिए नवनियुक्त सभी लेखपाल इस सेवा को जनसेवा का ध्येय बनाकर अपने दायित्वों को पूरी निष्ठा, मेहनत और ईमानदारी से निर्वहन करने का संकल्प लें। तभी हम जनता की समस्याओं का समाधान करने के साथ ही शासन की मंशा पर खरे उतर सकते हैं।

एडीएम संजय कुमार सिंह ने कहा कि सभी नए लेखपालों को फील्ड की बारीकियों से अवगत कराने के लिए ट्रेनिंग दी जा रही है। ट्रेनिंग के जरिए नवचयनित लेखपाल राजस्व विभाग के नियम कानून के साथ ही फील्ड का ज्ञान प्राप्त करेंगे। राजस्व का कार्य अपने आप मे अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य है। इस कार्य के ससमय निष्पादन के प्रयास किए जाने चाहिए। उन्होंने नवचयनित लेखपालों को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना भी की। कार्यक्रम के अंत में उप जिलाधिकारी सदर अश्विनी कुमार सिंह ने आभार ज्ञापित किया।

बताते चलें कि जिले में 122 नवनियुक्त लेखपालों की 02 बैच में ट्रेनिंग शुरू हुई है। पहले बैच के 61 लेखपाल प्रशिक्षण केंद्र में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। इसके बाद वह फील्ड में प्रशिक्षण प्राप्त करेंगे। वही दूसरे बैच के 61 लेखपालो का फील्ड में आज से ही प्रशिक्षण शुरू हुआ है। इसके बाद वह प्रशिक्षण केंद्र में प्रशिक्षण प्राप्त करेंगे। इस दौरान उप जिलाधिकारी सदर अश्विनी कुमार सिंह, जीआईसी प्रधानाचार्य डॉ जगत प्रकाश सिंह, सहायक भूलेख अधिकारी अवधनरेश सिंह, नायब तहसीलदार सुनील कुमार, दिनेश कुमार, सुरभि गौतम आदि राजस्व कार्मिक मौजूद है।

भाकियू की बैठक में जोनल अध्यक्ष ने की समीक्षा

गुरसहायगंज (कन्नौज)। भारतीय किसान यूनियन की समीक्षा बैठक में जोनल अध्यक्ष बैजनाथ अवस्थी का जिलाध्यक्ष शमीम सिद्दीकी के नेतृत्व में जोरदार स्वागत किया गया। समीक्षा बैठक में जोनल अध्यक्ष ने बिंदु बार चर्चा के उपरांत लापरवाह पदाधिकारियों की क्लास ली उन्होंने ब्लॉक तहसील एवं जिले के पदाधिकारियों को संगठन के प्रति निष्ठा एवं ईमानदारी का पाठ पढ़ाया। सोमवार को आयोजित भाकियू टिकैत की समीक्षा बैठक में जोनल अध्यक्ष बैजनाथ अवस्थी ने अपने संबोधन में कहा कि प्रदेश एवं केंद्र सरकार किसानों को कभी सब्सिडी के नाम पर कभी एमएसपी के नाम पर कभी बिजली माफी को लेकर गुमराह करती चली आ रही है। राष्ट्रीय नेतृत्व बहुत जल्द ही केंद्र एवं प्रदेश सरकारों के विरुद्ध आंदोलन की रूपरेखा तय कर रही है। जिलाध्यक्ष शमीम सिद्दीकी ने कहा कि हम उस देश के किसान हैं जहां का किसान अपना पसीना बहाकर अपने खेतों में सोना पैदा कर सकता है।

एसीएफके माध्यम से जिले भर में टीबी रोगियों को खोजेगा स्वास्थ्य विभागः सीएमओ

लखीमपुर खीरी। शासन के निर्देश पर एक्टिव केस फइन्डिग एसीएफ कार्यक्रम 09 सितम्बर दिन सोमवार शुरू हो गया है। जिसके अन्तर्गत 10 दिनों तक चलने वाले अभियान में टीम बनाकर टीबी के रोगियों की खोज की जायेगी। अभियान को सफल बनाने के लिए जिला टीबी अस्पताल सहित सभी सीएचसी के अन्तर्गत टीमों का गठन भी कर दिया गया है। सीएमओ डॉ सन्तोष गुप्ता ने बताया कि एक्टिव केस फइन्डिग कैम्पेन के लिए जनपद में लक्षित क्षेत्र चयनित किये गये है, जिनमें मलीन बस्तियॉ, हाई रिस्क जनसंख्या वाले क्षेत्रए अनाथालय, वृद्वाआश्रम, नारी निकेतनए बाल संरक्षण गृह, मदरसा, नवोदय विद्यालय, कारागार, चिन्हित समूह (सब्जी मण्डी, फल मण्डी व लेवर मार्केट) निर्माणाधीन प्रोजेक्ट के स्थान ईट भत्ते, स्टोन क्रेशर, खदान सहित साप्ताहिक मार्केट बाजार इत्यादि शामिल हैं। जिनकी रिपोर्ट निक्षय पोर्टल पर भी अपलोड की जायेगी। जनपद में सम्पूर्ण कार्यक्रम 20 सितम्बर तक जिला क्षय रोग अधिकारी डॉ अनिल कुमार गुप्ता के नेतृत्तव में चलाया जायेगा। जनपद में संचालित कार्यक्रम में 289 टीम में लगाई गई हैं। मॉनिटरिंग के लिए 58 सुपरवाइजर व 22 सेक्टर सुपरवाइजर लगाए गए। वहीं जिला स्तरीय मानिटरिंग के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों के अनुसार एसीएमओ व डिप्टीसीएमओ को मानीटरिंग की जिम्मेदारी सौपी गयी है। जिसमें एसीएमओ डॉ अनिल कुमार गुप्ता को पसंगवा, मोहम्मदी, बाकेगंज व गोला की मानीटरिंग का जिम्मा सौपा गया है तो वहीं एसीएमओ डॉ सत्य प्रकाश मिश्रा को रमियाबेहड़, धौरहरा नकहा व ईसानगर, डिप्टी सीएमओ डॉ लाल जी पासी को बिजुआ व फूलबेहड, डिप्टीसीएमओ डॉ अमितेश दत्त द्विवेदी को लखीमपुर नगर क्षेत्र व फरधानए डिप्टी सीएमओ डॉ प्रमोद कुमार को बेहजम व मितौली, डिप्टी सीएमओ डॉ अमित कुमार सिह को पलिया व निधासन की मानीटरिंग दी गयी है। सभी सीएचसी से निर्धारित प्रारूप पर मुख्यालय को रिपोर्टिंग की जायेगी जिसके बाद यह रिपोर्ट शासन को भेजी जायेगी।

क्या हैं टीबी के लक्षण

02 सप्ताह से अधिक खासीए 02 सप्ताह से अधिक बुखार बलगम से खून आना ए भूख में कमी ए वनज का कम होनाए रात में पसीना आनाए गले में गाठ का होनाए महिलाओं में बाझपन की समस्या इत्यादि शामिल है।

प्रधानमंत्री मोदी पर टिप्पणी

मानहानि मामले में थरूर की याचिका पर विचार करेगा कोर्ट

नई दिल्ली। (भाषा) उच्चतम न्यायालय ने दिल्ली उच्च न्यायालय के एक फैसले के खिलाफ कांग्रेस सांसद शशि थरूर की याचिका को मंगलवार को सूचीबद्ध करने पर विचार किए जाने पर सहमति व्यक्त की है। दिल्ली उच्च न्यायालय ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को निशाना बनाकर कथित तौर पर की गई शिवलिंग पर बिच्छू संबंधी थरूर की टिप्पणी को लेकर उनके खिलाफ मानहानि की कार्यवाही रद्द करने से इनकार कर दिया था। प्रधान न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड़ के नेतृत्व वाली शीर्ष अदालत की पीठ ने सोमवार को शाम छह बजे तक सुनवाई की, जबकि सामान्यत: शाम चार बजे तक ही सुनवाई की जाती है। पीठ से एक वकील ने अनुरोध किया कि याचिका पर मंगलवार को सुनवाई की जाए, अन्यथा कांग्रेस नेता को उसी दिन निजी मानहानि शिकायत के संबंध में दिल्ली की एक अदालत में पेश होना पड़ेगा। वकील ने कहा, यह अत्यावश्यक है। हम इसे कल सूचीबद्ध किए जाने का अनुरोध करते हैं। दिल्ली उच्च न्यायालय ने (थरूर का) मामला रद्द कर दिया था।

प्रधान न्यायाधीश ने कहा, बस ईमेल भेजिए। मैं अभी इसकी पड़ताल करूंगा। दिल्ली उच्च न्यायालय ने 29 अगस्त को थरूर के खिलाफ मानहानि की कार्यवाही रद्द करने से इनकार कर दिया था। इसने कहा था कि प्रथम दृष्टया, प्रधानमंत्री के खिलाफ शिवलिंग पर बिच्छू जैसे आरोप घृणित एवं निंदनीय हैं। उच्च न्यायालय ने कहा था कि प्रथम दृष्टया, टिप्पणी से प्रधानमंत्री, सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के साथ-साथ इसके पदाधिकारियों और सदस्यों की मानहानि हुई है। निचली अदालत में लंबित मानहानि की कार्यवाही को रद्द करने का अनुरोध करने वाली थरूर की याचिका को खारिज करते हुए उच्च न्यायालय ने कहा था कि न्यायिक मजिस्ट्रेट के समक्ष भारतीय दंड संहिता की धारा 500 (मानहानि के लिए दंड) के तहत उन्हें तलब करने के लिए पर्याप्त सामग्री मौजूद है। उच्च न्यायालय ने 16 अक्टूबर, 2020 को मानहानि की शिकायत में केरल के तिरुवनंतपुरम से कांग्रेस सांसद के खिलाफ आपराधिक कार्यवाही पर अंतिरम रोक लगा दी थी। बाद में, इसने अंतरिम आदेश को हटाते हुए संबंधित पक्षों को मंगलवार (10 सितंबर) को निचली अदालत में पेश होने का निर्देश दिया था। इसने कहा था कि इस बात को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता कि एक राजनीतिक दल के विधाई प्रमुख और भारत के प्रधानमंत्री के खिलाफ आरोप का उस दल, उसके पदाधिकारियों तथा संबंधित सदस्यों की छवि पर महत्वपूर्ण असर पड़ता है, और यह व्यवस्था के लिए भी अच्छा संकेत नहीं है, क्योंकि इसका असर चुनावी प्रक्रिया पर भी पड़ता है। उच्च न्यायालय ने कहा था, प्रथम दृष्टया, वर्तमान प्रधानमंत्री के खिलाफ लगाए गए आरोप घृणित और निंदनीय हैं तथा भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की मानहानि करने के अलावा, भारतीय जनता पार्टी तथा इसके पदाधिकारियों और सदस्यों की भी मानहानि करते हैं।

सूरत में गणेश पंडाल पर पथराव के बाद हिंसा, 34 लोग हिरासत में

भाषा। सूरत

गुजरात के सूरत शहर में गणेश उत्सव के दौरान कुछ नाबालिगों द्वारा एक पंडाल पर कथित तौर पर पथराव किए जाने के कारण वहां स्थापित गणेश मूर्ति खंडित हो गई, जिसके बाद क्षेत्र में हिंसा भड़क गई और कुछ पुलिसकर्मी सहित अन्य लोग घायल हो गए। पुलिस ने सोमवार को यह जानकारी दी। पुलिस ने बताया कि रविवार देर रात सैयदपुरा में घटी इस घटना के सिलसिले में छह नाबालिगों को हिरासत में लिया गया था, जिसके बाद करीब 300 लोगों ने अपने समुदाय के सदस्यों के खिलाफ कार्वाई का विरोध करते हुए लालगेट थाने का घेराव किया। सूरत के पुलिस आयुक्त अनुपम सिंह गहलोत ने संवाददाताओं से कहा कि दो तरफ से पथराव हुआ, जिसमें पुलिस कर्मियों सहित कुछ लोग घायल हो गए।

उन्होंने बताया कि लोगों के एक समूह ने क्षेत्र में खड़े दो वाहनों को आग के हवाले कर दिया और दो अन्य में तोड़फोड़ की। गहलोत ने कहा कि भीड़ को तितर-बितर करने के लिए पुलिस ने लाठीचार्ज किया और आंसूगैस के गोले छोड़े। पुलिस अधिकारियों के मुताबिक, घटना के सिलसिले में अभी तक तीन अलग-अलग प्राथमिकी दर्ज की गई हैं, 28 लोगों को गिरफ्तार किया गया है और छह नाबालिगों को हिरासत में लिया गया है। गहलोत ने बताया कि अन्य आरोपियों की धरपकड़ के लिए पुलिस तलाश अभियान चला रही है। गुजरात के गृह मंत्री हर्ष सांघवी और वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों ने घटनास्थल का दौरा किया तथा दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्वाई का भरोसा दिलाया।सांघवी ने संवाददाताओं से कहा, शहर के अमन-चैन में खलल डालने वाले हर व्यक्ति को गिरफ्तार किया जाएगा और किसी को बख्शा नहीं जाएगा। गहलोत ने कहा कि यह घटना सूरत के सांप्रदायिक रूप से संवेदनशील इलाके में हुई। उन्होंने बताया कि एक ऑटोरिक्शा में सवार 12 से 13 साल के छह उपद्रवियों ने गणेश पंडाल पर पत्थर फेंके, जिससे मूर्ति खंडित हो गई। गहलोत के अनुसार, इन नाबालिगों को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है। उन्होंने बताया कि नाबालिग आरोपियों के माता-पिता को भी पूछताछ के लिए हिरासत में लिया गया है। पुलिस आयुक्त ने कहा, नाबालिग आरोपियों को तुरंत पुलिस चौकी ले जाया गया और उनके खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की गई। उन्होंने बताया कि पुलिस ने हत्या के प्रयास, दंगा, गैरकानूनी सभा, गंभीर चोट पहुंचाना आदि अपराधों के लिए भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की विभिन्न धाराओं के तहत कुल 28 लोगों की पहचान करने और उन्हें पकड़ने के लिए सीसीटीवी फुटेज के साथ-साथ मोबाइल फोन और टीवी कैमरों की वीडियो रिकॉर्डिंग का भी सहारा लिया। गहलोत के मुताबिक, इलाके में खड़े दो वाहनों में आग लगाने और दो अन्य को नुकसान पहुंचाने के लिए व्यक्तियों के एक समूह के खिलाफ एक अन्य प्राथमिकी दर्ज की गई है। उन्होंने कहा, पुलिस ने आगजनी और संपत्ति को नुकसान पहुंचाने से संबंधित धाराओं के तहत यह प्राथमिकी दर्ज की है। गहलोत ने बताया कि पूरे इलाके की निगरानी की जा रही है और कानून-व्यवस्था बनाए रखने के लिए भारी संख्या में पुलिसकर्मी तैनात किए गए हैं।उन्होंने कहा कि मामले की जांच करने और अन्य आरोपियों को पकड़ने के लिए शहर की अपराध शाखा, विशेष अभियान समूह (एसओजी) और स्थानीय पुलिस के कर्मियों को शामिल करते हुए अलग-अलग टीमें बनाई गई हैं। गहलोत के अनुसार, दोषियों की पहचान के लिए वीडियो फुटेज खंगालने के वास्ते एक तकनीकी टीम का गठन किया गया है।

गुजरात के पुलिस महानिदेशक विकास सहाय ने गांधीनगर में पत्रकारों से बात करते हुए कहा कि 28 लोगों को गिरफ्तार किया गया है, जबकि छह नाबालिगों के खिलाफ भी कानूनी कार्वाई शुरू की गई है, जिनकी उम्र 13 से 15 साल के बीच है। उन्होंने कहा, मैं गुजरात के शांतिप्रिय लोगों को भरोसा दिलाना चाहता हूं कि सभी जिलों में गणेश उत्सव कार्यक्रम शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न हों, यह सुनिश्चित करने के लिए पुलिस पूरी तरह से तैयार है। हम राज्य के शांतिपूर्ण माहौल में खलल डालने की कोशिश करने वालों के खिलाफ सख्त कार्वाई करेंगे। सहाय ने कहा, मैं जिलों की मौजूदा स्थिति पर वहां की सभी पुलिस इकाइयों के प्रमुखों (जिला पुलिस अधीक्षक सहित) के साथ वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से एक समीक्षा बैठक करूंगा।

पिता की मौत के बाद 2,20 लाख के लिए दो भाइयों के झगड़े को हाईकोर्ट ने बताया दुर्भाग्यपूर्ण

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने पिता की मौत के बाद 2,20 लाख के लिए दो भाइयों के झगडे को दुर्भाग्यपूर्ण करार दिया और कहा हम हमेशा भगवान राम के छोटे भाई भरत के त्याग को स्मरण करते हैं। किंतु यहां छोटे भाई के अपने बड़े भाई के साथ व्यवहार ने उसे कलियुगी भरत बना दिया। कोर्ट ने कहा बड़े भाई ने पिता के संयुक्त खाते से पैसे निकाले। कोर्ट ने समझौते का प्रयास किया किंतु छोटे भाई की जिद के चलते नतीजा नहीं निकल सका। हालांकि कि रूपये का विवाद सिविल प्रकृति का है किन्तु दुर्भाग्यपूर्ण तरीके से छोटे भाई जो वकील हैं। परेशान करने के लिए आपराधिक कार्यवाही में तब्दील कर दी।कोर्ट ने बड़े भाई संजीव चड्ढा याची के खिलाफ एसीजेएम कानपुर नगर में विचाराधीन आपराधिक केस कार्रवाई को रद कर दिया और शिकायतकर्ता छोटे भाई राजीव चड्ढा पर 25 हजार रुपए हर्जाना लगाया है और चार हफ्ते में यह राशि याची को देने का निर्देश दिया है। यह आदेश न्यायमूर्ति सौरभ श्याम शमशेरी ने संजीव चड्ढा की याचिका को स्वीकार करते हुए दिया है। याचिका में आपराधिक न्यास भंग के आरोप में दाखिल पुलिस चार्जशीट व सम्मन आदेश की वैधता को चुनौती दी गई थी। मालूम हो कि पिता की मौत के बाद बड़े भाई ने संयुक्त बैक खाते से 2020 लाख निकाल लिया और पिता की वसीयत भी करा ली। जिसमें छोटे भाई को लाभ नहीं मिलना था। दबाव बनाने के लिए छोटे भाई ने बड़े भाई के खिलाफ किदवई नगर थाने में एफ़आईआर दर्ज कराई आरोप लगाया कि पैसे निकाल कर भाई ने कपट व न्यास भंग किया है। पुलिस ने केवल धारा 406 में चार्जशीट दाखिल की जिस पर संज्ञान लेकर कोर्ट ने सम्मन जारी किया था। हाईकोर्ट ने भाइयों में समझौते के लिए कई तारीख लगाई किंतु सहमति नहीं बनी। कोर्ट ने कहा कपट और फर्जी वसीयत के आरोप में चार्जशीट दाखिल नहीं की गई। शिकायतकर्ता ने परेशान करने व दबाव डालने के लिए सिविल विवाद को आपराधिक विवाद में तब्दील कर लिया।और वसीयत को अभी तक चुनौती नहीं दी है। कोर्ट ने कहा आपराधिक न्यास भंग के तत्व मौजूद नहीं है। इसलिए कोई केस नहीं बनता और पूरी केस कार्यवाही रद कर दी।

कार्यवाहक प्रधानाचार्य को पद का वेतन देने पर निर्णय लेने का आदेश

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने जिला विद्यालय निरीक्षक कानपुर नगर को याची को कार्यवाहक प्रधानाचार्य पद का वेतन देने के मामले में निर्णय लेने का निर्देश दिया है और कहा है कि तीन माह में देय वेतन की अंतर राशि का भुगतान किया जाए। यह आदेश न्यायमूर्ति सुभाष विद्यार्थी ने मधुर द्विवेदी की याचिका को निस्तारित करते हुए दिया है। याची अधिवक्ता अनुराग शुक्ल का कहना था कि याची सरस्वती बालिका विद्यालय इंटर कालेज विजय नगर कानपुर नगर की कार्यवाहक प्रधानाचार्य है। किंतु उसे प्रवक्ता का ही वेतन दिया जा रहा है। हाईकोर्ट का फैसला है कि कार्यवाहक प्रधानाचार्य पद का वेतन पाने के हकदार हैं। इसलिए याची को भी प्रधानाचार्य पद का वेतन दिलाया जाय।याची ने जिला विद्यालय निरीक्षक को प्रत्यावेदन दिया है। जिसका निस्तारण नहीं किया जा रहा है।

बरेली के कार्यवाहक प्रधानाचार्य विवाद को लेकर दाखिल प्रबंध समिति की अपील खारिज

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कालिका प्रसाद रामचंद्र कला केंद्र गर्ल्स इंटर कालेज बरेली की प्रबंध समिति की विशेष अपील खारिज कर दी है। जिससे एकल पीठ के द्वारा माध्यमिक शिक्षा निदेशक के विपक्षी अध्यापिका ममता कुमारी को कार्यवाहक प्रधानाचार्य का कार्यभार सौंपने के आदेश के खिलाफप्रबंध समिति की याचिका खारिज करने को चुनौती दी गई थी। खंडपीठ ने कहा कि एकलपीठ के आदेश में कोई अवैधानिकता नहीं है। आदेश पर हस्तक्षेप नहीं किया जा सकता।और कालेज प्रबंध समिति की अपील खारिज कर दी। यह आदेश न्यायमूर्ति एम सी त्रिपाठी तथा न्यायमूर्ति प्रशांत कुमार की खंडपीठ ने कालेज की प्रबंध समिति की अपील पर दिया है। अपील पर अधिवक्ता प्रभाकर अवस्थी व विपक्षी कार्यवाहक प्रधानाचार्य के अधिवक्ता अनुराग शुक्ल ने बहस की। मालूम हो कि विपक्षी को प्रबंध समिति ने निलंबित कर दिया और जांच बैठाई। उससे कनिष्ठ प्रवक्ता को कार्यवाहक प्रधानाचार्य का कार्यभार सौंप दिया।विपक्षी को निलंबित करने के आदेश को जिला विद्यालय निरीक्षक ने अनुमोदित करने से इंकार कर दिया और संयुक्त शिक्षा निदेशक माध्यमिक ने तीन सदस्यीय जांच कमेटी गठित की। कमेटी की रिपोर्ट पर निदेशक माध्यमिक शिक्षा ने 20 मई 24 को ज़िला विद्यालय निरीक्षक को आदेश दिया कि विपक्षी ममता कुमारी को कार्यवाहक प्रधानाचार्य बनाये और मंडलीय माध्यमिक शिक्षा निदेशक को प्रबंध समिति के खिलाफधारा 16 डी ;3द्ध के तहत जांच करने का आदेश दिया था। इस आदेश को हाईकोर्ट में चुनौती दी गई थी। जिसे एकलपीठ ने खारिज कर दिया। इस आदेश के खिलाफविशेष अपील भी हाईकोर्ट ने खारिज कर दी।

महाराष्ट्र सरकार 60 साल पहले अवैध रूप से अधिग्रहीत जमीन के बदले वैकल्पिक भूखंड दे

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने सोमवार को महाराष्ट्र प्रशासन को निर्देश दिया कि वे 24 एकड़ से अधिक वैकल्पिक भूमि का शांतिपूर्ण एवं मुक्त कब्जा एक ऐसे व्यक्ति को सौंप दें, जिसकी भूमि पर छह दशक से अधिक समय पहले अवैध कब्जा किया गया था। शीर्ष अदालत ने वन एवं राजस्व विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव राजेश कुमार की बिना शर्त माफी भी स्वीकार कर ली, जिनके खिलाफ न्यायालय ने 28 अगस्त को कारण बताओ नोटिस जारी कर पूछा था कि विभाग द्वारा दायर हलफनामे में की गई अवमाननापूर्ण टिप्पणियो के लिए उनके खिलाफ अवमानना की कार्वाई क्यों न शुरू की जाए। हलफनामे से ऐसा प्रतीत होता है कि सर्वोच्च न्यायालय कानून का पालन नही करता है। कुमार की ओर से दायर हलफनामे में कहा गया, जिसे अदालत ने अवमाननापूर्ण पाया। हलफनामे में कहा गया, आवेदक के साथ-साथ न्यायालय भी क्लेक्टर, पुणे द्वारा की गई नई गणना (आवेदक को मौद्रिक मुआवजा देने के लिए) को मंजूरी नही दे सकता है, लेकिन कानून के प्रावधानों का पालन करना और उचित गणना पर पहुंचना राज्य का कर्तव्य है। कुमार ने अपने हलफनामे में कहा कि राज्य सरकार मुआवजे के तौर पर 48.65 करोड़ रुपए देने को तैयार है। हालांकि, आवेदक ने जोर देकर कहा कि जमीन का बाजार मूल्य 250 करोड़ रुपए से अधिक है। इसके बाद आवेदक ने मुआवजे के तौर पर जमीन का एक और टुकड़ा मांगा। न्यायमूर्ति बी.आर. गवई और न्यायमूर्ति के.वी. विश्वनाथन की पीठ ने पुणे के क्लेक्टर को निर्देश दिया कि वे सुनिश्चित करें कि 24 एकड़ 38 गुंठा स्थानापन्न भूमि की माप की जाए, सीमांकन किया जाए और इसका शांतिपूर्ण और मुक्त कब्जा आवेदक को सौंप दिया जाए। इसमें कहा गया है कि यदि भूमि पर अतिक्रमण है तो उसे आवेदक को सौंपे जाने से पहले हटा दिया जाएगा। पीठ ने राज्य प्राधिकरण द्वारा दायर शपथपत्र को स्वीकार कर लिया, जिसमें कहा गया था कि भूमि का शांतिपूर्ण और मुक्त कब्जा आवेदक को सौंप दिया जाएगा।

सीडीएस जनरल चौहान ने जल-थल अभियानों के लिए संयुक्त सिद्धांत जारी किया

नई दिल्ली। प्रमुख रक्षा अध्यक्ष (सीडीएस) जनरल अनिल चौहान ने सोमवार को राष्ट्रीय सुरक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए जल-थल अभियानों के लिए एक संयुक्त सिद्धांत जारी किया। चीफ्स ऑफ स्टाफ कमेटी (सीओएससी) की बैठक में जारी किया गया यह सिद्धांत ऐसे समय में आया है, जब सरकार महत्वाकांक्षी थिएटराइजेशन परियोजना को लागू करने पर विचार कर रही है। यह महत्वपूर्ण दस्तावेज साइबर क्षेत्र परिचालन के लिए संयुक्त सिद्धांत प्रस्तुत किए जाने के लगभग तीन महीने बाद जारी किया गया। इसका उद्देश्य साइबर क्षेत्र अभियानों के संचालन में सैन्य कमांडरों का मार्गदर्शन करना है। रक्षा मंत्रालय ने कहा, एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम में चीफ ऑफ स्टाफ कमेटी (सीओएससी) की बैठक के दौरान जल-थल अभियानों के लिए संयुक्त सिद्धांत जारी किया। उसने कहा, यह सिद्धांत एक प्रमुख दस्तावेज है जो कमांडरों को वर्तमान समय के जटिल सैन्य वातावरण में जल-थल अभियानों के संचालन के लिए मार्गदर्शन प्रदान करेगा। जल-थल क्षमता सशस्त्र बलों को युद्ध और शांति, दोनों के दौरान हिंद महासागर क्षेत्र में कई तरह के सैन्य अभियान संचालित करने की शक्ति प्रदान करती है। मंत्रालय ने कहा, ए सैन्य अभियान बहु-क्षेत्रीय सैन्य परिचालनों का एक महत्वपूर्ण घटक हैं और सशस्त्र बलों के बीच सामंजस्य और एकीकरण के सबसे अच्छा उदाहरण हैं।

कोलकाता के अस्पताल की घटना को लेकर विरोध प्रदर्शन केंद्र की साजिश, वामपंथी दल भी इसमें शामिलः ममता

कोलकाता (भाषा) पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने सोमवार को आरोप लगाया कि कोलकाता के सरकारी अस्पताल में पिछले महीने एक चिकित्सक से कथित दुष्कर्म और हत्या की घटना पर जन आक्रोश को लेकर केंद्र ने साजिश रची है। उन्होंने दावा किया कि इस साजिश में कुछ वामपंथी दल भी शामिल हैं। राज्य सचिवालय नबान्न में एक प्रशासनिक समीक्षा बैठक में ममता ने यह भी दावा किया कि उन्होंने पीड़ित महिला चिकित्सक के माता-पिता को कभी पैसों की पेशकश नहीं की। उन्होंने उस अभियान को खारिज कर दिया जिसमें पीड़िता के परिवार के सदस्यों से मुआवजा स्वीकार करने का अनुरोध किया गया था। उन्होंने लोगों से दुर्गा पूजा नजदीक होने पर "उत्सवों की ओर लौटने" का अनुरोध किया। उन्होंने कहा, "अगर आप हर रात सड़कों पर रहते हैं तो बुजुर्ग लोग ध्वनि प्रदूषण के कारण नींद से वंचित रह जाते हैं। एक महीना बीत चुका है। मैं आपसे अनुरोध करती हूं कि आप उत्सवों की तरफ लौटें और मांग करती हूं कि सीबीआई जल्द से जल्द जांच पूरी करे। बंगाल की मुख्यमंत्री ने कनिष्ठ

चिकित्सकों से जल्द से जल्द काम पर लौटने का अनुरोध किया और राज्य के स्वास्थ्य सचिव एनएस निगम को इस मुद्दे पर उच्चतम न्यायालय के निर्देशों का ध्यान रखने का निर्देश दिया। इससे पहले दिन में शीर्ष अदालत ने पश्चिम बंगाल में प्रदर्शनकारी रेजिडेंट चिकित्सकों को मंगलवार शाम पांच बजे तक काम पर लौटने का निर्देश दिया और कहा कि यदि वे समय सीमा के अंदर काम पर नहीं लौटे तो वह राज्य को हड़ताल कर रहे चिकित्सकों के खिलाफ कार्वाई करने से नहीं रोकेगी। अदालत ने यह निर्देश बंगाल सरकार के उस आश्वासन के बाद दिया जिसमें कहा गया है कि काम पर लौटने पर प्रदर्शनकारी चिकित्सकों के खिलाफ दंडात्मक स्थानांतरण सहित कोई कार्वाई नहीं की जाएगी।उन्होंने आंदोलनकारी चिकित्सकों से आमने-सामने बातचीत की पेशकश करते हुए कहा, "उच्चतम न्यायालय ने आपसे काम पर लौटने का अनुरोध किया है, मैं उस अनुरोध को दोहराऊंगी। अगर आपको कुछ कहना है तो आपका हमेशा स्वागत है। आप पांच से दस सदस्यों की एक टीम बना सकते हैं और मुझसे मिल सकते हैं।" ममता ने कहा, मैंने मृतक चिकित्सक के परिवार को कभी पैसों की पेशकश नहीं की, यह बदनाम करने के अलावा और कुछ नहीं है। मैंने उनसे कहा कि अगर वे अपनी बेटी की याद में कुछ करना चाहते हैं तो हमारी सरकार उनके साथ है। मैं जानती हूं कि कब, क्या बोलना है। मुख्यमंत्री ने कहा, यह (आरजी कर घटना के बाद प्रदर्शन) निश्चित रूप से केंद्र की साजिश है और कुछ वामपंथी दल भी इसमें शामिल हैं। कुछ लोग पड़ोसी देश में उथल-पुथल का फायदा उठा रहे हैं।

ऋण घोटाला मामले में धीरज वधावन को जमानत

नई दिल्ली। दिल्ली उच्च न्यायालय ने करोड़ों रुपए के बैंक ऋण घोटाला मामले में डीएचएफएल के पूर्व प्रवर्तक धीरज वधावन को सोमवार को जमानत दे दी। न्यायमूर्ति सुधीर कुमार जैन ने वधावन की जमानत अर्जी स्वीकार करते हुए कहा कि वह बीमार व्यक्ति की श्रेणी में आते हैं। इस मामले में वधावन बंधुओं-कपिल और धीरज-को पिछले साल 19 जुलाई को गिरफ्तार किया गया था। दोनों के खिलाफ आरोपपत्र 15 अक्टूबर 2022 को दाखिल किया गया था।मामले में यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की एक शिकायत के आधार पर प्राथमिकी दर्ज की गई थी। प्राथमिकी में आरोप लगाया था कि डीएचएफएल, हाउसिंग फाइनेंस कंपनी के तत्कालीन अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक कपिल वधावन, तत्कालीन निदेशक धीरज वधावन और अन्य आरोपियों ने यूनियन बैंक ऑफ इंडिया के नेतृत्व वाले 17 बैंकों के कंसोर्टियम को धोखा देने के लिए आपराधिक साजिश रची थी। इसमें कहा गया था कि आपराधिक साजिश के तहत आरोपियों और अन्य लोगों ने कंसोर्टियम को 42,871.42 करोड़ रुपए का ऋण स्वीकृत करने के लिए प्रेरित किया। केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) ने दावा किया है कि डीएचएफएल के बहीखातों में कथित हेराफेरी और कंसोर्टियम बैंकों के वैध बकाया के पुनर्भुगतान में चूक कर उस राशि का अधिकतर हिस्सा कथित तौर पर अन्य जगहों पर भेजा और लगाया गया।

पेज 1 का शेष

जांच...

यह डब्ल्यूएचओ द्वारा रिपोर्ट किए गए वर्तमान सार्वजनिक स्वास्थ्य आपातकाल का हिस्सा नहीं है, जो कि एमपीओएक्स के क्लैड 1 के संबंध में है। मामला पहले के जोखिम आकलन के अनुरूप है और इसे स्थापित प्रोटोकॉल के अनुसार प्रबंधित किया जा रहा है, इसमें कहा गया है कि स्थिति पर नियंत्रण सुनिश्चित करने के लिए संपर्क ट्रेसिंग और निगरानी सहित सार्वजनिक स्वास्थ्य उपाय सक्रिय रूप से लागू हैं। स्वास्थ्य मंत्रालय ने कहा, 'इस समय जनता के लिए किसी भी व्यापक खतरे का कोई संकेत नहीं है।' साथ ही उसने राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों से सतर्क रहने और अनावश्यक घबराहट से बचने का आग्रह किया है। केंद्रीय स्वास्थ्य सचिव अपूर्व चंद्रा ने राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों (यूटी) को लिखे एक पत्र में कहा कि स्थिति को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने और आगे प्रसार को रोकने के लिए अधिकारियों को स्क्रीनिंग, परीक्षण और संपर्क ट्रेसिंग सहित निगरानी बढ़ाने की सलाह दी जाती है। केंद्र ने उन्हें सभी संदिग्ध एमपॉक्स मामलों की स्क्रीनिंग, परीक्षण और संपर्क का पता लगाने सहित निगरानी बढ़ाने और संदिग्ध और पुष्टि किए गए दोनों रोगियों के लिए अस्पतालों में अलगाव सुविधाओं की पहचान करने की सलाह दी है। वर्तमान में, राष्ट्रीय राजधानियों में केंद्र के नेतृत्व वाले तीन अस्पतालों को जरूरत पड़ने पर एमपॉक्स मामलों के इलाज के लिए नामित किया गया है। चंद्रा ने राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों से विशेष रूप से स्वास्थ्य सुविधा स्तर पर सार्वजनिक स्वास्थ्य तैयारियों की समीक्षा करने, अस्पतालों में अलगाव सुविधाओं की पहचान करने और ऐसी सुविधाओं पर आवश्यक रसद और प्रशिक्षित मानव संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित करने को कहा। सचिव ने राज्य और जिला स्तर पर एकीकृत रोग निगरानी कार्यक्रम (आईडीएसपी) के तहत निगरानी इकाइयों पर ध्यान केंद्रित करने के साथ सभी प्रमुख हितधारकों को संदिग्ध, संभावित, पुष्टि किए गए मामलों, संपर्क अनुरेखण और अन्य की परिभाषाओं पर फिर से उन्मुख करने का भी आह्वान किया।

हरियाणा....

टिकट देकर चुनाव लड़वाएगी ताकि पार्टी का वोट बैंक राज्य में बढ़ सके। आप के वरिष्ठ प्रदेश उपाध्यक्ष अनुराग ढांडा कलायत सीट से चुनाव लड़ेंगे। पार्टी ने नारायणगढ़ से गुरपाल सिंह, पूंडरी से नरेंद्र शर्मा, घरौंडा से जयपाल शर्मा, असंध से अमनदीप जुंडला, समालखा से बिट्टू पहलवान, उचाना कलां से पवन फौजी, डबवाली से कुलदीप गदराना, रानियां से हैप्पी रानियां, भिवानी से इंदू शर्मा, महम से विकास नेहरा, रोहतक से बिजेंद्र हुड्डा, बहादुरगढ़ से कुलदीप छिक्कारा, बादली से रणबीर गुलिया, बेरी से सोनू अहलावत शेरिया, महेंद्रगढ़ से मनीष यादव, नारनौल से रविंद्र मटरू, बादशाहपुर से बीर सिंह सरपंच, सोहना से धर्मेंद्र खटाना और बल्लभगढ़ से रविंद्र फौजदार को अपना उम्मीदवार घोषित किया है।

एसयू-30...

और सार्वजनिक और निजी उद्योग शामिल होंगे। रक्षा मंत्रालय ने कहा, डिलीवरी कार्यक्रम के अंत तक, एचएएल 54 प्रतिशत से अधिक का औसत हासिल करने के लिए स्वदेशीकरण सामग्री को 63 प्रतिशत तक बढ़ा देगा। इसमें कहा गया है कि इससे एयरो-इंजन की मरम्मत और ओवरहाल कार्यों की स्वदेशी सामग्री को बढ़ाने में भी मदद मिलेगी।

पीएम व प्रिंस...

अगस्त 2015 में मोदी की यूएई की ऐतिहासिक यात्रा के बाद, दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय संबंधों को एक व्यापक रणनीतिक साझेदारी तक बढ़ाया गया था। दोनों देशों ने द्विपक्षीय व्यापार के लिए भारतीय रुपए और दिरहम (संयुक्त अरब अमीरात की मुद्रा) के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए फरवरी 2022 में एक व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौते (सीईपीए) और जुलाई 2023 में एक स्थानीय मुद्रा निपटान (एलसीएस) प्रणाली पर हस्ताक्षर किए। आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, 2022-23 में लगभग 85 अरब अमेरिकी अमरीकी डॉलर के द्विपक्षीय व्यापार के साथ दोनों देश एक-दूसरे के शीर्ष व्यापारिक साझेदारों में से हैं। 2022-23 में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के मामले में भी यूएई, भारत में शीर्ष चार निवेशकों में शामिल है। यूएई में करीब 35 लाख भारतीय रहते हैं। पिछले साल भारत की अध्यक्षता में हुए जी20 शिखर सम्मेलन में यूएई को बतौर विशेष आमंत्रित देश न्योता दिया गया था। भारत की अध्यक्षता के दौरान जी20 समूह के लिए विशेष आमंत्रित सदस्य के रूप में यूएई को आमंत्रित किया गया था। फरवरी 2023 में भारत-यूएई-फ्रांस (यूएफआई) त्रिपक्षीय रूपरेखा को औपचारिक रूप से शुरू किया गया था। भारत के सक्रिय समर्थन के साथ, यूएई मई 2023 में एससीओ में संवाद भागीदार के रूप में शामिल हुआ। यूएई भी भारत के समर्थन से एक जनवरी को ब्रिक्स में सदस्य के रूप में शामिल हुआ था। भारत-यूएई रक्षा सहयोग में भी पिछले कुछ वर्षों में एक नई गति देखी गई है। जनवरी 2024 में, राजस्थान में पहला भारत-यूएई द्विपक्षीय सेना अभ्यास डेजर्ट साइक्लोन आयोजित किया गया था।

विदेश में...

राजनीति से प्यार, सम्मान और विनम्रता गायब है, जहां उन्होंने यह मानने के लिए आरएसएस की भी आलोचना की कि भारत 'एक विचार' है। विपक्ष के नेता ने रविवार को अमेरिका की अपनी वर्तमान यात्रा पर भारतीय प्रवासियों के साथ अपनी पहली बातचीत के दौरान डलास में यह टिप्पणी की। डलास में टेक्सास विश्वविद्यालय में छात्रों के साथ बातचीत के दौरान, राहुल ने भारत में विनिर्माण पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता पर भी जोर दिया। उन्होंने कहा कि भारत, अमेरिका और पश्चिम के अन्य देश बेरोजगारी की समस्या का सामना कर रहे हैं, जबकि चीन में ऐसा नहीं है, वह वैश्विक उत्पादन में उसका वर्चस्व कायम है। पूर्व कांग्रेस प्रमुख ने यह भी कहा कि भारत में कौशल की कोई कमी नहीं है और अगर देश उत्पादन के लिए खुद को तैयार करना शुरू कर दे तो वह चीन के साथ प्रतिस्पर्धा कर सकता है। तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए भाटिया ने कहा कि राहुल चीन के खिलाफ एक भी शब्द नहीं बोल सकते या बयान नहीं दे सकते। भाजपा नेता ने कहा, 'वह भारत को कमजोर करते हैं... वह चीन के साथ खड़े हैं।' भाटिया ने कहा कि यह पहली बार नहीं है कि कांग्रेस नेता ने विदेशी धरती पर बोलकर देश का अपमान किया है, लेकिन दुर्भाग्य से उन्हें विदेश से भी कुछ हलकों से उनके बयानों पर समर्थन और सराहना मिली है।

बारिश...

सूचकांक के अनुसार, वर्तमान में, दिल्ली 2023 में दुनिया भर के 387 शहरों में से 44वें सबसे भीड़भाड़ वाले शहर केंद्र के रूप में है। इसके अलावा, शहर में भारी बारिश के कारण स्थिति और भी खराब हो गई, जिससे धौला कुआं, मुंडका, आईटीओ, संगम विहार, महरौली-बदरपुर रोड, नजफगढ़ सहित अन्य इलाकों में जलभराव के कारण यातायात बाधित हो गया। दिल्ली ट्रैफिक पुलिस ने इस पर एक एडवाइजरी जारी की और कहा, रोहतक रोड पर नांगलोई से टिकरी बॉर्डर की ओर जाने वाले मार्ग पर और इसके विपरीत गड्ढों और जल जमाव के कारण यातायात प्रभावित है। कृपया मुंडका से बचें और तदनुसार वैकल्पिक मार्ग अपनाएँ। एक अन्य यात्री ने कहा कि उसे 28 किलोमीटर की दूरी तय करने में लगभग दो घंटे लगे। दिल्ली में ट्रैफिक जाम पर चुटकी लेते हुए 30 साल की सुहासिनी ने कहा, जब भी तनाव होता है तो हेयर स्पा खुद को शांत करने का सबसे अच्छा तरीका है। हालाँकि, इसका कोई फायदा नहीं है क्योंकि दिल्ली में यातायात और प्रदूषण फिर से सिरदर्द पैदा करेगा।

कैंसर की...

कि स्वास्थ्य और जीवन बीमा प्रीमियम को जीएसटी से मुक्त रखा जाए। सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने भी इस मुद्दे पर सीतारमण को पत्र लिखा था। वित्त मंत्री सीतारमण ने वित्त विधेयक पर चर्चा का जवाब देते हुए कहा था कि जीएसटी प्राप्ति का 75 प्रतिशत राज्यों को जाता है और विपक्षी सदस्यों को अपने राज्य के वित्त मंत्रियों से जीएसटी परिषद में प्रस्ताव लाने के लिए कहना चाहिए। जीएसटी परिषद ने सोमवार को हुई बैठक में कैंसर की दवाओं पर कर की दर 12 प्रतिशत से घटाकर पांच प्रतिशत और नमकीन पर 18 प्रतिशत से घटाकर 12 प्रतिशत करने का फैसला किया। सीतारमण ने कहा कि मार्च, 2026 के बाद आने वाले क्षतिपूर्ति उपकर के मुद्दे पर विचार करने के लिए भी मंत्री समूह का गठन किया गया है। परिषद ने दरों को युक्तिसंगत बनाने और ऑनलाइन गेमिंग पर जीओएम की स्थिति रिपोर्ट पर भी विचार-विमर्श किया।

राहुल चीन को बढ़ावा दे रहे, भारत को कमतर दिखाते हैं : हिमंत

भाषा। रांची

असम के मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा ने सोमवार को कांग्रेस नेता राहुल गांधी पर चीन को बढ़ावा देने और भारत को कमतर दिखाने का आरोप लगाया। शर्मा ने यहां बिरसा मुंडा हवाई अड्डे पर संवाददाताओं से कहा, राहुल गांधी अलग-अलग तरीकों से चीन को बढ़ावा देते हैं। भारत को कमजोर दिखाते हुए वह चीन को सर्वश्रेष्ठ देश के रूप में पेश करने की कोशिश करते हैं। लेकिन, चीन में न तो लोकतंत्र है और न ही लोगों के लिए धार्मिक स्वतंत्रता है। लेकिन गांधी इस बारे में बात नहीं करते। झारखंड विधानसभा चुनाव के लिए भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के चुनाव सह-प्रभारी शर्मा दो दिवसीय यात्रा पर यहां पहुंचे। गांधी ने रविवार को डलास में टेक्सास विश्वविद्यालय में छात्रों के साथ बातचीत के दौरान विनिर्माण पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता को रेखांकित करते हुए कहा कि वैश्विक उत्पादन में चीन का प्रभुत्व है इसलिए वह बेरोजगारी का सामना नहीं कर रहा है, जबकि भारत और अमेरिका समेत पश्चिमी देश बेरोजगारी की समस्या से जूझ रहे हैं। पूर्व कांग्रेस प्रमुख ने यह भी कहा कि भारत में कौशल की कोई कमी नहीं है और अगर देश उत्पादन के लिए खुद को तैयार करना शुरू कर दे तो वह चीन के साथ प्रतिस्पर्धा कर सकता है। शर्मा की टिप्पणी पर प्रतिक्रिया देते हुए कांग्रेस के वरिष्ठ नेता एवं पार्टी की झारखंड इकाई के पूर्व अध्यक्ष राजेश ठाकुर ने कहा, हर कोई जानता है कि चीन को कौन बढ़ावा देता है। शर्मा को इस तरह के बयान देकर देश के लोगों को गुमराह नहीं करना चाहिए। उन्हें पहले अपने गिरेबान में झांकना चाहिए। एक सवाल के जवाब में असम के मुख्यमंत्री ने कहा कि कांग्रेस के 12-14 विधायक और झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) के दो-तीन विधायक भाजपा के संपर्क में हैं। उन्होंने कहा, लेकिन, आगामी विधानसभा चुनाव के लिए हमारे पास उनके लिए जगह नहीं है। झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री चंपई सोरेन और झामुमो के पूर्व विधायक लोबिन हेम्ब्रम हाल ही में भाजपा में शामिल हुए। आबकारी कांस्टेबल अभ्यर्थियों की हाल ही में हुई मौतों को लेकर उन्होंने कहा कि भाजपा ने मृतकों के परिजनों के लिए नौकरी और 50 लाख रुपए मुआवजे की मांग की है। शर्मा ने कहा, झारखंड के मुख्यमंत्री ने अभ्यर्थियों की मौत के लिए कोविड वैक्सीन को जिम्मेदार ठहराया है, लेकिन मुख्यमंत्री ने खुद वैक्सीन लगवाई थी और लोगों से कहा था कि कोविड वैक्सीन सुरक्षित है। उन्होंने कहा कि वे भर्ती अभियान में अपने प्रियजनों को खोने वाले दो परिवारों से मिलेंगे।झारखंड आबकारी कांस्टेबल भर्ती के लिए 22 अगस्त को शुरू हुई शारीरिक दक्षता परीक्षा को 12 अभ्यर्थियों की मौत के बाद रोक दिया गया। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने इन मौतों के कारण तीन सितंबर से पांच सितंबर तक भर्ती अभियान को स्थगित करने का आदेश दिया था। लगभग 1.14 लाख अभ्यर्थियों के लिए भर्ती अभियान का शेष भाग संशोधित मानदंडों के साथ 10 सितंबर को फिर से शुरू किया जाएगा।

पटना में एक स्थानीय भाजपा नेता की हत्या, तेजस्वी ने नीतीश सरकार पर किया तंज

पटना। पटना शहर के चौक थाना इलाके में सोमवार की सुबह एक स्थानीय भाजपा नेता की एक मोटरसाइकिल पर सवार दो अज्ञात सशस्त्र हमलावरों द्वारा गोली मारकर कथित तौर पर हत्या कर दी गई।मृतक की पहचान स्थानीय भाजपा नेता मुन्ना शर्मा के रूप में की गई है।पटना जिला पुलिस द्वारा जारी एक बयान के अनुसार, सोमवार की सुबह लगभग 6.15 बजे मुन्ना शर्मा को पटना शहर के चौक थाना इलाके के एक रेस्तरां के पास कुछ अज्ञात सशस्त्र हमलावरों ने गोली मार दी। घटना के बाद हमलावर एक मोटरसाइकिल पर सवार होकर फरार हो गए। पुलिस के अनुसार, जख्मी शर्मा को उनके परिजन अस्पताल ले गए जहां उन्होंने इलाज के दौरान दम तोड़ दिया।हमलावरों का पता लगाने के लिए पुलिस घटनास्थल एवं आस-पास के सीसीटीवी फुटेज की जांच कर रही है।राजद नेता और पूर्व उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव ने इस घटना को लेकर एक वीडियो साझा करते हुए सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर लिखा, बिहार में सत्ता के संरक्षण में अपराध फल-फूल रहा है। अपराधी जब चाहे, जहां चाहे, किसी को भी गोली मारकर भाग जा रहे हैं। वीडियो में भाजपा नेता को गोली मारकर भागते अपराधी। राजग के कर्ता-धर्ता बढ़ते बेलगाम अपराध से बेखबर हैं। इधर-उधर में मस्त, व्यस्त और पस्त मुख्यमंत्री से बिहार बिल्कुल भी नहीं संभल रहा।

अमित शाह मुंबई में शिंदे और अजित पवार से मिले

कई गणेश पंडाल में दर्शन किए

भाषा। मुंबई

महाराष्ट्र में आगामी विधानसभा चुनाव से पहले केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने सोमवार को मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे और उपमुख्यमंत्री अजित पवार से मुंबई हवाई अड्डे पर संक्षिप्त मुलाकात की और कई गणेश पंडाल में दर्शन किए। बैठक में क्या बातचीत हुई, इस पर कोई आधिकारिक बयान नहीं आया है। लेकिन सूत्रों के मुताबिक, शाह ने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के दोनों सहयोगियों को आश्वासन दिया कि राज्य विधानसभा चुनाव के लिए महायुति सहयोगियों के बीच विधानसभा सीट का सम्मानजनक वितरण होगा। शिंदे शिवसेना के प्रमुख हैं, जबकि अजित पवार राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) के अध्यक्ष हैं और दोनों सत्तारूढ़ महायुति गठबंधन में भाजपा के सहयोगी हैं। भाजपा के पूर्व अध्यक्ष और पार्टी के प्रमुख चुनाव रणनीतिकार शाह दो दिवसीय मुंबई दौरे पर हैं, जहां उन्होंने एक मीडिया संगठन द्वारा निर्मित वृत्तचित्र को जारी करने के लिए रविवार शाम एक कार्यक्रम में भाग लिया। इसके बाद उन्होंने दक्षिण मुंबई में राज्य सरकार के सह्याद्री गेस्ट हाउस में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की राज्य इकाई की कोर कमेटी के सदस्यों से मुलाकात की। मुंबई से रवाना होने से पहले शाह ने सोमवार को शिंदे, उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस, अजित पवार, राकांपा के कार्यकारी अध्यक्ष प्रफुल्ल पटेल और अन्य अहम नेताओं से मुलाकात की। शाह मुंबई में प्रसिद्ध लालबागचा राजा गणेश पंडाल जा कर भगवान गणेश के दर्शन किए और पूजा-अर्चना की।मुंबई के लालबाग इलाके में सबसे प्रसिद्ध गणेश पंडाल में भगवान गणेश के दर्शन के दौरान शाह के साथ महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे, उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के राष्ट्रीय महासचिव विनोद तावड़े भी थे।शाह बाद में बांद्रा वेस्ट गणेश पंडाल भी गए, जो भाजपा की मुंबई इकाई के अध्यक्ष आशीष शेलार से संबद्ध है।इससे पहले सुबह, शाह यहां मुख्यमंत्री शिंदे और फडणवीस के आधिकारिक आवास पर गए और उनके घरों पर स्थापित गणेश प्रतिमाओं के दर्शन किए।शाह के मुंबई दौरे का यह दूसरा दिन है। रविवार रात को उन्होंने मुख्यमंत्री शिंदे के साथ ही उपमुख्यमंत्री फडणवीस और अजित पवार से मुलाकात की थी।

स्वास्थ्य बीमा पर जीएसटी में कमी पर विचार के लिए मंत्री समूह गठित

● कैंसर दवा, नमकीन पर कर घटाया गया

भाषा। नई दिल्ली

केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने सोमवार को कहा कि जीएसटी परिषद ने जीवन और स्वास्थ्य बीमा पर कर की दर कम करने के लिए मंत्री समूह गठित करने का निर्णय किया है। साथ ही कैंसर की दवाओं और नमकीन पर माल एवं सेवा कर (जीएसटी) को घटाने का फैसला किया है। उन्होंने जीएसटी परिषद की 54वीं बैठक लिए गए फैसलों के बारे संवाददाताओं को जानकारी देते हुए कहा कि जीवन और स्वास्थ्य बीमा पर जीएसटी दर में कमी के मामले पर विचार करने के लिए मंत्री समूह के गठन का निर्णय किया गया है। सीतारमण की अध्यक्षता वाली जीएसटी परिषद में राज्यों के वित्त मंत्री शामिल हैं। मंत्री समूह (जीओएम) की अगुवाई बिहार के उप-मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी करेंगे। वह फिलहाल जीएसटी दर को युक्तिसंगत बनाने के मंत्री समूह के भी प्रमुख हैं। सीतारमण ने कहा कि जीवन और स्वास्थ्य बीमा पर जीएसटी दर के बारे में विचार के लिए मंत्री समूह में नए सदस्य शामिल होंगे। उन्होंने कहा कि मंत्री समूह अक्टूबर के अंत तक अपनी रिपोर्ट देगा। बीमा प्रीमियम पर कराधान का मुद्दा संसद में उठ चुका है। विपक्षी सदस्यों ने मांग की थी कि स्वास्थ्य और जीवन बीमा प्रीमियम को जीएसटी से मुक्त रखा जाए। सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने भी इस मुद्दे पर सीतारमण को पत्र लिखा था। वित्त मंत्री सीतारमण ने वित्त विधेयक पर चर्चा का जवाब देते हुए कहा था कि जीएसटी प्राप्ति का 75 प्रतिशत राज्यों को जाता है और विपक्षी सदस्यों को अपने राज्य के वित्त मंत्रियों से जीएसटी परिषद में प्रस्ताव लाने के लिए कहना चाहिए। जीएसटी परिषद ने सोमवार को हुई बैठक में कैंसर की दवाओं पर कर की दर 12 प्रतिशत से घटाकर पांच प्रतिशत और नमकीन पर 18 प्रतिशत से घटाकर 12 प्रतिशत करने का फैसला किया। सीतारमण ने कहा कि मार्च, 2026 के बाद आने वाले क्षतिपूर्ति उपकर के मुद्दे पर विचार करने के लिए भी मंत्री समूह का गठन किया गया है। परिषद ने दरों को युक्तिसंगत बनाने और ऑनलाइन गेमिंग पर जीओएम की स्थिति रिपोर्ट पर भी विचार-विमर्श किया।

न्यायालय ने तृणमूल सांसद अभिषेक उनकी पत्नी की याचिका खारिज की

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने पश्चिम बंगाल में अवैध कोयला खनन से संबंधित एक कथित घोटाला मामले में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की जांच के सिलसिले में उसके समन के खिलाफ तृणमूल कांग्रेस नेता अभिषेक बनर्जी एवं उनकी पत्नी रुजिरा बनर्जी की एक याचिका सोमवार को खारिज कर दी। न्यायमूर्ति बेला त्रिवेदी और न्यायमूर्ति सतीश चंद्र शर्मा की एक पीठ ने सोमवार को फैसला सुनाया। पीठ ने 13 अगस्त को फैसला सुरक्षित रखा था।

एलन मस्क बन सकते हैं दुनिया के पहले ट्रिलिनियर

● होड़ में अदाणी, अंबानी भी शामिलः रिपोर्ट

नई दिल्ली। इलेक्ट्रिक कार विनिर्माता टेस्ला और रॉकेट कंपनी स्पेसएक्स के मुखिया एलन मस्क वर्ष 2027 तक दुनिया के पहले ट्रिलिनियर बन सकते हैं। इसका मतलब है कि उनकी संपत्ति 1,000 अरब डॉलर से अधिक हो जाएगी। इन्फॉर्मा कनेक्ट अकादमी की एक रिपोर्ट के मुताबिक, भारतीय उद्योगपति गौतम अदाणी इसके अगले साल (2028) यह दर्जा हासिल कर सकते हैं, जबकि एशिया के सबसे अमीर व्यक्ति मुकेश अंबानी वर्ष 2033 में इस मुकाम तक पहुंच सकते हैं। रिपोर्ट कहती है कि 237 अरब अमेरिकी डॉलर की कुल संपत्ति के साथ दुनिया के सबसे अमीर व्यक्ति मस्क को दुनिया का पहला खरबपति बनने के लिए तीन वर्षों में 110 प्रतिशत की औसत वार्षिक वृद्धि दर से बढ़ने की जरूरत है। रिपोर्ट के मुताबिक, अदाणी के विविध कारोबारों वाले समूह की वृद्धि 123 प्रतिशत की मौजूदा औसत वार्षिक दर से जारी रही तो वह वर्ष 2028 तक दुनिया के दूसरे ट्रीलिनियर बन सकते हैं। अदाणी इस समय 100 अरब डॉलर से कुछ कम की संपत्ति के साथ दुनिया के धनी लोगों की सूची में 13वें स्थान पर हैं।

भारत घरेलू उद्योगों के अनुरूप विभिन्न देशों के साथ एफटीए में बदलाव कर रहाः जितिन

भाषा। नई दिल्ली

भारत घरेलू उद्योगों को लाभ पहुंचाने के लिए दक्षिण कोरिया, मलेशिया और विभिन्न अन्य आसियान देशों के साथ मुक्त व्यापार समझौतों (एफटीए) को संशोधित कर रहा है। केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग राज्यमंत्री जितिन प्रसाद ने सोमवार को यहां एसीएमए (वाहन कलपुर्जा विनिर्माता संघ) के 64वें वार्षिक सत्र में यह जानकारी दी। उन्होंने कहा कि ब्रिटेन और यूरोपीय संघ के साथ एफटीए का नेतृत्व प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी कर रहे हैं। मंत्री ने कहा, यह (एफटीए) वाहन कलपुर्जा उद्योग के लिए बड़ी भूमिका निभाएगा। उन्होंने आगे कहा, हम दक्षिण कोरिया, मलेशिया और आसियान देशों के साथ अपने एफटीए को संशोधित कर रहे हैं, जो हमारे उद्योग की मांगों के अनुरूप होंगे। प्रसाद ने वाहन कलपुर्जा उद्योग से अनुसंधान एवं विकास गतिविधियों में निवेश बढ़ाने का भी आग्रह किया। उन्होंने कहा, हम अनुसंधान एवं विकास में पर्याप्त निवेश नहीं कर रहे हैं। मेरा अनुमान है कि यह निवेश किए जा रहे राजस्व का एक प्रतिशत है। इस दिशा में निवेश बहुत महत्वपूर्ण है। उन्होंने निर्यात को बढ़ावा देने, आयात पर निर्भरता कम करने और वृद्धि सुनिश्चित करने के महत्व पर भी जोर दिया।

जम्मू-कश्मीर में अनुच्छेद 370 को बहाल किया जाएगा, भले ही इसमें सालों लग जाएं : फारूक

भाषा। श्रीनगर

नेशनल कॉन्फ्रेंस (एनसी) के अध्यक्ष फारूक अब्दुल्ला ने सोमवार को कहा कि अनुच्छेद 370 की बहाली की मांग जम्मू-कश्मीर के लोगों की आवाज है और पूर्ववर्ती राज्य के विशेष प्रावधान को निश्चित रूप से बहाल किया जाएगा, भले ही इसमें कई साल लग जाएं। अब्दुल्ला की इस टिप्पणी से एक दिन पहले रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा था कि जब तक भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) सत्ता में है, तब तक अनुच्छेद 370 को बहाल करना असंभव है। अब्दुल्ला ने बारामूला जिले में संवाददाताओं से कहा, मैं उनसे पूछना चाहता हूं कि उन्हें (भाजपा को) इसे रद्द करने में कितने साल लगे? हमें इसे बहाल करने में कई साल लग सकते हैं, लेकिन हम इसे निश्चित रूप से बहाल करेंगे। यह पूरे जम्मू-कश्मीर की आवाज है, यह लोगों की आवाज है। नेशनल कांफ्रेंस के अध्यक्ष ने जम्मू क्षेत्र में हाल में हुए आतंकवादी हमलों का जिक्र करते हुए कहा कि भाजपा ने दावा किया था कि जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद का मूल कारण अनुच्छेद 370 है, लेकिन इसे रद्द किए जाने के बाद भी हमले हो रहे हैं। उन्होंने कहा, उनका कहना था कि अनुच्छेद 370 की वजह से आतंकवाद है...मैं उनसे पूछना चाहता हूं कि फिर यह आतंकवाद कहां से आ रहा है? उन्हें जवाब देना चाहिए। पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा कि जम्मू-कश्मीर में जो कुछ भी हो रहा है उसके लिए नई दिल्ली जिम्मेदार है। उन्होंने कहा, उस आईसी814 विमान अपहरण के लिए कौन जिम्मेदार है, जिसे कंधार ले जाया गया था? (जैश-ए-मोहम्मद प्रमुख मसूद) अजहर जैसे लोग, जो वहां हैं और अब सब कुछ संचालित कर रहे हैं, मैंने उनसे (नई दिल्ली से) कहा था कि उन्हें (इन आतंकवादियों को) न छोड़ें, लेकिन उन्होंने मेरी बात नहीं मानी। यहां जो कुछ भी हो रहा है, उसके लिए नई दिल्ली जिम्मेदार है। कांग्रेस नेता विकार रसूल वानी ने टिप्पणी की थी कि नेशनल कांफ्रेंस ने लोगों का खून चूसा है। इस बारे में सवाल किए जाने पर अब्दुल्ला ने कहा कि इससे गठबंधन पर कोई असर नहीं पड़ेगा। अब्दुल्ला की पार्टी ने जम्मू-कश्मीर विधानसभा चुनाव से पूर्व कांग्रेस के साथ गठबंधन किया है। उन्होंने कहा, उन्हें जो कहना है कहने दीजिए।

सरकार के साथ बातचीत से कभी पीछे नहीं हटेः मीरवाइज नीत हुर्रियत

श्रीनगर। मीरवाइज उमर फारूक के नेतृत्व वाली हुर्रियत कांफ्रेंस ने सोमवार को कहा कि वह सरकार के साथ बातचीत से कभी पीछे नहीं हटी है, क्योंकि उसका मानना है कि जम्मू-कश्मीर में शांति और स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए बातचीत ही एकमात्र रास्ता है।हुर्रियत ने रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह द्वारा रविवार को की गई टिप्पणी पर प्रतिक्रिया दी है। सिंह ने कहा था कि 2016 में हिज्बुल मुजाहिदीन कमांडर बुरहान वानी के मारे जाने के पश्चात भड़की हिंसा के बाद, केंद्रीय गृह मंत्री के तौर पर उन्होंने अलगाववादियों से मिलने के लिए संसदीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया था, लेकिन अलगाववादियों ने अपने दरवाजे बंद कर लिए थे।जम्मू क्षेत्र के रामबन में एक चुनावी रैली में सिंह ने कहा, मैंने हुर्रियत कांफ्रेंस से मुलाकात के लिए संसदीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया क्योंकि हम शांति बहाली के वास्ते उनसे बातचीत के लिए तैयार थे। शरद यादव अन्य लोगों के साथ हुर्रियत नेताओं से मिलने गए, लेकिन उन्होंने अपने दरवाजे बंद कर लिए। लोग निर्दोष और नाबालिग बच्चों के खिलाफ दर्ज मामलों को वापस लेने की मांग कर रहे थे और मैंने (तत्कालीन मुख्यमंत्री) महबूबा से बात की और उनसे बच्चों को रिहा करने को कहा। हमने सब कुछ किया, लेकिन जिस तरह से उन्हें (हुर्रियत नेताओं को) जवाब देना चाहिए था, उन्होंने ऐसा नहीं किया। एक बयान में हुर्रियत ने कहा, रिकॉर्ड को दुरुस्त करने के लिए कुछ तथ्यों को दोहराए जाने की जरूरत है। हुर्रियत ने कहा, सितंबर 2016 में मीरवाइज चश्माशाही उप-जेल में हिरासत में थे। जेल अधिकारियों ने उन्हें महबूबा मुफ्ती का एक पत्र सौंपा था, जो उन्होंने पीडीपी अध्यक्ष के तौर पर लिखा था, न कि मुख्यमंत्री के तौर पर। इसमें उनसे गुजारिश की गई थी कि वह विपक्षी सांसदों के प्रतिनिधिमंडल से मिलें और उनसे बात करें। दौरे पर आए विपक्षी प्रतिनिधिमंडल के सदस्य एवं एआईएमआईएम प्रमुख असदुद्दीन ओवैसी उप-जेल में मीरवाइज से मिलने आए थे ।

अमेरिका ने सेमीकंडक्टर क्षेत्र में भारत के साथ साझेदारी की घोषणा की

नई दिल्ली। अमेरिकी विदेश विभाग ने सोमवार को अंतरराष्ट्रीय प्रौद्योगिकी सुरक्षा एवं नवाचार (आईटीएसआई) कोष के तहत वैश्विक सेमीकंडक्टर पारिस्थितिकी तंत्र में विविधता लाने के लिए भारत के साथ साझेदारी की घोषणा की। साझेदारी की शुरुआत में भारत के मौजूदा सेमीकंडक्टर पारिस्थितिकी तंत्र और नियामकीय ढांचे के साथ ही कार्यबल और बुनियादी ढांचे की जरूरतों का व्यापक आकलन किया जाएगा। विदेश विभाग ने कहा कि इलेक्ट्रॉनिक्स और आईटी मंत्रालय के तहत भारत के सेमीकंडक्टर मिशन के साथ साझेदारी दोनों देशों के लिए लाभदायक है। यह भारत के सेमीकंडक्टर उद्योग की विस्तार क्षमता को भी रेखांकित करती है। इसके तहत अमेरिकी विदेश विभाग भारत के सेमीकंडक्टर मिशन, इलेक्ट्रॉनिक्स और आईटी मंत्रालय के साथ साझेदारी करेगा।

सरकार अगले 2-3 माह में नई सहकारिता नीति की घोषणा करेगी : सचिव

नई दिल्ली। सहकारिता मंत्रालय के एक शीर्ष अधिकारी ने सोमवार को कहा कि नई राष्ट्रीय सहकारिता नीति लगभग तैयार है और अगले 2-3 महीनों में इसकी घोषणा की जाएगी। सहकारिता सचिव आशीष कुमार भूटानी ने एक कार्यक्रम के दौरान संवाददाताओं से कहा, हम नई राष्ट्रीय सहकारिता नीति को अंतिम रूप देने के अंतिम चरण में है। नीति की घोषणा अगले 2-3 महीनों में की जाएगी। पूर्व केंद्रीय मंत्री सुरेश प्रभु की अध्यक्षता वाली 47 सदस्ईय समिति ने अंशधारकों के साथ परामर्श के बाद नीति का मसौदा तैयार किया है। उन्होंने कहा, अब नीति को अंतिम रूप देने के लिए आगे की चर्चा की जा रही है। सचिव ने यह भी बताया कि अगले साल फरवरी तक लगभग 65,000 कार्यात्मक प्राथमिक कृषि सहकारी समितियों (पीएसीएस) को कम्प्यूटरीकृत कर दिया जाएगा।

गुवाहाटी में छात्रावास के कमरे में मृत मिला आईआईटी का छात्र

गुवाहाटी। गुवाहाटी में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) के छात्रावास के एक कमरे में सोमवार को कंप्यूटर विज्ञान का एक छात्र मृत मिला। पुलिस ने यह जानकारी दी। पुलिस ने बताया कि उत्तर प्रदेश निवासी छात्र का शव ब्रह्मपुत्र छात्रावास के उसके कमरे में मिला। वह कंप्यूटर विज्ञान में तीसरे वर्ष का छात्र था। पुलिस के एक अधिकारी ने बताया कि जांच जारी है और शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। इस साल गुवाहाटी आईआईटी में किसी छात्र की मौत की यह चौथी घटना है। नौ अगस्त को एक छात्रा का शव कथित तौर पर उसके कमरे में फंदे से लटका मिला था। एक प्रवक्ता ने कहा, गुवाहाटी आईआईटी को बेहद दुख के साथ सूचना देनी पड़ रही है कि हमारे समुदाय के एक छात्र की मौत हो गई है।

फूड एंड बेकरी एक्सपो 13 से

नोएडा। राजधानी में बहुप्रतीक्षित फूड एंड बेकरी एक्सपो 2024 का आयोजन आगामी 13-15 सितंबर 2024 को अवध शिल्प ग्रामलखनऊ में किया जाएगा। फूड सेक्टर का यह प्रमुख बीटूबी इवेंट, एसजी फूडीज़ इंफोटेक एलएलपी और फूड इंडस्ट्रीज वेलफेयर एसोसिएशन के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया जा रहा है। यह एक्सपो बेकरी उद्योग से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारियों का केंद्र बनेगाए जहां बेकरी मशीनरी और उपकरणों के निर्माताओं के साथ-साथ पैकेजिंग सामग्री के आपूर्तिकर्ता भी शामिल होंगे। फूड इंडस्ट्री वेलफेयर एसोसिएशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. गिरीश गुप्ता ने एक्सपो को लेकर अपना उत्साह व्यक्त करते हुए कहा कि फूड एंड बेकरी एक्सपो 2024 सिर्फएक आयोजन नहीं, बल्कि भारत में खाद्य उद्योग को आगे बढ़ाने का एक बड़ा मंच है।

क्विक न्यूज

भारत को 2030 तक 500 गीगावाट नवीकरणीय ऊर्जा के लिए 30 लाख करोड़ रुपए निवेश की जरूरत

गांधीनगर। भारत को 2030 तक 500 गीगावाट नवीकरणीय ऊर्जा के लक्ष्य को हासिल करने के लिए 30 लाख करोड़ रुपए के निवेश की जरूरत है। केंद्रीय नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री प्रल्हाद जोशी ने सोमवार को यह बात कही। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी नवीकरणीय ऊर्जा के लिए एक वैश्विक शिखर सम्मेलन - चौथा रि-इनवेस्ट 2024 का उद्घाटन करेंगे। जोशी ने यहां संवाददाता सम्मेलन में कहा कि वैश्विक नवीकरणीय ऊर्जा निवेशक सम्मेलन और प्रदर्शनी (रि-इनवेस्ट) का चौथा संस्करण 16 से 18 सितंबर तक गांधीनगर के महात्मा मंदिर सम्मेलन और प्रदर्शनी केंद्र मे आयोजित किया जाएगा। उन्होने कहा कि भारत को 2030 तक 500 गीगावाट नवीकरणीय ऊर्जा के महत्वाकांक्षी लक्ष्य को हासिल करने के लिए 30 लाख करोड़ रुपए के निवेश की जरूरत है। इससे पहले यह सम्मेलन तीन बार आयोजित किया गया है, जिनमे एक वीडियो कॉन्फ्रेंस के जरिए और दो नई दिल्ली मे आयोजित किए गए थे। इस बार सम्मेलन का आयोजन गुजरात में किया जा रहा है। उन्होंने वाइब्रेंट गुजरात का उदाहरण देते हुए कहा, हमने सोचा कि 2030 तक 500 गीगावाट नवीकरणीय ऊर्जा लक्ष्य को हासिल करने के लिए सम्मेलन आयोजित करने के लिए गुजरात सही जगह है। उन्होने बताया कि भारत में इस समय 203 गीगावाट नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता है।

भारत, जापान वित्तीय सहयोग बढ़ाने, द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करने पर सहमत

नई दिल्ली। भारत और जापान ने वित्तीय सहयोग बढ़ाने और द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करने पर सहमति जताई है। वित्त मंत्रालय ने सोमवार को बयान मे यह जानकारी दी। आधिकारिक बयान के मुताबिक, टोक्यो मे आयोजित दूसरे भारत-जापान वित्त संवाद में दोनो देशो ने वित्तीय संबंधों की मजबूती पर चर्चा की। इस दौरान दोनो देशो ने एक-दूसरे की वृहद-आर्थिक स्थिति पर अपनी राय से भी अवगत कराया। वित्त मंत्रालय ने कहा कि इस बैठक मे भारत और जापान ने अन्य देशो मे सहयोग, द्विपक्षीय सहयोग और अंतरराष्ट्रीय मुद्दो पर चर्चा की। प्रतिभागियो ने विनियमन एवं निगरानी, वित्तीय डिजिटलीकरण और दोनो देशो में अन्य नीतिगत पहल सहित वित्तीय क्षेत्र के मुद्दो पर विचार साझा किए। बैठक मे दोनो देशो के प्रतिनिधियो के साथ जापान के वित्तीय सेवा उद्योग के प्रतिनिधि भी शामिल हुए। इस दौरान भारत में निवेश बढ़ाने से संबंधित विभिन्न वित्तीय नियामकीय मुद्दो पर चर्चा की गई। बयान के मुताबिक, दोनो पक्ष वित्तीय सहयोग को बढ़ावा देने और द्विपक्षीय संबंधो को मजबूत करने के लिए चर्चा जारी रखने पर सहमत हुए और वार्ता का अगला दौर नई दिल्ली में आयोजित करने की संभावना पर रजामंदी जताई। दूसरा भारत-जापान वित्त संवाद टोक्यो में छह सितंबर को आयोजित किया गया। इस बैठक में भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व आर्थिक मामलो के सचिव अजय सेठ ने किया जबकि जापानी पक्ष की अगुवाई जापान के अंतरराष्ट्रीय मामलो के वित्त उप मंत्री अत्सुशी मिमुरा ने की। जापानी प्रतिनिधिमंडल में वित्त मंत्रालय और वित्तीय सेवा एजेंसी के प्रतिनिधि शामिल थे। भारतीय पक्ष से वित्त मंत्रालय, भारतीय रिजर्व बैंक, भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड, पेंशन कोष नियामक एवं विकास प्राधिकरण, भारतीय बीमा नियामक एवं विकास प्राधिकरण और अंतरराष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र प्राधिकरण के प्रतिनिधियों ने चर्चा में भाग लिया।

रांची से 13 वर्षीय लड़की को लखनऊले जाकर ट्रक चालक ने किया दुष्कर्म

रांची। रांची से 13 वर्षीय एक लड़की को कथित तौर पर ट्रक से लखनऊले जाया गया और रास्ते मे ट्रक चालक ने कई बार उससे दुष्कर्म किया तथा बाद मे उसे सड़क किनारे छोड़ दिया। पुलिस ने सोमवार को यह जानकारी दी। पुलिस ने बताया कि रविवार को रांची के तमार थाने मे मामला दर्ज किए जाने के बाद दो लोगो को गिरफ्तार किया गया। लड़की के परिजनो ने बताया कि वह 16 अगस्त को स्कूल से वापस नही लौटी, जिसके बाद उन्होंने गुमशुदगी की शिकायत दर्ज कराई। तमार थाने के प्रभारी रोशन कुमार के अनुसार, लड़की ने जांचकर्ताओ को बताया कि 16 अगस्त को उसका एक परिचित युवक उसे बुंडू बस स्टैंड लेकर गया और बाद मे उसे एक अन्य युवक पटना ले गया, जिसे वह जानती थी। थाना प्रभारी ने लड़की के बयान का हवाला देते हुए कहा, दूसरे युवक ने उसे पटना मे एक ट्रक चालक के पास छोड़ दिया और भाग गया। ट्रक चालक ने कथित तौर पर उसके साथ दुष्कर्म किया और उसे लखनऊमे सड़क किनारे छोड़ दिया। उन्होने कहा, हमने रविवार को दर्ज प्राथमिकी के आधार पर दो लोगो को गिरफ्तार किया है। उसके बयान मे कई कड़ियां गायब है। हम विभिन्न तरीको से उन्हे जोड़ने का प्रयास कर रहे है। उन्होने बताया कि दुष्कर्म और मानव तस्करी के अलावा यौन अपराधो से बच्चो के संरक्षण (पॉक्सो) अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया गया है। पुलिस उपाधीक्षक रतिभान सिंह ने पीटीआई-भाषा को बताया, हमने जांच शुरू कर दी है और प्राथमिकी मे पीड़िता द्वारा किए गए दावो की पुष्टि कर रहे है। लड़की का मेडिकल परीक्षण करवाया जा रहा है। गुमशुदगी की शिकायत दर्ज होने के बाद से मामले पर नजर रख रहे बाल अधिकार कार्यकर्ता बैद्यनाथ कुमार ने दावा किया कि लड़की को पटना में एक ट्रक चालक को बेच दिया गया था। उन्होने दावा किया, लखनऊपुलिस को लड़की 20 अगस्त को मिली। इसके बाद उन्होने बिना कोई प्राथमिकी दर्ज किए उसे लखनऊस्थित राजकीय बालिका गृह को सौप दिया। कुमार ने बताया कि लड़की को एक सितंबर को लखनऊसे तमार लाया गया था। उन्होने कहा, शुरू मे, माता-पिता लड़की के साथ हुई घटना के बारे मे प्राथमिकी दर्ज कराने के लिए तैयार नही थे। बाद मे वे सहमत हो गए और रविवार को प्राथमिकी दर्ज कराई गई।

नासा ने पृथ्वी-अवलोकन डेटा उपलब्ध कराने के लिए भारतीय कंपनी से अनुबंध किया

नई दिल्ली। अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा ने पृथ्वी-अवलोकन डेटा और सेवाएं प्राप्त करने के वास्ते एक नए अनुबध के लिए भारतीय निजी अंतरिक्ष यान कंपनी पिक्सल को चुना है। पृथ्वी अवलोकन और हाइपरस्पेक्ट्रल इमेजिंग मे विशेषज्ञता रखने वाली पिक्सल कंपनी नासा के 47.6 करोड़ अमेरिकी डॉलर के कमर्शियल स्मॉलसैट डेटा एक्विजिशन प्रोग्राम ऑन-रैंप। मल्टीपल अवार्ड अनुबंध के लिए चुनी गई आठ कंपनियो मे से एक है। इस अनुबंध के तहत ए कंपनियां अमेरिकी एजेंसी की अनुसंधान एवं अनुप्रयोग गतिविधियो को समर्थन देने के लिए वाणिज्यिक स्रोतों से नासा को पृथ्वी अवलोकन डेटा उपलब्ध कराएंगी, जिससे धरती पर जीवन को बेहतर बनाने में मदद मिलेगी। नासा ने एक बयान मे कहा, अनुबंध का लक्ष्य नासा को एजेंसी और अमेरिका की अन्य सरकारी तथा अंतरराष्ट्रीय एजेंसियो द्वारा प्राप्त पृथ्वी अवलोकन को बढ़ाने या पूरक बनाने के वास्ते सभी के लाभ के लिए एक किफायती तरीका प्रदान करना है। कंपनी ने एक बयान मे कहा कि पिक्सल की प्रौद्योगिकी सैकड़ो तरंगदैर्ध्य मे डेटा एकत्र करती है तथा जलवायु परिवर्तन, कृषि, जैव विविधता तथा संसाधन प्रबंधन जैसे मुद्दो पर विस्तृत जानकारी प्रदान करती है।

स्टोवक्राफ्ट सेहत का रखेगा ध्यान

नोएडा। घरेलू और रसोई समाधानों में अग्रणी स्टोवक्राफ्ट, अपनी नवीनतम पेशकश, पिजन एयरफ्यूजन एयर-फ्रायर रोटिसरी ओवन के की घोषणा करते हुए उत्साहित है। यह अत्याधुनिक उपकरण एक रसोई पावरहाउस है, जो एक एयर फ्रायर और एक ओटीजी की कार्यक्षमताओं का संयोजन करता है, जो उन्नत रोटिसरी क्षमताओं से परिपूर्ण है और एक कॉम्पैक्ट डिजाइन में उपलब्ध है। अपनी 12-लीटर बड़ी क्षमता के साथ, एयरफ्यूजन स्वास्थ्य के प्रति जागरूक भारतीय परिवारों और गुणवत्ता से समझौता किए बिना बहुमुखी प्रतिभा और सुविधा चाहने वाले पाक प्रेमियों के लिए तैयार किया गया है। इस अवसर पर, राजेंद्र गांधी, स्टोव क्राफ्ट लिमिटेड के प्रबंध निदेशकने कहा, हम अपने ग्राहकों के लिए इनोवेटिव एयरफ्यूजन पेश करने के लिए उत्साहित हैं। यह उपकरण नवाचार, गुणवत्ता और स्वास्थ्य के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का प्रतीक है।

भारत जल्द से जल्द चाहता है इजराइल और फलस्तीन के बीच युद्धविराम : जयशंकर

भाषा। रियाद

विदेश मंत्री एस जयशंकर ने गाजा में मौजूदा स्थिति को भारत की सबसे बड़ी चिंता बताते हुए सोमवार को कहा कि भारत इस क्षेत्र में जल्द से जल्द संघर्ष विराम का समर्थन करता है। गाजा पट्टी में इजराइल और हमास के बीच पिछले 11 महीनों से युद्ध जारी है। जयशंकर ने सऊदी अरब की राजधानी में रणनीतिक वार्ता के लिए पहली भारत-खाड़ी सहयोग परिषद (जीसीसी) मंत्रिस्तरीय बैठक में यह टिप्पणी की। उन्होंने कहा, गाजा की वर्तमान स्थिति अब हमारी सबसे बड़ी चिंता है। इस संबंध में

● विदेश मंत्री ने भारत-खाड़ी सहयोग परिषद मंत्रिस्तरीय बैठक में यह टिप्पणी की

भारत का रुख सैद्धांतिक और एक समान रहा है। हम आतंकवाद और बंधक बनाने की घटनाओं की निंदा करते हैं, लेकिन निर्दोष नागरिकों की लगातार हो रही मौतों से हमें गहरा दुख है। जयशंकर ने कहा कि किसी भी कार्वाई में मानवीय कानून के सिद्धांतों को ध्यान में रखना चाहिए। उन्होंने कहा, हम जल्द से जल्द युद्ध विराम का समर्थन करते हैं। पिछले साल सात अक्टूबर को गाजा पट्टी पर शासन करने वाले हमास ने इजराइल पर हमला किया, जिसमें 1,200 लोग मारे गए और 250 अन्य का अपहरण कर लिया गया। स्थानीय स्वास्थ्य अधिकारियों के अनुसार, इजराइल ने गाजा में हमले किए, जिससे व्यापक तबाही हुई और लगभग 40,000 लोग मारे गए। जयशंकर ने कहा कि भारत लगातार दो-राष्ट्र समाधान के माध्यम से फलस्तीनी मुद्दे के समाधान के लिए खड़ा है। उन्होंने कहा कि भारत ने फलस्तीनी संस्थानों और क्षमताओं के निर्माण में भी योगदान दिया है। विदेश मंत्री ने कहा, जहां तक मानवीय स्थिति का सवाल है, हमने राहत प्रदान की है तथा संयुक्त राष्ट्र राहत और कार्य एजेंसी (यूएनआरडब्ल्यूए) को अपना सहयोग बढ़ाया है। जीसीसी एक प्रभावशाली समूह है, जिसमें संयुक्त अरब अमीरात, सऊदी अरब, बहरीन, ओमान, कतर और कुवैत शामिल हैं। वित्त वर्ष 2022-23 में जीसीसी देशों के साथ भारत का कुल व्यापार 184.46 अरब अमेरिकी डॉलर रहा। जयशंकर ने कहा कि रणनीतिक वार्ता के लिए पहली भारत-जीसीसी मंत्रिस्तरीय बैठक में भाग लेना उनके लिए बहुत खुशी की बात है। उन्होंने कहा कि यह बैठक न केवल उपलब्धियों पर विचार करने का अवसर है, बल्कि भविष्य के लिए एक महत्वाकांक्षी और दूरगामी मार्ग तैयार करने का अवसर भी है। उन्होंने कहा, भारत और जीसीसी के बीच संबंध इतिहास, संस्कृति और साझा मूल्यों के समृद्ध ताने-बाने में निहित हैं।

इजराइल ने सीरिया में भीषण गोलीबारी की, 18 लोगों की मौत, 40 घायल

भाषा। दमिश्क,

इजराइल ने रविवार देर रात सीरिया के कई इलाकों में हमले किए, जिसमें कम से कम 18 लोगों की मौत हो गई जबकि 40 से अधिक लोग घायल हो गए। सरकारी मीडिया ने इसकी जानकारी दी। सीरिया की सरकारी समाचार एजेंसी सना ने बताया कि रविवार देर रात मध्य सीरिया के कई इलाकों में इजराइली हमले हुए, जिसके बाद हमास प्रांत में एक राजमार्ग क्षतिग्रस्त हो गया और आग लग गई, जिसके बाद सोमवार सुबह दमकलकर्मी आग पर काबू करने के लिए जूझते दिखे। पश्चिमी हमास प्रांत के मस्याफ नेशनल हॉस्पिटल द्वारा दी गई शुरुआती रिपोर्ट के अनुसार मरने वालों की संख्या चार थी। अस्पताल प्रमुख फैसल हैदर के हवाले से सना ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि मरने वालों की संख्या 14 हो गई है जबकि 40 अन्य घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। ब्रिटेन से संचालित युद्ध निगरानी संस्था सीरियन ऑब्जर्वेटरी फॉर

ह्यूमन राइट्स की रिपोर्ट के अनुसार एक हमले में मस्याफ में एक वैज्ञानिक अनुसंधान केंद्र और उन अन्य स्थलों को निशाना बनाया गया जहां ईरानी मिलीशिया और विशेषज्ञ सीरिया में हथियार विकसित करने के लिए ठहरे थे। स्थानीय मीडिया ने तटीय शहर टार्टस के आसपास भी हमले की सूचना दी। इजराइल की सेना की ओर से तत्काल कोई प्रतिक्रिया नहीं आई है। इजराइल ने हाल के वर्षों में युद्धग्रस्त सीरिया के सरकारी नियंत्रण वाले हिस्सों में सैकड़ों हमले किए हैं, लेकिन उसने कभी इन हमलों को स्वीकार नहीं किया है। ए हमले अक्सर सीरियाई सेना या ईरान समर्थित समूहों को निशाना बनाकर किए जाते हैं।

खैबर पख्तूनख्वा में विस्फोट में छह लोग घायल

पेशावर। पाकिस्तान के अशांत उत्तर-पश्चिमी खैबर पख्तूनख्वा प्रांत मे पोलियो टीकाकरण कार्यक्रम से जुड़े कार्यकर्ताओं को ले जा रहे एक वाहन को निशाना बनाकर किए गए बम विस्फोट मे तीन पुलिसकर्मियो सहित कम से कम छह लोग घायल हो गए। अधिकारियो ने सोमवार को यह जानकारी दी। विस्फोट के कारण दक्षिणी वजीरिस्तान जिले के वाना कस्बे मे तीन पोलियो कार्यकर्ता और तीन पुलिसकर्मी घायल हो गए। घायलों को तुरंत अस्पताल ले जाया गया और उनकी हालत स्थिर बताई गई है। पुलिस की टुकड़ियां विस्फोट स्थल पर पहुंची और आरोपियो को गिरफ्तार करने के लिए तलाशी अभियान चलाया। पाकिस्तान की राजधानी इस्लामाबाद में पिछले 16 वर्षो में पोलियो का पहला मामला मे पिछले सप्ताह दर्ज किया, जो देश से इस घातक वायरस को खत्म करने के राष्ट्रीय प्रयासो के लिए एक झटका है। पाकिस्तान मे 2021 मे पोलियो का केवल एक मामला सामने आया था। इस साल अब तक बलूचिस्तान से 12, सिंध से तीन और पंजाब और इस्लामाबाद से एक-एक मामला सामने आने की खबर है।

पाकिस्तान में भीड़ के साथ झड़प में 13 पुलिसकर्मी घायल

कराची। पाकिस्तान मे सिंध प्रांत के बादिन जिले मे एक युवक के लापता होने के विरोध मे प्रदर्शन कर रही भीड़ के साथ झड़प मे कम से कम 13 पुलिसकर्मी घायल हो गए। पुलिस ने यह जानकारी दी।यह घटना शनिवार को अल्लाह खान मगसी गांव मे घटी।पुलिस के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा, पुलिसकर्मी उस समय घायल हो गए जब उन्होंने मगसी कबीले के गुस्साए आदिवासियो की भीड़ को तितर-बितर करने की कोशिश की जो अपने समुदाय के एक युवक के लापता होने को लेकर विरोध प्रदर्शन कर रहे थे। युवक को पुलिस ने मोटरसाइकिल चोरी के सिलसिले मे पकड़ा था और शनिवार को वह हवालात से गायब हो गया।भीड़ उस समय हिंसक हो गई जब पुलिस ने दावा किया कि युवक को हथियारबंद लोगो के एक समूह ने मुक्त करा दिया था और वे उसे अपने साथ ले गए।वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक जुबैर अहमद ने कहा, भीड़ ने पुलिस पर ईंटो और लाठियो से हमला किया और उन्होने पुलिस थाने तथा थाने मे खड़े वाहनो को भी नुकसान पहुंचाया। उन्होने बताया कि जब पुलिस ने लोगो की भीड़ को तितर-बितर करने की कोशिश की तो झड़प मे 13 पुलिसकर्मी घायल हो गए और उन्हे अस्पताल भेजा गया है।

महाराजा चार्ल्स ने महारानी एलिजाबेथ की पुण्यतिथि पर गिरजाघर में प्रार्थना की

लंदन। महाराजा चार्ल्स तृतीय ने अपनी मां महारानी एलिजाबेथ द्वितीय की पुण्यतिथि के अवसर पर रविवार को स्कॉटलैंड के रॉयल बाल्मोरल एस्टेट के पास गिरजाघर मे प्रार्थना की। चार्ल्स (75) और उनकी पत्नी कैमिला गर्मियो की छुट्टियां स्कॉटिश हाइलैंड्स मे बिता रहे है, जहां दिवंगत महारानी का आठ सितंबर, 2022 को 96 वर्ष की आयु मे निधन हो गया था। चार्ल्स और कैमिला को महारानी की दूसरी बरसी पर क्रैथी किर्क के छोटे से ग्रेनाइट गिरजाघर मे रविवार को सुबह की प्रार्थना के लिए आते देखा गया। चार्ल्स अपनी मां की मृत्यु के बाद दो वर्ष पहले राजगद्दी पर बैठे थे।

सुनवाई उच्च न्यायालय में स्थानांतरित कराने में विफल रहे नेता प्रतिपक्ष

सिंगापुर। सिंगापुर के भारतीय मूल के नेता प्रतिपक्ष प्रीतम सिंह एक संसदीय समिति से झूठ बोलने के आरोपो पर मुकदमे की सुनवाई सोमवार को उच्च न्यायालय मे करवाने मे विफल रहे। उनके वकीलों ने उनके मामले की तुलना भारतीय मूल के पूर्व परिवहन मंत्री एस ईश्वरन के मामले से की। वर्कर्स पार्टी (डब्ल्यूपी) के 48 वर्षीय प्रमुख पर नवंबर 2021 मे एक विशेषाधिकार समिति की बैठक मे झूठ बोलने के दो आरोप है। मामला सिंह की पार्टी की पूर्व सांसद रईसा खान से जुड़े झूठ बोलने के विवाद से संबंधित है।

जयशंकर ने खाड़ी देशों के विदेश मंत्रियों के साथ द्विपक्षीय बैठकें की

भाषा। रियाद

विदेश मंत्री एस जयशंकर ने सोमवार को खाड़ी देशों के अपने समकक्षों के साथ बैठकें कीं जिस दौरान उन्होंने द्विपक्षीय संबंधों में प्रगति की समीक्षा की तथा उन्हें और अधिक गहरा करने के तरीकों पर विचार-विमर्श किया। जयशंकर भारत-खाड़ी सहयोग परिषद (जीसीसी) के विदेश मंत्रियों की पहली बैठक में शामिल होने के लिए तीन देशों की यात्रा के पहले चरण में रविवार को सऊदी अरब की राजधानी पहुंचे। जीसीसी एक प्रभावशाली समूह है जिसमें संयुक्त अरब अमीरात, बहरीन, सऊदी अरब, ओमान, कतर और कुवैत शामिल हैं। जीसीसी देशों के साथ भारत का कुल व्यापार 2022-23 में 184.46 अरब

डॉलर रहा। जयशंकर ने सोमवार को कतर के प्रधानमंत्री मोहम्मद बिन अब्दुल रहमान बिन जासिम अल सानी से मुलाकात की जो विदेश मंत्री का प्रभार भी संभाल रहे हैं।उन्होंने एक्स पर लिखा, कतर के प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री मोहम्मद बिन अब्दुल रहमान बिन जासिम अल सानी से अच्छी मुलाकात के साथ दिन की शुरुआत की। भारत-कतर के द्विपक्षीय रिश्तों को आगे बढ़ाने पर विचार-विमर्श किया। क्षेत्रीय घटनाक्रमों पर उनके दृष्टिकोण तथा आकलन की सराहना करता हूं। जयशंकर ने सऊदी अरब के विदेश मंत्री फैसल बिन फरहान अल सऊद के साथ द्विपक्षीय बैठक की और द्विपक्षीय रिश्तों में प्रगति पर चर्चा की।उन्होंने एक्स पर एक पोस्ट में लिखा, सऊदी अरब के विदेश मंत्री फैसल बिन फरहान से आज रियाद में मुलाकात की। हमारे द्विपक्षीय संबंधों में प्रगति का जायजा लिया और वैश्विक एवं क्षेत्रीय मुद्दों पर अपने दृष्टिकोण साझा किए। जयशंकर ने रियाद में ओमान के विदेश मंत्री बद्र अलबुसईदी से भी मुलाकात की और उन्होंने द्विपक्षीय रणनीतिक साझेदारी को और मजबूत करने पर ध्यान केंद्रित किया। उन्होंने बहरीन के विदेश मंत्री अब्दुल लतीफ बिन राशिल अल जयानी से भी मुलाकात की। उन्होंने एक्स पर एक अन्य पोस्ट में कहा, बहरीन के विदेश मंत्री डॉ अब्दुल लतीफ बिन राशिद अल जयानी से मुलाकात करके खुश हूं। हमारे रिश्ते और बहरीन में भारतीय समुदाय के योगदान पर उनके सकारात्मक मूल्यांकन की प्रशंसा करता हूं। विदेश मंत्री ने कुवैत के अपने समकक्ष अब्दुल्ला अली अल-याहया से भी द्विपक्षीय मुलाकात की। उन्होंने लिखा, कुवैत के विदेश मंत्री अब्दुल्ला अली अल-याहया से एक बार फिर मिलकर प्रसन्न हूं। कुवैत में पिछले दिनों हमारी कारगर बैठक को याद किया। हमारे संयुक्त आयोग की एक बैठक जल्द करके भारत-कुवैत द्विपक्षीय संबंधों को आगे बढ़ाने पर चर्चा की। नई दिल्ली में विदेश मंत्रालय ने जयशंकर की यात्रा शुरू होने से पहले शनिवार को कहा था कि भारत और जीसीसी के गहन और बहुआयामी संबंध हैं जिनमें व्यापार और निवेश तथा ऊर्जा के क्षेत्र, सांस्कृतिक तथा लोगों के संबंध शामिल हैं।

लंदन में अफगानिस्तान का दूतावास बंद होगा

लंदन। ब्रिटेन सरकार ने सोमवार को कहा कि लंदन स्थित अफगानिस्तान के दूतावास को बंद किया जा रहा है, क्योंकि देश के तालिबान शासकों ने इसे मान्यता नहीं दी है। ब्रिटेन के विदेश कार्यालय ने कहा, तालिबान द्वारा अपने कर्मचारियों को बर्खास्त करने के बाद दूतावास को बंद किया जा रहा है। ब्रिटेन तालिबान सरकार को मान्यता नहीं देता है। राजदूत जल्मई रसूल ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर लिखा कि दूतावास मेजबान देश के आधिकारिक अनुरोध पर 27 सितंबर को अपना कार्यालय बंद कर देगा। न तो ब्रिटिश सरकार और न ही राजदूत ने बताया कि दूतावास के कर्मचारियों का क्या होगा। अफगानिस्तान में अगस्त 2021 में तालिबान सत्ता पर काबिज हुआ। यूरोप और उसके बाहर कई दूतावासों ने काम जारी रखा लेकिन अफगानिस्तान ने उन पर तालिबान सरकार के साथ सहयोग नहीं करने का आरोप लगाया है।

भाजपा और आरएसएस चाहते हैं महिलाएं घर पर रहें : राहुल गांधी

भाषा। वाशिंगटन

कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने टेक्सास में भारतीय-अमेरिकी समुदाय को संबोधित करते हुए कहा कि भारतीय राजनीति में प्रेम, सम्मान और विनम्रता का अभाव है। उन्होंने साथ ही आरोप लगाया कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) चाहते हैं कि महिलाएं घर पर ही रहें। राहुल ने लोकसभा में विपक्ष का नेता बनने के बाद भारतीय प्रवासी समुदाय के साथ अपने पहले संवाद के दौरान डलास में रविवार को ए टिप्पणियां कीं।गांधी ने एक अन्य कार्यक्रम में कहा कि महिलाओं के प्रति भारतीय पुरुषों के रवैए में बदलाव की जरूरत है। गांधी (54) ने कहा कि वह महिला आरक्षण विधेयक समेत राजनीति में महिलाओं की भागीदारी के समर्थक हैं। गांधी ने कहा कि अगर महिलाएं कोई व्यवसाय शुरू करना चाहती हैं तो उन्हें आर्थिक सहायता दी जानी चाहिए और उनके साथ वैसा ही व्यवहार किया जाना चाहिए, जैसा पुरुषों के साथ किया जाता है। कांग्रेस नेता ने कहा, भाजपा और आरएसएस का मानना है कि महिलाओं को एक खास भूमिका तक ही सीमित रखा जाना चाहिए।

राहुल गांधी कोई पप्पू नहीं हैं : सैम पित्रोदा

वाशिंगटन। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता सैम पित्रोदा ने कहा है कि विपक्ष के नेता राहुल गांधी कोई पप्पू नही है और भारतीय जनता पार्टी जो प्रचार करती है उसके विपरीत वह उच्च शिक्षित, पढ़े-गुने और रणनीतिकार है। इंडियन ओवरसीज कांग्रेस के अध्यक्ष पित्रोदा ने रविवार को डलास में टेक्सास विश्वविद्यालय मे छात्रों को पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष का परिचय देते हुए यह टिप्पणी की।पित्रोदा ने कहा, उनके (गांधी के) पास एक ऐसा दृष्टिकोण है जो भाजपा द्वारा लाखों-करोड़ो रुपए खर्च करके प्रचारित किए जाने वाले दृष्टिकोण से बिलकुल अलग है। मै आपको बता दूं कि वह कोई पप्पू नही है। वह उच्च शिक्षित, पढ़े-गुने, किसी भी विषय पर गहन सोच रखने वाले रणनीतिकार है। अमेरिका की यात्रा पर गए गांधी को उनके विरोधी कई वर्षो से पप्पू कहकर संबोधित करते रहे है।

चीन ने रूस के साथ संयुक्त नौसैनिक और वायुसैनिक अभ्यास का ऐलान किया

बीजिंग। चीन के रक्षा मंत्रालय ने सोमवार को इस महीने रूस के साथ संयुक्त नौसैनिक और वायुसैनिक अभ्यास करने का ऐलान किया जो उनकी सेनाओं के बीच घनिष्ठता को रेखांकित करता है। इस बीच रूस यूक्रेन पर अपने आक्रमण पर जोर दे रहा है। मंत्रालय ने कहा कि नॉर्दर्न यूनाइटेड-2024 अभ्यास जापान सागर और सुदूर उत्तर में स्थित ओखोटस्क सागर में होगा, लेकिन कोई विवरण नहीं दिया गया है। इसमें कहा गया है कि नौसैनिक और हवाई अभ्यास का उद्देश्य दोनों देशों के बीच रणनीतिक सहयोग में सुधार करना और सुरक्षा खतरों से संयुक्त रूप से निपटने की उनकी क्षमता को मजबूत करना है। मंत्रालय के बयान में यह भी कहा गया है कि दोनों नौसेनाएं पांचवीं बार प्रशांत महासागर में एक साथ उतरेंगी और रूस के ग्रेट ओशन-24 अभ्यास में एक साथ भाग लेंगी।

वियतनाम में तूफान से मरने वालों की संख्या हुई 59

भाषा। हनोई

● बाढ़ के पानी में बही बस

उत्तरी वियतनाम में तूफान के कारण हुई अधिक बारिश के चलते सोमवार को बाढ़ आ गई, जिसमें एक पुल टूट गया और एक बस बह गई। सरकारी मीडिया ने यह जानकारी दी। सरकारी मीडिया के अनुसार दक्षिण-पूर्वी एशियाई देश में इस प्राकृतिक आपदा में 59 लोगों की जान जा चुकी है। वियतनाम में शनिवार को आए तूफान में नौ लोगों की मौत हो गई और इसके परिणामस्वरूप आई बाढ़ और भूस्खलन के दौरान 50 अन्य लोगों की जान जा चुकी है। उत्तरी वियतनाम में कई नदियों का जल स्तर ख़तरनाक स्तर पर है। सोमवार सुबह पहाड़ी काओ बांग प्रांत में भूस्खलन के कारण 20 लोगों को ले जा रही एक यात्री बस बाढ़ के पानी में बह गई, जिसके बाद बचाव दल को तैनात किया गया, लेकिन भूस्खलन के कारण घटनास्थल तक जाने का रास्ता अवरुद्ध हो गया। फु थो प्रांत में सोमवार सुबह एक स्टील का पुल ध्वस्त हो गया, जिसके बाद बचाव अभियान जारी है। खबरों के अनुसार 10 कार और ट्रक तथा दो मोटसाइकिल नदी में गिर गईं। तीन लोगों को नदी से बाहर निकाल कर अस्पताल में भर्ती कराया गया है, लेकिन 13 अन्य लापता हैं।

अमेरिका और भारत का तीसरा इंडस-एक्स सम्मेलन सोमवार से शुरू होगा

वाशिंगटन। इंडस-एक्स के दो दिवसीय शिखर सम्मेलन का तीसरा संस्करण सोमवार को शुरू होगा, जिसमें भारत और अमेरिका रक्षा नवाचार में साझेदारी को मजबूत करने के तरीकों पर विचार करेंगे। एक आधिकारिक विज्ञप्ति में यह बात कही गई। यूएस-इंडिया स्ट्रेटेजिक पार्टनरशिप फोरम की एक प्रेस विज्ञप्ति में कहा गया है कि भारत-अमेरिका डिफेंस एक्सिलरेशन इकोसिस्टम (इंडस-एक्स) शिखर सम्मेलन 9-10 सितंबर को कैलिफोर्निया के पालो ऑल्टो में स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय में आयोजित किया जाएगा। विज्ञप्ति के अनुसार सम्मेलन में वाशिंगटन और नई दिल्ली के प्रमुख रक्षा नीति निर्माता एक साथ जुटेंगे और रक्षा नवाचार क्षेत्र को आगे बढ़ाने में निजी पूंजी की महत्वपूर्ण भूमिका पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा।

दिल का दौरा और हृदय गति रुकने में क्या अंतर है?

भाषा। गोल्ड कोस्ट

जुलाई 2023 में, उभरते हुए अमेरिकी बास्केटबॉल स्टार ब्रॉनी जेम्स अभ्यास के दौरान कोर्ट में ही गिर पड़े और उन्हें अस्पताल ले जाया गया। प्रसिद्ध एलए लेकर्स के खिलाड़ी रहे लेब्रोन जेम्स के बेटे 18 वर्षीय एथलीट को हृदय गति रुकने की स्थिति का सामना करना पड़ा था।कई मीडिया संस्थानों ने इस घटना को गलत तरीके से दिल का दौरा कहा या इन शब्दों का परस्पर प्रयोग किया।हृदय गति रुकना और दिल का दौरा, हृदय से जुड़ी अलग-अलग लेकिन परस्पर-संबंधित अवधारणाएं हैं।हृदय किस प्रकार काम करता है, इसकी कुछ पृष्ठभूमि जानने के बाद हम देख सकते हैं कि वे किस प्रकार भिन्न हैं तथा किस प्रकार संबंधित हैं।

हृदय को समझना-हृदय एक मांसपेशी है जो पंप के रूप में काम करने के लिए सिकुड़ती है। जब यह सिकुड़ती है तो यह रक्त को - जिसमें ऑक्सीजन और पोषक तत्व होते हैं - हमारे शरीर के सभी ऊतकों तक पहुंचाती है। हृदय की मांसपेशियों को पंप के रूप में प्रभावी ढंग से काम करने के लिए, उसे कोरोनरी धमनियों द्वारा पहुंचाई जाने वाली रक्त आपूर्ति की आवश्यकता होती है। यदि ए धमनियां अवरुद्ध हैं, तो हृदय की मांसपेशियों को आवश्यक रक्त नहीं मिल पाता।इससे हृदय की मांसपेशी घायल हो सकती है या मर सकती है, और परिणामस्वरूप हृदय ठीक से पंप नहीं कर पाता।दिल का दौरा या हृदय गति रुकना ?सरल शब्दों में कहें तो, दिल का दौरा, जिसे तकनीकी रूप से मायोकार्डियल इन्फार्क्शन कहा जाता है, हृदय की मांसपेशी में चोट लगने या उसकी मृत्यु का वर्णन करता है।हृदय गति रुकना, जिसे कभी-कभी अचानक हृदय गति रुकना भी कहा जाता है, तब होता है जब हृदय धड़कना बंद कर देता है, या दूसरे शब्दों में कहें तो प्रभावी पंप के रूप में काम करना बंद कर देता है।दूसरे शब्दों में, दोनों ही हृदय के ठीक से काम न करने से संबंधित हैं, लेकिन अलग-अलग कारणों से।

उनके लक्षण कैसे हैं?

क्योंकि हृदय गति रुकने के कारण हृदय की प्रभावी पंपिंग अचानक बंद हो जाती है, इसलिए सबसे आम संकेत और लक्षण है अचानक चेतना का खत्म हो जाना, नब्ज या दिल की धड़कन का बंद हो जाना, सांस रुक जाना, तथा त्वचा का पीला या नीला पड़ जाना।लेकिन दिल के दौरे के सामान्य संकेतो और लक्षणो मे सीने मे दर्द या बेचैनी शामिल है, जो शरीर के अन्य हिस्सो जैसे हाथ, पीठ, गर्दन, जबड़े या पेट में भी हो सकती है। इसके अलावा सांस लेने मे तकलीफ, मतली, चक्कर आना और पसीना आना भी आम बात है। **इसका संदेश क्या है?** दिल का दौरा और हृदय गति रुकना हालांकि दोनो ही हृदय से संबंधित विकार है, लेकिन उनके तंत्र और परिणाम अलग-अलग है।दिल का दौरा घर मे पानी की आपूर्ति करने वाली पाइपलाइन मे रुकावट की तरह है। लेकिन हृदय गति रुकना घर की वायरिंग मे बिजली की खराबी की तरह है।

हैरिस ने लोगों को नेशनल ग्रैंड पैरेंट्स डे की बधाई दी, नाना-नानी को याद किया

वाशिंगटन। भारतीय मूल की डेमोक्रेटिक पार्टी की ओर से राष्ट्रपति पद की उम्मीदवार कमला हैरिस ने रविवार को भारत में अपने नाना-नानी के साथ बिताए बचपन की मधुर यादों को साझा करते हुए सभी दादा-दादी एवं नाना-नानी को नेशनल ग्रैंड पैरेंट्स डे की बधाई दी, जो अगली पीढ़ी को आकार देने और प्रेरित करने में मदद करते हैं। हैरिस ने सोशल मीडिया साइट एक्स पर पोस्ट में कहा, जब छोटी थी तो भारत में अपने नाना-नानी से मिलने जाया करती थी। मेरे नाना मुझे सुबह की सैर पर ले जाते थे। इस दौरान वह मुझसे समानता के लिए और भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई के महत्व पर चर्चा करते। वह एक सेवानिवृत्त नौकरशाह थे जो भारत की आजादी की लड़ाई का हिस्सा रहे थे।

क्विक न्यूज

एनएबी इमरान खान के खिलाफ तोशाखाना 2 भ्रष्टाचार मामले को आगे नहीं बढ़ाएगी

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के राष्ट्रीय जवाबदेही ब्यूरो ने सोमवार को अदालत को सूचित किया कि वह उच्चतम न्यायालय के हालिया फैसले के बाद जेल मे बंद पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान के खिलाफ तोशाखान 2 भ्रष्टाचार मामले को आगे नही बढ़ाएगा।शीर्ष अदालत ने पिछले हफ्ते राष्ट्रीय जवाबदेही ब्यूरो (एनएबी) के नियमों मे संशोधन को बहाल कर दिया, जिससे इसका अधिकार सिर्फ 50 अरब रुपए से अधिक के कथित भ्रष्टाचार के मामलो में मुकदमा चलाने तक सीमित हो गया। एनएबी ने इस साल खान (71) और उनकी पत्नी बुशरा बीबी (50) के खिलाफ दायर तोशाखाना 2 मामला दर्ज किया गया था जो इस आरोप पर आधारित है कि उन्होंने कई कीमती उपहारो को सरकारी खज़ाने मे जमा कराने के बजाय अपने पास रख लिया। आरोप यह भी है कि दंपति ने इसे फायदे के लिए बेच दिया, जिससे सरकारी खजाने को लगभग 13 अरब रुपए का नुकसान हुआ।

इमरान के खिलाफ सैन्य अदालत में मुकदमा चलाने पर फैसला गुण-दोष के आधार पर लिया जाएगा : मंत्री

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के सूचना मंत्री अत्ताउल्लाह तरार ने सोमवार को कहा कि जेल मे बंद पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान के खिलाफ सैन्य अदालत मे मुकदमा चलाने के बारे मे कोई भी फैसला मामले के गुण-दोष के आधार पर किया जाएगा। तरार की यह टिप्पणी ऐसे समय मे आई है, जब पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) पार्टी के नेताओ ने एक दिन पहले इस्लामाबाद मे एक विशाल रैली को संबोधित करते हुए सरकार से इमरान को तत्काल रिहा करने की मांग की थी, जो एक साल से अधिक समय से रावलपिंडी की अडियाला जेल मे बंद है। मंत्री ने एक संवाददाता सम्मेलन मे एक सवाल के जवाब मे कहा, इमरान के खिलाफ सैन्य अदालत मे मुकदमा चलाने का फैसला साक्ष्यों के आधार पर मामले के गुण-दोष को देखते हुए किया जाएगा। पाकिस्तान सरकार के शीर्ष अधिकारी नौ मई 2023 की हिंसा मे कथित संलिप्तता के लिए इमरान के खिलाफ सैन्य अदालत मे मुकदमा चलाए जाने के संकेत देते आए है, जब कथित पीटीआई समर्थको ने पूर्व प्रधानमंत्री एवं पार्टी प्रमुख की गिरफ्तारी के विरोध मे सैन्य प्रतिष्ठानो को निशाना बनाया था। हालांकि, सैन्य अदालत मे नागरिको के खिलाफ मुकदमा चलाने का मामला अंतिम निर्णय के लिए उच्चतम न्यायालय मे लंबित है। हिंसा के बाद सैन्य अधिकारियो के हवाले किए गए 100 से अधिक नागरिको के मामले भी विचाराधीन है।

वैश्विक सहकारिता सम्मेलन24 का आयोजन भारत में

नई दिल्ली। अंतरराष्ट्रीय सहकारी गठबंधन के 130 साल के लंबे इतिहास में पहली बार इफ्को की पहल पर भारत द्वारा आईसीए महासभा और वैश्विक सहकारिता सम्मेलन की मेजबानी की जाएगी। आईसीए निदेशक मंडल की 28 जून 2023 को ब्रूसेल्स में आयोजित बैठक के दौरान इफको ने आईसीए महासभा और वैश्विक सम्मेलन की मेजबानी भारत में करने का प्रस्ताव रखा था जिसे निदेशक मंडल के सदस्यों ने सहर्ष मंजूर कर लिया। इसके पश्चात संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय में हुई बैठक में यह निर्णय लिया गया कि भारत में वैश्विक सहकारिता सम्मेलन के दौरान संयुक्त राष्ट्र अंतरराष्ट्रीय सहकारिता वर्ष 2025 का आधिकारिक शुभारंभ भी होगा। माननीय सहकारिता मंत्रीए भारत सरकार अमित शाह की गरिमामयी उपस्थिति में 25 नवंबर 2024 को शाम 3 बजे कार्यक्रम का शुभारंभ होगा। वे मुख्य अतिथि के रूप में वैश्विक सहकारिता सम्मेलन के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करेंगे। इस कार्यक्रम में अंतरराष्ट्रीय सहकारिता वर्ष 2025 पर एक स्मारक डाक टिकट भी जारी किया जाएगा। भारत के माननीय प्रधानमंत्री से इस कार्यक्रम के विधिवत उद्घाटन के लिए अनुरोध किया गया है। जेरोन डगलस महानिदेशक आईसीए ने प्रेस को सूचित किया है कि 25 से 30 नवंबर 2024 तक भारत मंडपमए आईटीपीओए प्रगति मैदान, नई दिल्ली में आयोजित इस कार्यक्रम का विषय होगा सहकारिता सबकी समृद्धि का द्वार जेरोन डगलस ने जोर देकर कहा कि इफको आईसीए का प्रमुख साझेदार है और इस आयोजन की मेजबानी कर रहा है।

प्रभावी परिचर्चा और साहित्यिक विमर्श के साथ जेएलएफ ह्यूस्टन का समापन

ह्यूस्टन। जयपुर साहित्य उत्सव (जेएलएफ) के सातवें संस्करण का ह्यूस्टन में भव्य आयोजन किया गया जिसमे तीन दिन तक प्रभावी बातचीत, दमदार प्रस्तुतियो और विचारो का उत्सव मनाया गया। विश्व स्तर पर प्रसिद्ध इस साहित्योत्सव में अनेक अंतरराष्ट्रीय स्तर के लेखको, विचारको और स्थानीय रचनाकारो ने भाग लिया। साहित्यकारो ने नारीवाद, जलवायु परिवर्तन, साहित्य की सर्जनात्मक शक्ति और व्यक्तिगत और वैश्विक विमर्श के बीच के अंतरसंबंध जैसे सामयिक मुद्दो पर नए दृष्टिकोण प्रस्तुत किए।पहले दिन की शुरुआत रोथको चैपल के सहयोग से प्रतिष्ठित म्यूजियम ऑफ फाइन आर्ट्स मे शानदार अंदाज में हुई, जिसमे टीमवर्क आर्ट्स के निर्माता सूरज ढीगरा और प्रबंध निदेशक संजय रॉय ने भूमिका प्रस्तुत की। पहले सत्र मे सितार पर शुभेंद्र राव और भारतीय सेलो पर सास्किया राओडे हास ने तबले पर सुब्रतो भट्टाचार्य के साथ भारतीय शास्त्रीय प्रस्तुति दी। दूसरे दिन एशिया सोसाइटी मे कार्यक्रम हुआ, जहां अनेक लेखको और वक्ताओ ने शिरकत की। उत्सव के मध्याह्न सत्र द राइटिंग लाइफ मे बेस्टसेलिंग लेखिकाओ अलका जोशी और चित्रा बनर्जी दिवाकरुनी के बीच विचारोत्तेजक चर्चा हुई, जिसका संचालन रागिनी थरूर श्रीनिवासन ने किया।

राष्ट्रपति अब्देलमदजीद तेब्बौने अल्जीरिया में भारी बहुमत से फिर से निर्वाचित

अल्जीयर्स। अल्जीरिया के राष्ट्रपति अब्देलमदजीद तेब्बौने अल्जीरिया के राष्ट्रपति चुनाव मे विजई घोषित हुए है। कम मतदान और चुनाव मे अनियमितताओ के दावो के बीच उन्होने भारी बहुमत से जीत दर्ज की है। अल्जीरिया मे हुए चुनाव मे बेहद कम मतदान हुआ था और चुनाव के नतीजो को लेकर खबरो मे विसंगतियां थी। देश के स्वतंत्र चुनाव प्राधिकरण ने रविवार को घोषणा की कि तेब्बौने ने शनिवार के मतदान मे 94.7 प्रतिशत मतो से जीत दर्ज की जबकि उनके प्रतिद्वंद्वी इस्लामिस्ट अब्देलाली हसानी शेरिफ को सिर्फ 3.2 प्रतिशत मत और समाजवादी यूसुफ औचिचे को महज 2.2 प्रतिशत वोट मिले। रविवार को नतीजे सामने आने के बाद तेब्बौने के विरोधियो ने परिणाम पर सवाल खड़े किए। विरोधियो ने संयुक्त रूप से बयान जारी कर देश के निर्वाचन अध्यक्ष पर आरोप लगाया कि उन्होंने ऐसे परिणाम घोषित किए है जो पहले के मतदान आंकड़ो और स्थानीय गणनाओ के विपरीत है।

पोप फ्रांसिस कैथोलिक बहुल देश ईस्ट तिमोर पहुंचे

दिली। पोप फ्रांसिस ईस्ट तिमोर को उसके खूनी तथा दर्दनाक अतीत से उबरने के लिए प्रोत्साहित करने तथा इंडोनेशियाई शासन से आजादी के दो दशको बाद उसके विकास का जश्न मनाने के लिए सोमवार को इस दक्षिण पूर्व एशियाई देश में पहुंचे। पोप फ्रांसिस दक्षिणपूर्व एशिया और ओशिनिया की अपनी यात्रा के तीसरे चरण मे पापुआ न्यू गिनी से दिली पहुंचे। वह तिमोर के नेताओं और राजनयिको से मुलाकात करेंगे। दुनिया के सबसे गरीब देशों में से एक, कैथोलिक बहुल ईस्ट तिमोर पोप के आगमन का बेसब्री से इंतजार कर रहा था। यह यात्रा संयुक्त राष्ट्र समर्थित जनमत संग्रह की 25वी वर्षगांठ के मौके पर हो रही है, जिसने इंडोनेशिया से आजादी का मार्ग प्रशस्त किया था। विश्वविद्यालय के प्रोफेसर ई. टी. फर्नांडीज ने कहा, हमारी बड़ी आशा है कि उनकी यात्रा इस नए देश के लिए भाईचारे, राष्ट्रीय एकता, शांति और विकास को मजबूत करने वाली हो।

हॉकी में भारत की लगातार दूसरी जीत

एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी : जापान को 5-1 से हराया

भाषा। हुलुनबुइर (चीन)

सुखजीत सिंह के दो गोल की मदद से गत चैंपियन भारत ने सोमवार को यहां पुरुष एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी हॉकी टूर्नामेंट के लीग मैच में जापान को 5-। से हराकर लगातार दूसरी जीत दर्ज की। सुखजीत ने दूसरे और 60वें मिनट में गोल किए जबकि अभिषेक (तीसरे), संजय (17वें) और उत्तम सिंह (54वें) अन्य गोल करने वाले भारतीय खिलाड़ी रहे। मात्सुमोतो काजुमासा ने 41वें मिनट में जापान के लिए एक गोल किया। रविवार को अपने शुरूआती राउंड-रॉबिन लीग मैच में चीन को 3-0 से हराने वाली चार बार की चैंपियन भारतीय टीम को दो पेनल्टी कॉर्नर मिले जबकि जापान की टीम ने पांच पेनल्टी कॉर्नर हासिल किए। भारत ने मैच के दूसरे मिनट में ही सुखजीत के शानदार मैदानी गोल की बदौलत बढ़त हासिल कर ली। सर्कल के दाईं ओर खड़े संजय ने क्रॉस किया जिसे सुखजीत ने तेजी से डिफ्लेक्ट कर दिया।भारत ने अगले मिनट में बढ़त दोगुनी कर दी जब अभिषेक ने कई जापानी डिफेंडरों को चकमा देते हुए गोलकीपर को हैरान करके गोल कर दिया।दूसरे क्वार्टर में भी यही आक्रामक सिलसिला जारी रहा जब संजय ने 17वें मिनट में शानदार पेनल्टी कॉर्नर को गोल में बदला। हाफ टाइम तक 3-0 की बढ़त के साथ भारत अच्छी स्थिति में था जबकि जापान ने शुरुआती झटकों से उबरकर वापसी करने की कोशिश की। टूर्नामेंट के पिछले चरण में तीसरे स्थान पर रहने वाली जापानी टीम ने 21वें मिनट में पेनलटी कॉर्नर हासिल करने के लिए हमले तेज किए। लेकिन जापान के ड्रैग फ्लिकर भारतीयों के सामने नाकाम रहे।भारतीय टीम ने तेजी से जवाबी हमला किया और इस दौरान जुगराज सिंह ने फ्री हिट हासिल की, पर इसका कोई फायदा नहीं मिला। दूसरे क्वार्टर में एक गोल से भारत ने दबदबा बनाए रखा। इस दौरान उन्होंने 11 बार सर्कल में प्रवेश किया और गोल पर तीन शॉट लगाए। हाफ-टाइम ब्रेक के बाद भारत ने फुर्ती बनाए रखने की कोशिश की। लेकिन जापान ने उन्हें कोई गोल नहीं करने दिया।फिर जापान के लिए 41वें मिनट में काजुमासा ने मैदानी गोल कर दिया। भारतीय गोलकीपर कृष्ण पाठक गोल को रोकने के लिए कुछ खास नहीं कर सके।भारत के लिए चौथे गोल का श्रेय जर्मनप्रीत सिंह के अच्छे स्टिक वर्क को जाता है जिन्होंने बेहतरीन मैदानी गोल करने में उत्तम सिंह की मदद की।फिर अभिषेक की सहायता से सुखजीत ने 60वें मिनट में अपने नाम एक और गोल किया। मैच के नायक अभिषेक ने कहा, आज पूरी टीम ने प्रयास किया और हमने बेसिक्स पर ध्यान दिया। हमने अच्छा आक्रमण किया और सुनिश्चित किया कि हम गोल पर ध्यान लगाए रहें। हरमनप्रीत सिंह की अगुआई वाली टीम बुधवार को पिछले चरण की उपविजेता टीम मलेशिया से भिड़ेगी। मंगलवार को आराम का दिन है। छह टीमों के बीच राउंड-रॉबिन लीग के बाद शीर्ष चार टीमें 16 सितंबर को खेले जाने वाले सेमीफाइनल के लिए क्वालीफाई करेंगी। फाइनल 17 सितंबर को होगा।

पाक खिलाड़ियों को वीजा मिला, सैफ चैंपियनशिप में भाग लेंगे

लाहौर। भारतीय उच्चायोग से वीजा मिलने के बाद पाकिस्तान का 12 सदस्ईय दल दक्षिण एशियाई एथलेटिक्स महासंघ (सैफ) जूनियर चैंपियनशिप में हिस्सा लेने के लिए सोमवार को चेन्नई के लिए रवाना हो गया। एक अधिकारी ने पुष्टि की कि शनिवार को वीजा मिलने के बाद एथलीट और अधिकारी चेन्नई के लिए रवाना हो गए हैं। अधिकारी ने कहा, पाकिस्तान का दल वाघा सीमा के रास्ते रवाना हो गया है, जहां से वे अमृतसर जाएंगे और वहां से विमान से चेन्नई पहुंचेंगे जहां दक्षिण एशियाई जूनियर एथलेटिक्स चैंपियनशिप आयोजित की जा रही है। बाद में इस प्रतियोगिता के आयोजक भारतीय एथलेटिक्स महासंघ (एएफआई) ने कहा कि पाकिस्तानी दल वाघा सीमा पर पहुंच गया है। एएफआई ने टीम की तस्वीर के साथ ट्वीट किया, पाकिस्तान की जूनियर एथलेटिक्स टीम और अधिकारी आज अमृतसर में वाघा सीमा पर पहुंच गए हैं। खिलाड़ी 11 सितंबर से चेन्नई में शुरू होने वाली सैफ जूनियर चैंपियनशिप में भाग लेंगे।

पंत टेस्ट में महान खिलाड़ी बनने की राह पर, थोड़ा सुधार की जरूरतः गांगुली

भाषा। कोलकाता

भारत के पूर्व कप्तान सौरव गांगुली का मानना है कि ऋषभ पंत टेस्ट क्रिकेट में सर्वकालिक महान खिलाड़ी बनने की राह पर हैं, लेकिन साथ ही उन्हें छोटे प्रारूपों में अपने प्रदर्शन में सुधार करने की जरूरत है। दिसंबर 2022 में कार दुर्घटना में चोटिल होने के बाद पंत को रविवार को पहली बार भारतीय टेस्ट टीम में शामिल किया गया है और पूरी उम्मीद है कि बांग्लादेश के खिलाफ 19 सितंबर से चेन्नई में शुरू होने वाले पहले टेस्ट मैच के लिए उन्हें अंतिम एकादश में शामिल किया जाएगा।पंत ने इस साल के शुरू में सीमित ओवरों के प्रारूप में वापसी की थी और इनमें अच्छा प्रदर्शन किया था।गांगुली ने यहां एक प्रचार कार्यक्रम के दौरान कहा, मैं ऋषभ पंत को भारत के सर्वश्रेष्ठ टेस्ट बल्लेबाजों में से एक मानता हूं। उनकी टेस्ट क्रिकेट में वापसी से मैं हैरान नहीं हूं। वह भारत के लिए टेस्ट क्रिकेट में खेलते रहेंगे। उन्होंने कहा, अगर वह इसी तरह प्रदर्शन करता रहा तो टेस्ट क्रिकेट के सर्वकालिक महान खिलाड़ियों में शामिल हो जाएगा। मेरा मानना है कि उसे छोटे प्रारूपों में बेहतर प्रदर्शन करने की जरूरत है। वह प्रतिभाशाली है और मुझे यकीन है कि वह जल्द ही ऐसा करने में सफल रहेगा। मोहम्मद शमी को टखने के ऑपरेशन के कारण टीम में शामिल नहीं किया गया लेकिन गांगुली को विश्वास है कि यह तेज गेंदबाज इस साल के आखिर में होने वाले ऑस्ट्रेलियाई दौरे से पहले पूरी तरह फिट हो जाएगा।उन्होंने कहा, मैं जानता हूं कि मोहम्मद शमी चोटिल होने के कारण टीम में शामिल नहीं है लेकिन वह जल्द ही वापसी करेगा क्योंकि भारत को ऑस्ट्रेलिया का दौरा करना है। भारत का आक्रमण अभी बहुत अच्छा है। गांगुली ने कहा, मैं भारत के ऑस्ट्रेलिया दौरे का इंतजार कर रहा हूं।

यश को राष्ट्रीय टीम में जगह मिलने से परिवार गौरवान्वित

कोलकाता। चंद्रपाल दयाल ने लगभग एक साल तक दोपहर मे अपने घर से बाहर निकलना छोड़ दिया था क्योंकि इंडियन प्रीमियर लीग में उनके बेटे यश दयाल के खिलाफ रिंकू सिंह के बल्ले से निकले लगातार पांच छक्कों के बाद उन्हें स्कूल के बच्चों के ताने सुनने पड़ते थे। प्रयागराज के कर्बला मस्जिद के पास स्थित उनके घर के पास से दोपहर के समय जब स्कूल की बस गुजरती थी जो बच्चे रिंकू सिंह.... रिंकू सिंह .... पांच छक्के.....पांच छक्के का नारा लगाते हुए जाते थे। बच्चो का यह बर्ताव चंद्रपाल को अहमदाबाद की उस निराशाजनक शाम की यादो को ताजा कर देता था।

राष्ट्रीय तैराकी प्रतियोगिता में हिस्सा लेंगे नटराज और अनीश सहित शीर्ष तैराक

मंगलुरु,। ओलंपियन श्रीहरि नटराज, फ्रीस्टाइल विशेषज्ञ अनीश गौड़ा और हर्षिता जयराम मंगलवार से यहां शुरू हो रही 77वी सीनियर राष्ट्रीय तैराकी चैंपियनशिप में हिस्सा लेने वाले प्रमुख तैराकों में शामिल होंगे। यह टूर्नामेंट 13 सितंबर को समाप्त होगा लेकिन भारतीय तैराकों के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे 2028 लॉस एंजिल्स ओलंपिक के लिए ए क्वालीफिकेशन मार्क दाव पर लगा होगा। कर्नाटक इस प्रतियोगिता का गत विजेता है जिसमें 31 राज्यों के 500 से अधिक तैराक भाग लेंगे। हाल में पेरिस ओलंपिक की 100 मीटर बैकस्ट्रोक स्पर्धा में भाग लेने वाले नटराज ने कहा कि वह इस प्रतियोगिता में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना चाहते हैं।

इंग्लैंड के लिए 100वां अंतरराष्ट्रीय मैच खेलने पर हैरी केन का होगा सम्मान

लंदन। इंग्लैंड के फुटबॉल टीम कप्तान हैरी केन को मंगलवार को वेम्बली में फिनलैंड के खिलाफ नेशंस लीग मैच से पहले अपने देश के लिए 100वां मैच खेलने के अवसर पर सोने की टोपी प्रदान की जाएगी।इंग्लैंड की टीम मंगलवार को फिनलैंड के खिलाफ खेलेगी।बायर्न म्यूनिख का यह दिग्गज स्ट्राइकर इस मुकाबले मे 100 मैच खेलने वाला इंग्लैंड का 10वां खिलाड़ी बनेगा। वह 2014 मे वेन रूनी के बाद इस उपलब्धि को हासिल करने वाले देश के पहले खिलाड़ी होंगे।

जूनियर सुब्रतो कप फाइनल में मेघालय का मुकाबला मणिपुर से होगा

नई दिल्ली। बैगनसन की हैट्रिक गोल की मदद से मिंगकेन क्रिश्चियन एचएसएस, मेघालय ने सोमवार को यहां गवर्नमेंट सेकेंड्री स्कूल, अरुणाचल प्रदेश को 7-0 से रौंद कर 63वें सुब्रतो कप जूनियर बालक अंतरराष्ट्रीय फुटबॉल टूर्नामेंट के फाइनल मे प्रवेश किया। मिंगकेन क्रिश्चियन एचएसएस के सामने बुधवार को यहां के अंबेडकर स्टेडियम में खेले जाने वाले फाइनल में टी.जी. इंग्लिश स्कूल विष्णुपुर, मणिपुर की चुनौती होगी। टी.जी. इंग्लिश स्कूल ने दिन के दूसरे सेमीफाइनल मे श्रीलंका स्कूल फुटबॉल एसोसिएशन को एक गोल से हराया।

रोनाल्डो के रिकॉर्ड 132वें गोल से जीता पुर्तगाल

लंदन। क्रिस्टियानो रोनाल्डो ने फिर से साबित किया कि वह 39 वर्ष के होने के बावजूद पुर्तगाल के लिए क्यों महत्वपूर्ण है।इस स्टार स्ट्राइकर ने मध्यांतर के बाद स्थानापन्न खिलाड़ी के रूप मे मैदान पर कदम रखा और 88वें मिनट मे निर्णायक गोल किया। इससे पुर्तगाल ने नेशन्स कप फुटबॉल टूर्नामेंट में स्कॉटलैंड को 2-। से हराया।पांच बार वर्ष के विश्व में सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी चुने गए रोनाल्डो का यह अंतरराष्ट्रीय फुटबॉल में 132वां गोल था जो विश्व रिकॉर्ड है।

सीरिया ने भारत को हराकर इंटरकॉन्टिनेंटल कप जीता

हैदराबाद। सीरिया ने रणनीतिक रूप से दमदार खेल दिखाते हुए सोमवार को यहां इंटरकॉन्टिनेन्टल कप फुटबॉल टूर्नामेंट मे भारतीय टीम को 3-0 से हराकर खिताब अपने नाम किया।सीरिया के लिए महमूद अल असवाद (सातवें), दालेहो ईरानदुस्त (76वें) और पाब्लो सब्बाग (90६ मिनट) ने गोल दागे। भारत को इससे पहले तीन सितंबर को मॉरीशस ने गोलरहित बराबरी पर रोका था, जबकि सीरिया ने मॉरीशस को 2-0 से हराया था।

सिनर बने अमेरिकी ओपन चैंपियन, अमेरिका का इंतजार बढ़ा

● टेलर फ्रिट्ज़ को सीधे सेटों में हराया

भाषा। न्यूयॉर्क

पिछले दिनों डोपिंग मामले में दोष मुक्त होने वाले दुनिया के नंबर एक खिलाड़ी यानिक सिनर ने अपना शानदार प्रदर्शन जारी रखते हुए अमेरिका के टेलर फ्रिट्ज़ को सीधे सेटों में हराकर अमेरिकी ओपन टेनिस टूर्नामेंट में पुरुष एकल का खिताब जीता।सिनर ने आर्थर ऐश स्टेडियम में खेले गए फाइनल में 12वीं वरीयता प्राप्त फ्रिट्ज़ के खिलाफ अपने बेसलाइन के खेल का शानदार नमूना पेश किया और 6-3, 6-4, 7-5 से जीत दर्ज करके अमेरिका का वर्ष के इस अंतिम ग्रैंड स्लैम टूर्नामेंट में पुरुष एकल का खिताब जीतने का पिछले 21 वर्षों से चला आ रहा इंतजार बढ़ा दिया।इटली के 23 वर्षीय सिनर ने कहा, मेरे लिए यह ट्रॉफी काफी मायने रखती है क्योंकि मेरे करियर का पिछला कुछ समय काफी मुश्किल भरा था। सिनर के करियर का यह दूसरा ग्रैंड स्लैम खिताब है। उन्होंने इस साल के शुरू में ऑस्ट्रेलियाई ओपन में भी पुरुष एकल की ट्रॉफी जीती थी। फ्रिट्ज़ के पास अमेरिका का इंतजार खत्म करने का मौका था लेकिन फाइनल में उनकी सिनर के सामने एक नहीं चली जिससे दर्शक काफी मायूस हुए।एंडी रोडिक अमेरिका के आखिरी खिलाड़ी थे जिन्होंने अमेरिकी ओपन में पुरुष एकल का खिताब जीता था। उन्होंने 2003 में यहां ट्रॉफी जीती थी। फ्रिट्ज़ पहली बार किसी ग्रैंड स्लैम टूर्नामेंट के फाइनल में खेल रहे थे। वह 2009 के बाद किसी ग्रैंड स्लैम टूर्नामेंट के फाइनल में पहुंचने वाले अमेरिका के पहले पुरुष खिलाड़ी थे। उनसे पहले ग्रैंड स्लैम टूर्नामेंट में पहुंचने वाले आखिरी खिलाड़ी भी रोडिक थे जो 2009 में विंबलडन में रोजर फेडरर से हार गए थे। फ्रिट्ज़ ने कहा, अमेरिकी ओपन के फाइनल में किसी अमेरिकी का होना अविश्वसनीय है। मुझे पूरे सप्ताह दर्शकों का भरपूर समर्थन मिला। इसके लिए मैं उनका आभार व्यक्त करता हूं। उन्होंने कहा, मैं जानता हूं कि हम लंबे समय से चैंपियन का इंतजार कर रहे हैं। इसलिए मुझे अफसोस है कि मैं इस बार यह इंतजार खत्म नहीं कर पाया। लेकिन मैं अपना प्रयास जारी रखूंगा और उम्मीद है कि अगले साल इसे खत्म करने में सफल रहूंगा।

सिनर ने शीर्ष पर अपनी बढ़त दोगुनी की, फ्रिट्ज एटीपी रैंकिंग में शीर्ष 10 में पहुंचे

न्यूयॉर्क। अमेरिकी ओपन के पुरुष चैम्पियन यानिक सिनर ने सोमवार को जारी एटीपी रैंकिंग में नंबर एक स्थान पर अपनी बढ़त दोगुनी करने में सफल रहे जबकि उपविजेता टेलर फ्रिट्ज शीर्ष 10 में और महिला उप विजेता जेसिका पेगुला डब्ल्यूटीए रैंकिंग मे तीसरे नंबर पर पहुंची। वही महिला चैंपियन आर्यना सबालेंका डब्ल्यूटीए रैंकिंग मे इगा स्वियातेक के पीछे दूसरे नंबर पर रही। सबालेंका ने 2024 में दो ग्रैंड स्लैम खिताब जीते है, उन्होंने जनवरी में ऑस्ट्रेलियन ओपन जीता था। नोवाक जोकोविच तीसरे राउंड मे एलेक्सी पोपिरिन से पराजित होने के बाद रैंकिंग मे दूसरे स्थान से चौथे स्थान पर खिसक गए। अलेक्जेंडर ज्वेरेव दूसरे नंबर पर और उनके बाद कार्लोस अल्कराज तीसरे स्थान पर है। डेनियल मेदवेदेव पांचवें और एंड्री रूबलेव छठे स्थान पर बने हुए है।

ईस्ट दिल्ली बना दिल्ली प्रीमियर लीग का चैंपियन

नई दिल्ली। ईस्ट दिल्ली राइडर्स ने रविवार को यहां खेले गए फाइनल में साउथ दिल्ली सुपरस्टार पर तीन रन की रोमांचक जीत से दिल्ली प्रीमियर लीग (डीपीएल) टी20 क्रिकेट टूर्नामेंट का खिताब जीता।स्ट दिल्ली ने पहले बल्लेबाजी करते हुए मयंक रावत की 39 गेंद पर नाबाद 78 रन की पारी की मदद से पांच विकेट पर 183 रन का चुनौती पूर्ण स्कोर बनाया। साउथ दिल्ली की टीम उसके जवाब में नौ वि ट पर 180 रन ही बना पाई।मयंक रावत ने अपनी पारी में सात चौके और छह छक्के लगाए। उनके अलावा हिम्मत सिंह ने 20 और हार्दिक शर्मा ने 21 रन का योगदान दिया। साउथ दिल्ली की तरफ से राघव सिंह और कुलदीप यादव ने दो-दो विकेट लिए।

बांग्लादेश के खिलाफ राहुल को मिलेगा अनुभव का लाभ

भाषा। नई दिल्ली

इंग्लैंड के खिलाफ घरेलू श्रृंखला में सरफराज खान के साहसिक रवैए ने सभी को प्रभावित किया लेकिन बांग्लादेश के खिलाफ भारत के सत्र की शुरूआती टेस्ट श्रृंखला के लिए अंतिम एकादश का चयन करने की बात आएगी तो केएल राहुल का अनुभव उन्हें फायदा दिलाएगा। टीम प्रबंधन और चयन समिति का पूरा ध्यान नवंबर-दिसंबर में होने वाले ऑस्ट्रेलिया दौरे पर है और राहुल को 50 टेस्ट मैचों के खेलने का अनुभव है जिससे उन्हें फायदा होगा। टीम प्रबंधन के लिए यह एक युवा खिलाड़ी (सरफराज) की निडरता तथा टेस्ट कप्तान रहे एक अनुभवी खिलाड़ी के बीच चयन है जो एक दशक से राष्ट्रीय टीम का हिस्सा है। भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) के एक सूत्र ने गोपनीयता की शर्त पर कहा, बाहर के लोगों को यह समझ में नहीं आता कि टीम कैसे काम करती है और किस तरह की व्यवस्था होती है। केएल ने अपने पिछले तीन टेस्ट मैच दक्षिण अफ्रीका में शतक बनाया जो हाल के समय में सर्वश्रेष्ठ टेस्ट पारियों में से एक है और चोट लगने से पहले हैदराबाद में अपने पिछले टेस्ट में 86 रन बनाए। उन्होंने कहा, उन्हें टीम से बाहर नहीं किया गया बल्कि वह चोटिल हो गए। इसलिए वह फिट और उपलब्ध हैं, उन्होंने दलीप में अर्धशतक बनाया, उन्हें मैच खेलने का मौका मिला और वह खेलेंगे।घरेलू क्रिकेट के स्टार सरफराज ने इंग्लैंड के खिलाफ राजकोट में अपने पहले मैच में दो अर्धशतक और धर्मशाला में उसी प्रतिद्वंद्वी के खिलाफ एक और अर्धशतक लगाकर शुरुआत की, जिसमें उन्होंने तेज और धीमे दोनों गेंदबाजों के खिलाफ सटीक फुटवर्क और सुधार दिखाया। सूत्र ने कहा, सरफराज ने सब कुछ सही किया है। अगर कोई भी खिलाड़ी चोटिल होता है तो उन्हें खिलाया जाएगा। लेकिन राहुल के अनुभव की कोई सानी नहीं है। उन्होंने कहा, टीम प्रबंधन सिर्फ बांग्लादेश को ही नहीं देख रहा है बल्कि ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ श्रृंखला पर भी ध्यान लगाए है, जहां पिछला अनुभव मायने रखता है। राहुल चोट के कारण ऑस्ट्रेलिया के पिछले दो टेस्ट दौरों में नहीं खेल पाए थे लेकिन 2014 में उन्होंने सिडनी में शतक बनाया था। हालांकि 50 टेस्ट के बाद राहुल का औसत 35 से कम है जो इतना अच्छा नहीं है। लेकिन सिडनी, लॉर्ड्स, ओवल, सेंचुरियन जैसे बड़े विदेशी मैदानों पर रन बनाना कर्नाटक के इस खिलाड़ी को आगे रखता है। निरंतरता की बात ऋषभ पंत और ध्रुव जुरेल के बीच भी लागू रहेगी।

कुंवर ग्लोबल स्कूल ओवरऑल विजेता, लखनऊ अकादमी अव्वल

पदक विजेताओं के नाम इस प्रकार हैंस्वर्ण - विहान यादव, काजल पाण्डेय, काव्या सिंह, अर्पिता मौर्या, प्रज्ञायंशी सिंह, नित्रा सिंह, आफिया परवीन, अर्पिता मौर्या, इकरामा, अनमोल यादव, शौर्य प्रताप सिंह, हर्षित, अंश यादव, अंश वर्मा, नैतिक वाल्मीकि, मायरा कुशवाहा, साक्षी दीक्षित, वैभव पटेल, मेहुल शुक्ला, काव्या दिवाकर, आयुष कुमार, अर्चित अवस्थी।,रजत अंकिता त्रिपाठी, अग्रिया सिंह, शांभवी श्रीवास्तव, अवंतिका तिवारी, देवांशु कुमार गिरि, अंश कुमार गौतम, कृतार्थ शुक्ला, रेयांश अस्थाना, कृष्णम। कांस्य-देवांश मिश्रा, सौभाग्य श्रीवास्तव, आदित्य कुमार यादव, दिव्यांशी शर्मा, अदिति तिवारी, सृष्टि सिंह।

लखनऊ। कुंवर ग्लोबल स्कूल ने लखनऊ ओपन इंटर स्कूल ताइक्वांडो चैंपियनशिप-2024 में 108 अंक के साथ ओवरऑल चैंपियनशिप ट्रॉफी अपने नाम कर ली। दूसरी ओर क्लब/ अकादमी श्रेणी में लखनऊ ताइक्वांडो अकादमी 182 अंक के साथ ओवरऑल विजेता बनी। लखनऊ जिला ताइक्वांडो एसोसिएशन के तत्वावधान में सनराइज ताइक्वांडो अकादमी द्वारा राजाजीपुरम मिनी स्टेडियम में रविवार को आयोजित चैंपियनशिप में कुंवर ग्लोबल स्कूल की टीम 108 अंक के साथ पहले स्थान पर रही। इस श्रेणी में सेंट एंजनीज स्कूल 72 अंक के साथ दूसरे व सिद्धांत वर्ल्ड स्कूल 69 अंक के साथ तीसरे स्थान पर रहा। क्लब/ अकादमी श्रेणी में लखनऊ ताइक्वांडो अकादमी 182 अंक के साथ पहले स्थान पर रही। सनराइज ताइक्वांडो अकादमी 159 अंक के साथ दूसरे स्थान पर रही जबकि लखनऊ ताइक्वांडो क्लब को 123 अंक के साथ तीसरे स्थान से संतोष करना पड़ा। विशेष पुरस्कारों में एक्टिव पार्टिसिपेशन अवार्ड सेंट एंथोनी पब्लिक स्कूल व बेस्ट डिस्पिलिन्ड टीम अवार्ड उत्कर्ष श्रीवास्तव पब्लिक स्कूल को मिला। चैंपियनशिप के समापन व पुरस्कार वितरण समारोह में मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश ओलंपिक संघ के कोषाध्यक्ष डा.सैयद रफत जुबैर रिजवी एवं अति विशिष्ट अतिथि उत्तर प्रदेश ताइक्वांडो एसोसिएशन के अध्यक्ष शैलेश कुमार शैलू ने पदक विजेताओं को सम्मानित किया। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के तौर पर पूर्व पार्षद शिवपाल सांवरिया व गोमती हेल्थी न्यूट्रीएंट्स प्राइवेट लिमिटेड के संस्थापक राजकुमार बत्रा की भी गरिमामयी मौजूदगी रही।समापन समारोह की अध्यक्षता करते हुए उत्तर प्रदेश ताइक्वांडो एसोसिएशन व लखनऊ जिला ताइक्वांडो एसोसिएशन के सचिव राजकुमार ने बताया कि इस चैंपियनशिप में लखनऊ के 50 क्लब/स्कूल/अकादमी के 700 से अधिक खिलाड़ियों ने प्रतिभाग किया। इस अवसर पर लखनऊ ताइक्वांडो संघ के कोषाध्यक्ष मोहित कुमार व अध्यक्ष आनंद मणि जुगरान, आयोजन समिति के चेयरमैन मुख्तार अहमद, अध्यक्ष मोहसिन खान व सचिव बिलाल खान सहित अन्य मौजूद थे।

लवकुश नगर गौरी वारियर्स ने जीत से शुरू किया अभियान

आदिकवि महर्षि वाल्मीकि टेनिस बॉल क्रिकेट टूर्नामेंट

लखनऊ। वाल्मीकि विकास सेवा संस्थान के तत्वावधान में डीपी फ ाउंडेशन द्वारा आयोजित 23वां आदिकवि महर्षि वाल्मीकि टेनिस बॉल क्रिकेट टूर्नामेंट में सोमवार को उद्घाटन मैच में लवकुश नगर गौरी वारियर्स ने पीएमसी स्पोर्ट्स क्लब को 40 रन से हराकर अपना अभियान शुरू किया। एलडीए स्टेडियमए अलीगंज पर खेले गए मुकाबलों में दिन के अन्य मैचों में सीतापुर क्रिकेट क्लब ने टाइगर क्लब को 6 विकेट एवं नेशनल क्रिकेट क्लब ने डालीगंज क्रिकेट क्लब को 3 विकेट से हराया।पहले मैच में लवकुश नगर गौरी वारियर्स ने पीएमसी के खिलाफ पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 10 ओवर में 5 विकेट पर 122 रन बनाए। अविनाश व मन्नू ने 27-27 रन का योगदान किया। पीएमसी से अक्षत को 2 विकेट की सफलता मिली। जवाब में पीएमसी स्पोर्ट्स क्लब निर्धारित ओवर में 82 रन ही बना सका। टीम से गौरव व विशाल ही 15.15 रन बनाकर कुछ प्रतिरोध कर सके। लवकुश नगर गौरी वारियर्स से मैन ऑफद मैच छोटू को 3 विकेट की सफलता मिली।दिन के दूसरे मैच में सीतापुर क्रिकेट क्लब ने मैन ऑफ द मैच अनूप 2 विकेट 30 रन के आलराउंड खेल से टाइगर क्लब को 6 विकेट से हराया। टाइगर क्लब ने पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित ओवर में 6 विकेट पर 104 रन बनाए। कप्तान सुरेंद्र ने 12 गेंदों पर 4 छक्के से सबसे ज्यादा 28 रन बनाए। मोंटी ने 18 व अर्पित ने 16 रन का योगदान किया।सीतापुर क्रिकेट क्लब से अनूप को 2 विकेट की सफलता मिली। जवाब में सीतापुर क्रिकेट क्लब ने निर्धारित ओवर में 4 विकेट पर 109 रन बनाकर मैच जीत लिया। अनूप ने 16 गेंदों पर 30 रनए अनुराग ने 28 रन व अंकित ने 19 रन बनाकर टीम को जीत दिलाई।तीसरे मैच में नेशनल क्रिकेट क्लब ने मैन ऑफद मैच रोनित नाबाद 30 की पारी से डालीगंज क्लब को 3 विकेट से शिकस्त दी। डालीगंज क्लब ने पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 81 रन बनाए। दीपू 17 व कमल 15 रन बनाए। जवाब में नेशनल क्रिकेट क्लब ने 9०2 ओवर में 7 विकेट पर 82 रन बनाकर मैच जीत लिया। जीत में कप्तान रौनित ने नाबाद 30 व अंकित ने 11 रन बनाए। डालीगंज क्लब से रॉबिन को 4 विकेट की सफलता मिली।

क्विक न्यूज

श्रीलंका ने आठ विकेट की जीत के साथ इंग्लैंड को सूपड़ा साफ करने से रोका।

लंदन। सलामी बल्लेबाजी पथुम निसंका (नाबाद 127) की आक्रामक शतकीय पारी के दम पर श्रीलंका ने तीन मैचों की श्रृंखला के आखिरी टेस्ट के चौथे दिन सोमवार को यहां आठ विकेट की जीत के साथ इंग्लैड को सूपड़ा साफ करने से रोक दिया। इंग्लैड की धरती पर यह श्रीलंका की सिर्फ चौथी जीत है। इंग्लैड की टीम ने श्रृंखला 2-। से जीत ली, लेकिन जुलाई मे वेस्टइंडीज को 3-0 से हराने वाली यह टीम लगातार दूसरी श्रृंखला मे क्लीन स्वीप करने से चूक गई। श्रीलंका ने द ओवल मैदान पर दिन की शुरुआत एक विकेट पर 94 रन से की थी और उसे जीत के लिए और 125 रन की जरूरत थी। टीम ने दिन के पहले सत्र मे ही आक्रामक अंदाज मे बल्लेबाजी कर इसे हासिल कर लिया। श्रीलंका के मैच के तीसरे दिन रविवार को इंग्लैड की दूसरी पारी को 34 ओवर मे 156 रन पर समेट कर जीत की नीव रखी थी। टीम ने 40.3 ओवर मे जीत के लिए मिले 219 रन के लक्ष्य को हासिल कर लिया। निसंका ने 124 गेद की पारी मे 13 चौके और दो छक्के जड़े। उन्होने 107 गेद मे अपना शतक पूरा करने के बाद हाथ ऊपर उठा कर जश्न मनाया। उन्होन इसके बाद अपने बल्ले को चूमा और आकाश की तरफ देखने लगे।

भारतीय टीम ने बधिर निशानेबाजी विश्व कप में सात स्वर्ण सहित 21 पदक जीतेः एनआरएआई

नई दिल्ली। भारतीय राष्ट्रीय राइफल महासंघ (एनआरएआई) ने सोमवार को बताया कि भारत ने जर्मनी के हनोवर में दूसरी विश्व बधिर निशानेबाजी चैंपियनशिप में सात स्वर्ण सहित 21 पदक जीतकर तालिका में शीर्ष स्थान हासिल किया। रविवार को समाप्त हुए टूर्नामेंट में भारत ने सात रजत और इतने ही कांस्य पदक भी जीते।एनआरएआई की एक विज्ञप्ति के अनुसार, यूक्रेन सात स्वर्ण, पांच रजत और छह कांस्य के साथ दूसरे स्थान पर और मेजबान जर्मनी दो स्वर्ण, एक रजत और एक कांस्य पदक के साथ तीसरे स्थान पर रहा। स्पर्धा के आखिरी दिन माहित संधू ने महिलाओं की 50 मीटर राइफल थ्री पोजीशन (3पी) मे स्वर्ण पदक जीता। अभिनव देशवाल ने पुरुषों की 25 मीटर स्टैंडर्ड पिस्टल स्पर्धा मे स्वर्ण पदक हासिल किया, जबकि चेतन हनमंत सपकाल ने इसी स्पर्धा मे कांस्य पदक हासिल किया। भारतीय टीम मे 13 निशानेबाज शामिल थे जिन्होंने चैंपियनशिप की 16 मे से 15 स्पर्धाओ मे भाग लिया। इस प्रतियोगिता मे 16 देशो के 70 प्रतिभागी थे। पिस्टल निशानेबाज देशवाल ने पांच पदक (एक स्वर्ण और चार रजत) जीतकर सर्वाधिक व्यक्तिगत पदकों जीते। संधू ने चार (तीन स्वर्ण और एक रजत) पदक अपने नाम किया जबकि धनुष श्रीकांत ने दो स्वर्ण पदक जीते। धनुष ने 10 मीटर एयर राइफल के व्यक्तिगत और मिश्रित स्पर्धा का स्वर्ण जीता। अनुया प्रसाद (महिलाओं की 10 मीटर एयर पिस्टल) और शौर्य सैनी (पुरुषों की 50 मीटर थ्री पी) ने भारतीय टीम के लिए अन्य स्वर्ण पदक जीते। भारतीयों ने इस आयोजन मे कई बधिर विश्व रिकॉर्ड और चैम्पियनशिप रिकॉर्ड कायम किए।

एसए20 में इम्पैक्ट प्लेयर नियम जल्दबाजी होगीः स्मिथ

चेन्नई। एसए20 लीग कमिश्नर और दक्षिण अफ्रीका के पूर्व कप्तान ग्रीम स्मिथ का कहना है कि यह टूर्नामेंट इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के इम्पैक्ट प्लेयर नियम जैसी नई चीजों के प्रयोग के लिए खुला है लेकिन फिलहाल वह खेल प्रेमियो के लिए इसे सरल रखने पर ध्यान लगाए है। आईपीएल का इम्पैक्ट प्लेयर नियम टीमो को मैच के किसी भी समय अपनी पसंद के एक खिलाड़ी को बदलने की अनुमति देता है। इसे पिछले सत्र मे आईपीएल मे शुरू किया गया था जिस पर राय विभाजित थी कि क्या यह हरफनमौला खिलाड़ियो की भूमिका को कम कर रहा है क्योंकि टीमे ज्यादातर मौको पर बड़े हिट लगाने वाले खिलाड़ियों को चुनती है। स्मिथ ने कहा कि एसए20 अभी के लिए सरल और पारंपरिक क्रिकेट पर डटे रहने का इरादा रखता है। अगले साल जनवरी-फरवरी मे होने वाले एसए20 के तीसरे सत्र से पहले स्मिथ ने पीटीआई से कहा, आईपीएल और इसके इम्पैक्ट प्लेयर नियम की तुलना मे हम कम प्रयोग कर रहे है। हम टूर्नामेंट को मजबूत बनाए रखते हुए यह सुनिश्चित कर रहे है कि लोग इसके क्रिकेट पहलू को समझें।

पैरालंपिक खेलों का समापन, चीन का रहा दबदबा

पेरिस। खूबसूरत लाइट शो और फ्रांस के इलेक्ट्रॉनिक संगीत के साथ रविवार को यहां पेरिस पैरालंपिक खेलो का समापन हो गया।जीन-मिशेल जें ने स्टेड डी फ्रांस मे पार्टी की शुरुआत की। उन्होंने अपने संगीत से खिलाड़ियों, स्वयंसेवको और दर्शकों को थिरकने के लिए प्रेरित किया।कार्यक्रम के आखिर मे लाइट शो का आयोजन किया गया जिसे देखकर दर्शक मंत्र मुग्ध हो गए। खेलो के आखिरी दिन दो विश्व रिकॉर्ड बने। मोरक्को की फातिमा एज़ाहरा एल इदरीसी ने दृष्टिबाधित धावकों के लिए महिला मैराथन मे नया विश्व रिकॉर्ड बनाया जबकि नाइजीरिया की फोलाशेड ओलुवाफेमियायो ने महिला पैरा पावरलिफ्टिंग मे अपना ही विश्व रिकॉर्ड तोड़ा। इन खेलो मे चीन का दबदबा रहा जबकि भारत ने भी रिकॉर्ड 29 पदक जीते। भारत ने सात स्वर्ण, नौ रजत और 13 कांस्य पदको के रिकॉर्ड के साथ पेरिस पैरालंपिक खेलो का समापन किया और पदक तालिका मे 18वें स्थान पर रहा।भारत तोक्यो मे पिछले पैरालंपिक खेलो में पांच स्वर्ण, आठ रजत और छह कांस्य पदक के साथ 24वे स्थान पर था।

पीकेएल का आगाज तेलुगु टाइटंस और बेंगलुरु बुल्स के बीच मुकाबले से होगा

नई दिल्ली। प्रो कबड्डी लीग (पीकेएल) के 11वे सत्र का आगाज 18 अक्टूबर को हैदराबाद मे तेलुगु टाइटंस और बेंगलुरु बुल्स के बीच मुकाबले के साथ होगा। आयोजकों ने सोमवार को यह जानकारी दी।लीग का आयोजन तीन शहरो मे होगा। हैदराबाद के गाचीबोवली इंडोर स्टेडियम मे 18 अक्टूबर से नौ नवंबर तक इसके शुरुआती चरण का आयोजन होगा।पीकेएल के आयोजक मशाल स्पोर्ट्स ने कहा कि इसके बाद 10 नवंबर से एक दिसंबर तक दूसरे चरण का आयोजन नोएडा इंडोर स्टेडियम मे होगा। तीसरा चरण तीन दिसंबर से 24 दिसंबर तक पुणे के बालेवाड़ी बैडमिंटन स्टेडियम मे होगा। शुरुआती मैच मे स्टार रेडर पवन सेहरावत की मौजूदगी वाली तेलुगु टाइटंस का मुकाबला बेंगलुरु बुल्स से होगा।

भारत के पिछले दो टेस्ट दौरों में ऑस्ट्रेलिया को उसकी मांद में हराने से प्रतिद्वंद्विता बढ़ीः ख्वाजा

नई दिल्ली। आस्ट्रेलिया के सीनियर बल्लेबाज उस्मान ख्वाजा को लगता है कि भारत ने पिछली दो टेस्ट श्रृंखलाओ मे उनकी टीम को उसकी मांद मे हराकर दोनों टीमो के बीच प्रतिद्वंद्विता बढ़ा दी है। दोनो टीमें 22 नवंबर से शुरू होने वाली पांच मैचो की श्रृंखला मे आमने सामने होंगी। भारत ने ऑस्ट्रेलिया को उसके पिछले दो दौरों (2018-19 और 2020-21) मे 2-। के समान अंतर से हराया था। बल्कि भारत ने बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी की पिछली सभी चार श्रृंखलाएं जीती है जिसमे 2016-17 और 2022-23 मे अपनी सरजमी पर मिली जीत भी शामिल है जिसमे भी नतीजा 2-। का रहा था। ख्वाजा ने कहा, भारतीयों के लिए हमेशा ऑस्ट्रेलिया को हराना अहम रहा है।

सीएमवाईके प्रिंटेक लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक शोबोरी गाँगुली द्वारा 100के, मिलाप भवन, 8/ए, बहादुर शाह ज़फ़र मार्ग, नई दिल्ली-110002, दूरभाष: 011-40110455 से प्रकाशित तथा द इंडियन एक्सप्रेस लिमिटेड,ए-8, सेक्टर-7, जिला-गौतमबुद्ध नगर, नोएडा (उ.प्र.)-201301, दूरभाष-01202470700 से मुद्रित। प्रधान संपादक : शोबोरी गाँगुली, स्थानीय सम्पादक: प्रदीप तिवारी। पाठकों को सुझाव दिया जाता है कि इस अखबार के किसी भी विज्ञापन पर प्रतिक्रिया करने से पहले पूरी तरह उसके बारे में दिए गए दावों, शर्तों और तथ्यों की जांच कर लें। पायनियर ग्रुप के मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक या उसका कोई भी कर्मचारी विज्ञापनदाता द्वारा उनके किसी उत्पाद तथा सेवा हेतु किए गए किसी दावे की सच्चाई का आश्वासन या उत्तरदायित्व नहीं लेता है। ऐसे विज्ञापनों के बाद किसी आर्थिक क्षति के लिए वे जिम्मेदार भी नहीं हैं। मुख्य व्यवसायिक कार्यालय- 201-205 द्वितीय मंज़िल, प्रताप भवन, 5,बहादुर शाह ज़फ़र मार्ग, नई दिल्ली-110002, दूरभाष:011-69342500।